



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 69]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मार्च 19, 2004/फाल्गुन 29, 1925

No. 69]

NEW DELHI, FRIDAY, MARCH 19, 2004/PHALGUNA 29, 1925

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 19 मार्च, 2004

अंतिम परिणाम

विषय : रूस और ईरान से अमोनिया नाइट्रेट के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच

फा. सं. 14/36/2002-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथा-संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा इसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन तथा संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :—

क. प्रक्रिया

1. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसमें इसके बाद प्राधिकारी भी कहा गया है) ने दिनांक 7 अप्रैल, 2003 की अधिसूचना सं. 14/36/2002-डीजीएडी के द्वारा रूस और ईरान के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित अमोनिया नाइट्रेट के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच पड़ताल प्रारंभिक जांच परिणामों के बारे में इस अनुरोध के साथ अधिसूचित किया था कि इसके प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत करायें।

(ii) याचिकाकर्ता द्वारा दायर आवेदन की प्रारंभिक जांच में कुछ कमियां पाई गई, जिन्हें बाद मैं याचिकाकर्ता द्वारा ठीक कर दिया गया। इसलिये याचिका को उचित तरीके से प्रलेखित माना गया था।

(iii) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत प्रथम द्रष्टव्य साक्ष्य के आधार पर रूस तथा ईरान से संबंध वस्तुओं के आयातों के बारे में जांच आरंभ करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने नियमों के उप-नियम 5 (5) के अनुसार जांच आरंभ करने से पहले पाठन करने के आरोप के बारे में दिल्ली स्थित रूस तथा ईरान के दूतावासों को अधिसूचित किया।

(iv) प्राधिकारी ने नियम 6(2)/ 6(3)/और 6(4)/ के अनुसार सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनके ब्यौरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराये गए थे) उद्योग/प्रयोक्ता एसोसियेशन को अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।

(v) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार सभी हितबद्ध पक्षकारों को, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध पर निरीक्षण के लिये प्रस्तुत किये गये सभी साक्षों अगोपनीय अंश सहित सार्वजनिक मिसिल उपलब्ध करायी। याचिकाकर्ता से अतिरिक्त सूचना के बारे में कठिप्रम हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर उस सीमा तक प्रस्तुत टिप्पणियां भी उपलब्ध करायी गयी जो नियमान्तर्गत स्वीकार्य एवं व्यवहार्य था।

(vi) जांच अवधि सहित पिछले तीन सालों के दौरान भारत में संबंध वस्तुओं के किये गये आयात के ब्यौरे का इंतजाम करने के लिये सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ एक्साइज एण्ट कस्टम (सीबीईसी) से अनुरोध किया गया था।

(vii) प्राधिकारी ने सात हितबद्ध पक्षकारों को प्रारंभिक जांच परिणाम की एक प्रति इस अनुरोध के साथ भेजी कि वे इस पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर प्रारंभिक जांच परिणाम संबंधी अपने विचार, यदि कोई हैं तो प्रस्तुत करें।

(viii) प्राधिकारी ने नई दिल्ली स्थित संबंध देश के दूतावास/उच्चायोग/प्रतिनिधि को प्रारंभिक जांच परिणाम की एक प्रति इस अनुरोध के साथ भेजी कि वे प्रारंभिक जांच परिणाम संबंधी अपने विचार प्रस्तुत करें।

(ix) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को सुनने के लिये दिनोंक 03/12/2002, 13/01/2003, 24/02/2003 एवं 05/8/2003 को सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें हितबद्ध पक्षकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सार्वजनिक सुनवाई में आग लेने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप में व्यक्त किये गये विचारों को लिखित में फाइल करने का अनुरोध किया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यद्यपि इन जॉच परिणामों में हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित आत्म निवेदन पर विचार किया है।

(x) प्रारंभिक जॉच परिणामों की धोषणा से पूर्व हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिये गये तर्कों को जिन्हें प्रारंभिक जॉच परिणामों में प्रकाशित अधिसूचित किया गया था संक्षिप्तता के लिये यहाँ दोहराया नहीं गया है।

(xi) भारत में संबंध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत तथा उसे बनाने और बेचने की लागत का निर्धारण सामान्यतः स्वीकृति लेखा सिद्धान्तों (जीएएपी) और याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत लागत संबंधी सूचना के विश्लेषण के आधार पर किया गया था।

(xii) प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचना का सत्यापन किया और मै0 जेएससी नेविनोमेस्की एजोट, रस तथा मै0 आईपीसीसी, तेहरीनए ईरान द्वारा प्रस्तुत ऑकड़ों का मौके पर भी सत्यापन किया।

(xiii) विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों पर प्रारंभिक जॉच परिणामों और प्रकटन विवरण में भी विचार विमर्श किया गया है। जिन विचारों पर प्रारंभिक जॉच परिणामों और प्रकटन विवरण में पहले पिचार विमर्श नहीं किया गया है और जिन्हें प्रकटन विवरण के उत्तर में अब व्यक्त किया गया है, उन पर नियमों के अनुसार तथा मामले पर प्रभाव डालने की सीमा तक नीचे उल्लिखित संगत पैराओं में विचार विमर्श किया है कि उनके द्वारा व्यक्त विचारों पर प्रकटन विवरण में ध्यान नहीं दिया गया है। प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों पर उस सीमा तक विचार किया है जिस सीमा तक वे नियमानुसार संगत हो और इस मामले पर प्रभाव डालते हैं और उन पर इन जॉच परिणामों में समुचित विचार किया गया है।

हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिये गये तर्कों की जॉच की गई है, उन पर विचार किया गया है और जहाँ उचित समझा गया है उन पर नीचे उल्लिखित संगत पैराओं में कार्यवायी की गई है।

(xiv) उपर्युक्त पदाधीन नियमों के नियम 16 के अनुसार इन जॉच परिणामों के लिये विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार को ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के समझ 01 मार्च 2004 को प्रकट किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर भी इन जॉच परिणामों में विधिवत् विचार किया है।

(xv) यह जॉच 01 अप्रैल 2001 से 30 जून 2002 तक की अवधि के लिये की गई थी

(xvi) ***** यह चिन्ह इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का धोतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

(xvii) आयातकों, निर्यातकों, प्रयोक्ताओं, धरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किये गये अनुरोधों की जॉच की गई है और ये जॉच परिणाम निकालते समय उन पर विचार किया गया है और जहाँ उचित पाया गया है एतद् पश्चात् उन पर कार्यवाई की गई है।

विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तुयें

धरेलू उद्योग के विचार

1 वर्तमान जॉच में शामिल उत्पाद “अमोनिया नाइट्रेट” है इसका उत्पादन मेल्ट, मिल्स, किस्टल, ग्रेन्यूल्स, फलेक्स और लम्प्स लैसे अनेक रूपों में किया जाता है लिनकी रासायनिक संरचना समान होती है।

2 याचिकाकर्ता इस संबंध में उनके द्वारा पूर्व में किये गये विस्तृत अनुरोधों का हवाला देना और उनका उत्तर देना चाहते हैं जो प्राधिकारी के रिकार्ड में पहले से ही विद्यमान हैं। इन

अनुरोधों से इस बात की स्पष्ट तौर पर पुष्टि होती है कि उपभोक्ताओं के तर्क में कोई दम नहीं है। उपभोक्ताओं ने बिना आधार के और दुर्भावना एवं दुरादाय से वर्तमान जॉच में व्यवधान डालने की दृष्टि से अनर्गल तर्क दिया है! धेरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुयें विचारधीन उत्पाद के समान वस्तु हैं और यह इस मुद्दे पर एक माल कानूनी अपेक्षा है।

वस्तु स्थिति यह है कि :-

क याचिकाकर्ता कम्पनियों एचडीएएन का उत्पादन करती हैं

ख याचिकाकर्ता कम्पनियों के द्वारा एचडीएएन का उत्पादन विभिन्न रूपों में किया जाता है जिनमें बेल्ट, मिल्स, किस्टल, ग्रेन्यूल्स, फ्लेक्स और लम्प्स आदि शामिल हैं।

ग विभिन्न रूपाके में एचडीएएन अन्य कुछ नहीं बल्कि समान उत्पाद।

3 उपभोक्ताओं ने यह दावा किया है कि ए एन के विभिन्न रूपों को अदल बदलकर उपयोग किया जाता है। की गई आपूर्तियों के विवरण से प्रत्येक आपूर्तिकर्ता कम्पनी द्वारा दिये गये तर्क से भ्रम उत्पन्न होता है जब उसी ग्राहक ने अलग अलग रूपों में खपत कह तो याचिकाकर्ता उस आधार के बारे में वस्तुत आद्वर्चय चकित है जिस पर अग उपभोक्ता यह तर्क दे रहे हैं कि उन्होने दोनों उत्पादों का अदल अदल कर उपयोग नहीं किया है!

4 फ्यूज मैग्नेसिया के मामले में फ्यूज्ड संगलित मैग्नेसिया की गैर मौजूदगी में सिन्टर्ड सीवाटर मैग्नेसिया को आयातित उत्पाद के लिये समान वस्तु के रूप में रखा गया है। यदि उपभोक्ता यह तर्क देना चाहते हैं कि समान वस्तु भारत में मौजूद नहीं है तो उसकी गैर मौजूदगी में निर्दिष्ट प्राधिकारी दूसरी वस्तु को समान वस्तु के परीक्षण के लिये विचार कर सकता है। और यदि उपभोक्ता इससे सहमत हैं कि समान उत्पाद भारत में मौजूद है तो याचिकाकर्ता द्वारा बार बार तर्क देने का कोई आधार नहीं जाता है। कास्टिक सोडा के विद्यय में कास्टिक सोडा लाइ एवं कास्टिक सोडा सॉलिड समान उत्पाद समझे जाते हैं। यह नोट किया जाना चाहिये कि यद्यपि सॉलिड कास्टिक सोडा प्रिल्स, फ्लेक्स, ग्रेन्यूल्स अथवा अन्य दूसरे अनेक रूपों में हो सकता है। लीड एसिड बैटरियों में अनेक प्रकार की लीड एसिड बैटरियां समान वस्तु समझी जाती हैं।

लीड एसिड बैटरियों में वास्तव में अनेक प्रकार की रख रखाव मुक्त बैटरियां एक समान उत्पाद के रूप में मानी जाती हैं और निर्दिष्ट प्राधिकारी ने एक (विन्चमार्क) की सिफारिश की है।

5 ऐ0 स्टैनब्रुक और बेन्टले के अनुसार यह दुर्लभ होगा कि नियातित उत्पाद सामुदायिक उद्योग द्वारा निर्मित उत्पाद के समान है यद्यपि द्रव्यों के मामले में जिनका कि समान रसायनिक सूत्र होता है प्रायः उनकी अशुद्धता के स्तर में भी अन्तर होगा। अतः व्यवहारिक रूप में सामुदायिक प्राधिकारियों को इस बात की जॉच करनी होगी कि क्या आयातित उत्पाद में सामुदायिक उत्पाद से अत्यधिक मिलती जुलती विद्योदातायें हैं। चीन जनवादी गणराज्य से रिफैक्ट्री कैमोटस में सामुदायिक प्राधिकारियों प्रसंस्कृत एवं अप्रसंस्कृत कैमोटस को समान सीमा शुल्क शीर्षे के तहत वर्गीकृत होने पर भी एक ही उत्पाद मानने से मना कर दिया था। उनकी अनिवार्य भौतिक एवं तकनीकी विद्योदाताओं छिटपुट भौतिक अन्तरों में ऐसे मामले ५मिल होते हैं कि क्या पाकेट लाइटर बाडी के लिये प्रयुक्त सामग्री प्लास्टिक की थी अथवा नायलोन की, आकार और अद्वृद्धता के स्तर में क्या अंतर था और यदि इनसे अंतिम उपयोग प्रभावित नहीं होता है तो इसे संचयन की रोकथाम नहीं होगी।

6 इडवान वैमस्ट और बेयर के अनुसार भौतिक विशेषताओं में छिटपुट अंतर होते से कोई समान उत्पाद उस स्थिति में अनिवार्यतः अलग नहीं हो जायेगा जब उक्त उत्पाद बाजार में एक दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा करता हो। अतः उत्पाद की भौतिक विशेषताओं पर जोर देने के स्थान पर उसके अंतिम उपयोगों तथा बाजार में प्रतिस्थापनीयता पर धीरे धीरे ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। समान उत्पाद की परिभाषा सर्वप्रथम इसी उद्योग के हाथों में है क्योंकि यह मुख्यतः शिकायत के दायरे पर निर्भर करती है। इसी उद्योग के लिये यथासंभव सटीक रूप में दिक्कायत के दायरे को परिभाषित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

7 मैग्नीसाइड मामलों में एक यूरोपीय आयातक ने यह तर्क दिया था कि आयातित चीनी उत्पादों और ग्रीक उत्पादों के बीच अंतर इतने अधिक थे कि वे समान उत्पादों के रूप में नहीं माने जा सके। आयोग ने रासायनिक संरचना की जॉच की और यह निर्धारित किया कि उन्हीं उद्योगों और प्रयोजनों में किया गया था और लिये गये समान उत्पाद थे।

8 रूस से अमोनियम नाइट्रेट के मामले में यू एस आई टी सी ने 53 पाउण्ड प्रतिधन फुट (0.849 ग्राम/मिली के बराबर) के बराबर अथवा उससे अधिक के वल्क धनत्व वाले ठोस उर्बरक ग्रेड के अमोनिया नाइट्रेट के उत्पादों को विचाराधीन उत्पाद के रूप में माना है। जहाँ इस तर्क का संबंध है कि धरेलू उत्पाद आयातित उत्पाद के समान वस्तु नहीं है अनुरोध है कि आयातको द्वारा एच डी ए एन शब्द का उपयोग यह प्रदर्शित करने की दृष्टि से किया जा रहा है कि आयातित उत्पाद “समान उत्पाद” नहीं है और ऐसा संभवतः इस सामग्री के आयात में अन्तर्ग्रस्त कानूनी प्रभावों के समाप्त करने की दृष्टि से किया जा रही है। यद्यपि उनके अपने विनिर्देशन पत्र और जॉच प्रमाण पत्र में किसी धनत्व का उल्लेख नहीं किया गया है।

9 विरोधी हितबद्ध पार्टियों के तर्क में आन्ति की पुष्टि निम्नखित तथ्य द्वारा होती है :-

क याचिकाकर्ता कंपनियों में से एक कंपनी प्रिल रूप में भी अमोनियम नाइट्रेट का उत्पादन करती है !

ख प्रिल्स, किस्टल, फ्लेक्स, लम्प्स आदि द्रव और ठोस रूपों में अमोनियम नाइट्रेट का अदल बदल कर उपयोग किया गया है।

ग प्रिल्स अमोनियम नाइट्रेट कोई तकनीकी अपेक्षा नहीं है। इस अमोनियम नाइट्रेट की खपत वस्तुत द्रव रूप में की जाती है। प्रिल स्वरूप सहित उत्पाद को ठोस इसलिये बनाया गया है ताकि उसकी ढुलाई आसानी से की जा सके।

10 उर्पयुक्त के होते हुये भी समान उत्पाद की परिभाचा में (क) ऐसी किसी वस्तु के अभिज्ञान, जो आयातित उत्पाद से हर प्रकार से समनुरूप हो और (ख) समनुरूप उत्पाद के अभाव में ऐसी कोई अन्य वस्तु जिसकी विशेषतायें अत्यधिक मिलती जुलती हो, का प्रावधान है। इस बात को मानते हुए किन्तु उसे स्वीकार न करते हुए कि धरेलु रूप से उत्पाद आयातित उत्पाद से हर प्रकार से समनुरूप नहीं है, इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि धरेलु

रुप से उत्पादित उत्पाद में खासकर जब उपभोक्ताओं द्वारा दोनों का उपयोग अदल बदलकर किया जा रहा है, आयातित उत्पाद से अत्यधिक मिलती जुलती विशेषताये नहीं हैं। इस सम्बन्ध में यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि अमोनियम नाइट्रेट का पहले मुश्किल से ही कोई आयात हुआ था। उत्पाद की काई नई जरूरत उत्पन्न नहीं हुई है। ऐसी स्थिति में आयातित सामग्री के उपभोक्ता केवल धरेलु स्रोतों से अपनी जरूरत को पूरा कर रहे थे। पिछले छह माह के दौरान जब आयात या तो पाटन रोडी मामले पर न होने के कारण अथवा निर्यातक देशों में प्रचलित उच्च कीमतों के कारण आयात नहीं हुए हैं, उपभोक्ता पूर्व में किये गये उल्लेख के अनुसार विभिन्न रूपों में धरेलु और ठोस से अपने विस्फोटक निर्माण और कारोबार निसंकोच चला रहे हैं।

11 उपभोक्ताओं ने एक बार फिर विस्फोटक विभाग के अनुरोधों का हवाला दिया है। विस्फोटक विभाग के तर्क में निम्नलिखित आन्ति उल्लेखनीय हैं:-

क जब उपभोक्ताओं ने दीपक द्वारा उत्पादित एलह ए एन और एच डी ए एन दोनों की खपत को स्वीकार किया हैं तो विस्फोटक विभाग ने यह कैसे कह दिया है कि उपभोक्ताओं के लिए द्रव की तुलना में एच डी ए एन प्रिल लाभकारी और अनुकूल रही है। क्या आई ई एल, आई पी, गल्फ आयल आदि जैले आकार और प्रकार के भारतीय उपभोक्ता यह तर्क देना चाहते हैं कि वे एच डी ए एन द्रव की तुलना में एच डी ए एन प्रिल केतुलनात्मक लाभों से अनभिस हैं ?

ख विस्फोटक विभाग ने अपनी टिप्पणियों में यह उल्लेख किया है कि एफ सी आई तथा राउरकेला इस्पात संमन्त उर्वरक प्रभाग के बन्द हो जाने के कारण पूर्वी क्षेत्र में ए एन द्रव की कभी भी गर्मा थी जिसकी पूर्ति आयातित उत्पाद से की गयी है। तर्क में यह स्वीकार किया गया है कि द्रव और आयातित प्रिल समान वस्तु है।

ग विस्फोटक विभाग ने यह बताया है कि मेल्ट और एल डी ए एन पी की हैन्डलिंग में अन्तर्ग्रस्त जोखिम एच डी ए एन प्रिल की तुलना में काफी अधिक है। इस वक्तव्य का यह डी ए एन पी तथा एच डी ए एन प्रिल का एक दूसरे के सीन पर उपयोग नहीं होता है। एक

प्रकार के उत्पाद की तुलना में दूसरे प्रकार के उत्पाद को तरजीह दिये जाने का तात्पर्य यह है कि दोनों तुलनीय हैं और इसलिए समान वस्तु हैं।

12 विस्फोटक विभाग द्वारा यह बताया गया है कि आयातित उत्पाद अर्थात् एच डी ए एन प्रिल को मेल्ट और एल डी ए एन की तुलना में तरजीह दी जाती है। एक उत्पाद की तुलना में दूसरे उत्पाद को तरजीह दिये जाने को उत्पादों के प्रति नापसन्दी नहीं कहा जा सकता है— वस्तुतः एक हितबद्ध पार्टी तो यहाँ तक कह गयी है कि “-----वर्तमान जॉच----- और कुछ नहीं है बल्कि भारत में पाटनरोधी कानून में समान वस्तु की परिभाषा गत कमी का लाभ उठाना है।” मामला जो भी नियमों में निहित कानूनी प्रावधानों से निर्दिष्ट प्रधिकारी शासित होते हैं। यह कहना प्रयात होगा कि इस सम्बन्ध में कानूनी प्रावधान सभी (पाटन सम्बन्धी कानून रखने वाले) में और डब्ल्यू टी ओ करार से भी तुलनीय है।

13 जहाँ तक एच डी ए एन प्रिल की बिकी का सम्बन्ध है याचिका कर्ताओं ने प्रत्येक याचिका कर्ता कम्पनी द्वारा की गयी आपूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत किये हैं जो कि प्रधिकारी के रिकार्ड में पहले से ही मौजूद है। याचिका कर्ताओं ने भारत में विस्फोटक को विर्निमाताओं को एच डी ए एन प्रिल की बिकी की है। वस्तुतः एक उपभोक्ता द्वारा आयातित और धरेलू स्रोतों द्वारा आपूर्त ए एन को अलग-अलग रूपों में खपत किये जाने से स्पष्टतः यह सिद्ध होता है कि दोनों प्रतिस्थापनीय हैं और दोनों का एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया गया है।

14 धरेलू उद्योग ने प्रकट विवरण पर अपनी टिप्पणियों में यह उल्लेख किया है कि विचारधीन उत्पाद के दायरे को ए एन मेल्ट और एल डी ए एन को छोड़ने के बाद अब अमोनियम नाइट्रेट से एच डीए ए एन के लिए सीमित कर दिया गया है। तथापि जहाँ विचाराधीन उत्पाद के दायरे को एच डी ए एन तक सीमित कर दिया गया है, वही धरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के दायरे में एल डी ए एन तक सामित कर दिया गया है वही धरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु के दायरे में एल डी ए एन तथा ए एन मेल्ट को छोड़की ए एन के सभी रूपों को रखा गया है। साथ ही साथ धरेलू उद्योग ने यह मुद्दा उठाया है कि क्या डी ए ने धरेलू उद्योग

द्वारा उत्पादित ए एन ठोस (एल डी ए एन को छोड़कर) के केवल प्रिल स्वरूप अथवा इस ए एन ठोस के ए एन लम्बस क्लिस्टल और प्रिल जैसे अन्य स्वरूपों पर विचार नहीं किया गया है। तथापि याचिकाकर्ता नोट करता है कि डी ए द्वारा प्रकटन विवरण में समान वस्तु के सामित किये गये दायरे में धरेलू उद्योग के आधार पर क्षेत्र विस्तार और ए एन के तीनों रूपों का निर्धारण शामिल है। और इस प्रकार ये समान वस्तु हैं।

आयातको/प्रयोक्ता उद्योगों के विचार मै0 आई बी पी क0 लि0

15 देश में ए एप प्रिल के एक विनिर्माता अर्थात् दीपक गुप्त ने ए एन प्रिल के रूप में आष्टीफार्म के विनिर्माण का दावा किया है। अपनी सभी वार्षिक रिपोर्टों और विज्ञापनों में स्वयं को कोटेड और अनकोटेड रूप में एल डी ए एन प्रिल के विनिर्माता के रूप में दर्शाया है। एक जॉच रिपोर्ट के जरिये आष्टीफार्म में 0.855 ग्राम/सी सी के धनत्व का दावा एच डी ए एन को शामिल करने के लिये पर्याप्त है जबकि उनके दोनों उत्पादों का वास्तविक धनत्व 0.75 से लेकर 0.85 ग्राम/सी सी तक है। दीपक फर्टिलाइजर्स द्वारा किये गये दावे के अनुसार 0.855 ग्राम/सी सी के वास्तविक धनत्व वाले प्रिल्ड उत्पाद का विनिर्माण करना असंभव है।

16 अमोनियम नाइट्रेट के खिलाफ की गई प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय पाटनरोधी जॉचों में एच डी ए एन प्रिल को एल डी ए एन प्रिल तथा ए एन मेल्ट से विशेषरूप से अलग रखा गया है। प्रौद्योगिकी एवं सुरक्षा जैसे कारकों पर अत्यधिक विश्वास करते हुये प्रमुख देशों द्वारा पाटनरोधी जॉच हेतु इन उत्पादों को कभी भी समान वस्तु नहीं माना गया था।

17 विचाराधीन उत्पाद को अमोनियम नाइट्रेट के रूप में परिभाषित किया गया था। जॉच अवधि के दौरान और उसके बाद आयातित एक माल उत्पाद एच डी ए एन प्रिल है अतः अमोनियम नाइट्रेट के पाटन से संबंधित जॉच केवल ऐसी वस्तु के विनिर्माताओं द्वारा याचिका के आधार पर अथवा उसके अभाव में समान वस्तु के आधार पर ही शुरू की जा सकती है।

मै0 भारत एक्सप्लोसिव्स लि0

18 प्रारंभिक जॉच परिणामों में इस तथ्य पर कोई ध्यान दिया गया प्रतीत नहीं होता है कि प्रत्येक अमोनियम उत्पाद किसर खास प्रयोग हेतु सर्वथा अनुकूल होता है। इस तर्क की गलत व्याख्या की गई है कि देश में अमोनियम नाइट्रेट की समग्र कमी है ताकि यह स्वीकार किया जा सके कि ए एन उत्पाद अंतर प्रयोज्य है। वास्तविकता यह है कि याचिकाकर्ता अमोनियम नाइट्रेट के उत्पादों अर्थात् एच डी ए एन प्रिल, एल डी ए एन प्रिल तथा मेल्ट की धरेलू मॉग की पूर्ति करने की स्थिति में नहीं है। जिन प्रयोगों के लिए एच डी ए एन प्रिल की जरुरत होती है उनका आयात जरुरी होता है। एल डी ए एन प्रिल तथा मेल्ट की कभी की पूर्ति कुछ द्रढ़ तक आयातों द्वारा की जा सकती है क्योंकि एच डी ए एन प्रिल के स्थान पर मेल्ट अथवा एल डी ए एन पी का उपयोग किया जा सकता है। तथापि सुरक्षा और प्रतिकूल प्रयोग के बारे में यह बात सच नहीं है। यह तर्क कि इसकी कभी है जिसकी पूर्ति आयातों द्वारा पूरी को जा सकती है, यह प्रमाणित नहीं करता है कि एल डी ए एन पी और मेल्ट एच डी ए एन पी का प्रतिस्थापन हो सकते हैं। किसी उत्पाद को दूसरे उत्पाद के “समान वस्तु” मानते के लिए तकनी की एवं वाणिज्यिक पारस्परिक विनिमय योग्य होना चाहिए। प्रायः ए एन के दूसरे रूप का प्रतिस्थापन एच डी ए एन नहीं होता सकता क्योंकि यह समान वस्तु के परीक्षण को पूरा नहीं कर सकेगा।

19 प्रारंभिक जॉच परिणामों में यह माना गया है कि मेल्ट, एच डी ए एन और एल डी ए एन प्रिल्स अलग-अलग उत्पाद हैं जैसा कि प्रत्येक के लिए अलग-अलग शुल्कों की सिफारिश की गयी है। ऐसा होने पर भी प्रत्येक उत्पाद के लिए अलग निर्मात मूल्य, सामान्य मूल्य, पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन निर्धारित है। मेल्ट और एल डी ए एन प्रिल के मामले में, निर्यात मूल्य सामान्य मूल्य अथवा पाटन मार्जिन नहीं हो सकता है क्योंकि भारत में इस उत्पाद का आयात कभी नहीं किया गया है। किसी आयात की गैर मौजूदगी में, यह समझ पाना मुश्किल है कि इन दोनों उत्पादों के लिए पाटन मार्जिन कैसे पहुँचा है। एच डी ए एन के मामले में, कोई संदेह नहीं, इसका एक निर्मात मूल्य, सामान्य मूल्य और सम्भवतः कुछ पाटन मार्जिन भी है, इसके लिए कोई क्षतिहीन मूल्य या क्षति मार्जिन नहीं हो सकता क्योंकि इस उत्पाद का विनिमय भारत में नहीं होता है।

20 याचिका कर्ता द्वारा यह दावा कि एच डी ए एन का भारत में विनिर्मित एवं प्रिल के रूप में विकल्प होता है, सत्य नहीं है। प्रयोक्ता एवं एसोसिएशन आफ एक्सप्लोसिव ऐन्युफैक्चरर्स जो कि इस उत्पाद के मुख्य ग्राहक है ने भी इस तथ्य को बार-बार नकारा है। यह दावा मै0 डी एफ पी सी एल ने किया है, यद्यपि उनकी वार्धिक रिपोर्ट, वेब साइट, विज्ञापन इत्यादि में केवल एल डी ए एन प्रिल के उत्पाद एवं विकल्प के बारे में कहा गया है। इसके अतिरिक्त जॉच पड़ताल के दौरान न तो किसी याचिका कर्ता ने उनके द्वारा विनिर्मित एच डी ए एन प्रिल का प्रस्ताव किया अथवा न हमें विकल्प किया है।

21 याचिकाकर्ता ने उल्लेख किया है कि चूंकि विस्फोटो के विनिर्माण के लिये एच डी ए एन प्रिल्स, एल डी ए एवं प्रिल्स और मैल्ट का उपयोग किया गया है अतः इसमें अंतर प्रति स्थापनीय निहित है। उपर्युक्त उत्पादों के विस्फोटो के विनिर्माण में भिन्न भिन्न उपयोग है। इस्तेमाल किये जाने वाला अमोनियम नाइट्रेट उत्पाद तैयार किये जाने वाले/विनिर्माण किये जाने वाले विस्फोटक के प्रकार पर निर्भर करता है। चुनाव तकनीकी और सुरक्षा संबंधी सोच विचार पर आधारित है। इस प्रकार विस्फोटों के विनिर्माता विभिन्न प्रकार के अमोनियम नाइट्रेट का प्रयोग करते हैं तथापि एक दूसरे के स्थान पर नहीं।

22 याचिकाकर्ता ने ठीक ही उल्लेख किया है कि ध्यान अन्त प्रयोग और एडविन वेमुल्स्ट और पॉल वायर के अनुसार बाजार में प्रतिस्थापनियता पर होना चाहिये। यह अनुरोध किया गया है कि प्रयोक्ता केवल स्वयं उत्पादों के अंतिम प्रयोग पर रोदानी डाल सकता है। चूंकि अनेक उत्पादों के विस्फोटको के लिये अलग अलग उपयोग है इयलिये बाजी में कोई प्रतिस्थापनियता नहीं है। वास्तव में याचिकाकर्ता अपने आप अपने द्वारा विनिर्मित उत्पादो की बिक्री बहुत अलग अलग कीमतों पर करता है जो यह बताती है कि ये प्रतिस्थापनियता नहीं है। कीमत में अंतर कई बार 30% से 40% तक की सीमा तक होता है। यदि उत्पाद प्रतिस्थापनिय थे जैसा कि याचिकाकर्ताओं द्वारा उल्लेख किया गया है, अर्थात मेल्ट ही खरीद रहे होते। प्रयोक्ता विस्फोटको के निर्माण के लिये अपनी तकनीकी आवश्यकता के अनुसार उत्पाद खरीद रहे हैं। विभिन्न कीमतें प्रतिस्थापनियता की कमी की पुष्टि करती है।

23 याचिकाकर्ताओं ने बार बार यह उल्लेख किया है कि विस्फोटक विनिर्माताओं द्वारा एल डी ए एन प्रिल्स और मेल्ट के उपयोग में अंतर प्रतिस्थापनियता अंतर्निहित है। ऐसा नहीं है क्योंकि विभिन्न उत्पादों का विस्फोटकों के विनिर्माण में अलग अलग उपयोग है उदाहरण के लिये मेल्ट का उपयोग आन साइट ब्लास्टिंग (अथवा डीप होल्ड ब्लास्टिंग) प्रचालनों के लिये नहीं किया जा सकता है। इसलिये विभिन्न विस्फोटक उपयोगों के लिये विभिन्न अमोनियम नाइट्रेट उत्पादों की आवश्यकता होती है। वास्तव में, एच डी ए एन प्रिल्स तकनीकी रूप से उन्नत विस्फोटक कार्यों के लिये जर्वोतम ढंग से उपर्युक्त उत्पाद है और सबसे सुरक्षित करामात भी है। देशीय उत्पाद इसका प्रतिस्थापन नहीं कर सकते हैं। इसलिये समान उत्पाद के अभाव में जॉच को समाप्त करना उचित होगा।

24 नियम 5 के अन्तर्गत जॉच की शुरूआत भी गलत है क्योंकि आवेदक एच डी ए एन प्रिल के जो कि धरेलू तौर पर विनिर्मित नहीं किया जा रहा है के संबंध में धरेलू उद्योग नहीं है। यह समान उत्पाद भी नहीं है वास्तव स्थिति होने के कारण धरेलू उद्योग एच डी ए एन एवं प्रिल्स के आयात के कारण उन पर किसी क्षति का भी आरोप नहीं लगा सकते।

मै0 इंडियन एक्सप्लोसिव्स लि�0, और मै0 स्पेशल ब्लास्ट प्रा0 लि�0

25 पाटनरोधी नियमों और सीमाशूल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 के अन्तर्गत विचाराधीन उत्पाद को आयातित उत्पाद के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसका पाटन किया गया है और जिसके परिणामस्वरूप धरेलू उद्योग को क्षति हुई है। चूंकि जॉचाधीन अवधि के दौरान केवल एच डी एक्स प्रिल्स का ही आयात किया गया है इसलिये इसे विचाराधीन उत्पाद के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिये। अन्य अमोनियम नाइट्रेट उत्पाद जैसे एल डी ए एन एवं प्रिल्स, मेल्ट इत्यादि का जॉच अवधि के दौरान आयात नहीं किया गया है अत इन्हें विचाराधीन उत्पाद के दायरे के भीतर शामिल नहीं किया जा सकता और इन पर कोई शुल्क नहीं लगाया जा सकता।

26 यह अनुरोध किया गया है कि दीपक फर्टलाइजर्स जैसे याचिकाकर्ताओं के दावों पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता जिन्होंने अपने उत्पाद आप्टीफार्म (यथा उल्लिखित सधनता = 0.855 ग्रा०/सी सी) की सधनता की गलत धोषणा जैसे हथकन्डे का सहारा लिया है । समग्र विस्फोटक उद्योग ने एक धोषणा पत्र दिया है कि उत्पाद आप्टीफार्म को अनकोटेड एल डी ए एन एवं पी के रूप में बेचा गया है और इसकी सधनता 0.75 - 0.85 ग्रा०/सी के बीच है । सबसे आम मूल्य 0.81 ग्रा०/सी सी रहा है । इसके अतिरिक्त, इस कंपनी के पास लाइसेन्स और अपनी स्वयं की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार प्रिल रूप में केवल एल डी ए एन के विनिर्माण की क्षमता है ।

27 अमोनियम नाइट्रेट अपने प्रारंभिक /मूल रूप में भेल्ट अथवा पिंड या फ्लेक्स के रूप में जमाये हुये के रूप में मौजूद रहता है । अमोनियम नाइट्रेट के उन्नत /प्रसंगत रूपों में ए एवं प्रिल्स तथा दाने शामिल हैं ।

28 ए एवं प्रिल्स और दोनों को आगे और निमानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है :-

- i) एच डी ए एन एवं प्रिल्स (जिन्हें उर्वरक ग्रेड के ए एवं प्रिल्स के रूप में भी जाना जाता है)
- ii) एल डी ए एन एवं प्रिल्स (जिन्हें विस्फोटक ग्रेड प्रिल्स के रूप में भी जाना जाता है)
- iii) ए एवं दाने

29 उच्च सधनता वाले अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स एच डी ए एन पी उष्मीय रूप से मजबूत, मुक्त रूप से प्रवाहनीय, विखराने योग्य और उच्च गतिहीनता रोधी और गोलाकार आकृति वाले एक समान आकार वाले हैं । उनके गैर संरध ढॉचे के कारण उनकी सधनता 70.90 ग्रा०/सी सी की है । अधिक लम्बे समय तक बनाये रखने के लिये केकिंग से बचाने के लिये इन पर बाहर उर्पयुक्त कोटिंग की जा सकती है इसकी कम प्रस्फोटन अतिसवेदनशीलता के कारण यह बल्क भंगरण और हैंडलिंग के लिये एक उपयुक्त उत्पाद है । इस उत्पाद को उर्वरक ग्रेड के रूप

में जाना जाता है क्योंकि इसके यूरोपीय बाजार में प्रस्फोटन अतिसविदनशीलता परीक्षण पास कर लिया है और इसे बल्क फैडलिंग और भंगरण के लिये सुरक्षित माना जाता है।

30 कम सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स अपनी उच्च सरंधता के कारण 0.75 ग्रा०/सी सी से 0.85 ग्रा०/सी सी की सधनता वाला है। सरंधता को प्रस्फोटन अतिसविदनशीलता बढ़ाने के लिये प्रवर्तित किया जाता है। ए एन एफ ओ विस्फोटक, जिसे एल डी ए एन प्रिल्स से उत्पादित किया जाता है, की बहुत उच्च आरम्भ अतिसविदनशीलता है और इसके प्रवर्तन के लिये एच डी ए एन पी की तुलना में बहुत कम शॉक उदादीपक की आवश्यकता होती है। छिद्रों में इसकी उच्च अवशेषण क्षमता के कारण तरल ईन्थन के साथ अनजाने में संदूषित होने की प्रवृत्ति इसे भण्डार करने के लिये बहुत खतरनाक बना देती है। कठोर पर्यावरणीय विनियम एल डी ए एन पी को शासित करते हैं।

31 ए एवं दावे सपाट रूप में उष्णीय रूप से मजबूत और एंटीकेकिंग ऐजेटों से कोटेड है और ए एवं एफ ओ विस्फोटक बनाने के लिये प्रयोग में लाये जाते हैं। दानों का विनिर्माण कुछ विनिर्माताओं जैसे केनपेक्स कैमिलिस और एक्सन्लोजेल इंडिया द्वारा प्रयोगात्मक आधार पर किया था लेकिन उचित प्रौद्योगिकी के अभाव में इस उत्पाद द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था और पिछले 10 वर्षों में भारत में दानों का कोई उत्पादन नहीं हुआ है।

32 अमोनियम नाइट्रेट मेल्ट ए एवं का एक प्राथमिक रूप है। इसका उत्पादन नाइट्रोजनी उर्वरको जैसे ए एन पी, यूरिया इत्यादि के उत्पादन के लिये देशी अमोनिया के नाइट्रेशन द्वारा किया जाता है और इसे शीर्ष उर्वरक विनिर्माताओं जैसे एन एफ एल, जी. एन एफ सी, और आर सी एफ, एफ सी आई तथा आर एस पी द्वारा सह उत्पाद के रूप में बेचा गया था। इस मेल्ट को ए एन पिंड, किस्टल और फ्लेक्स जैसे उत्पाद बनाने के लिये कच्चे रूप में जमाया जाता है। उर्पयुक्त में से किसी के लिये भी किसर विशिष्ट प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती है। मेल्ट को उच्च तापमान पर रखना होता है और इसे स्टेनलैस स्टील टैंकरों और भंडारण वाहनों में स्टोर और वाहित किये जाने की आवश्यकता होती है। यह अत्यधिक जोखिम और हद से ज्यादा पूंजीगत बुनियादी सुविधा संबंधी अपेक्षाताओं का बढ़ावा देता है। दूसरी ओर ठोस

उत्पाद जैसे पिंड और क्रिस्टल संदूषण से संबंधित हैं, ये अनियमित आकार के होते हैं, तोड़ने और उठाने में कठिनाई, उष्मीय पुर्णउपयोग के प्रबृत्र, पर्याप्ति और साइट पर अनुप्रयोगों के अनुपयुक्त, धटिया प्रयोज्यता और कम शैल्फ लाइफ होती है।

33 चूंकि प्रिल्स के विनिर्माण के लिये प्रौद्योगिकी विकसित हो गई है इसलिये विस्फोटकों के विनिर्माण के लिये प्रयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकी में भी जबरदस्त परिवर्तन आये हैं और नई उत्पत्ति के विस्फोटक केवल प्रिल्स से ही बनाये जा सकते हैं न कि क्रिस्टल, फ्लैक्स अथवा पिंडों से। प्रिल्स के अलावा किसर अन्य रूप का प्रयोग करना विस्फोटकों के विनिर्माण की प्रौद्योगिकी को पीछे ले जाना होगा। प्रिल्स ईष्टतम उत्पाद हैं, ये मुक्त रूप से प्रवाहनीय हैं, कोटिंग किये जा सकते हैं और एंटी केकिंग और अन्य लाभकारी विशेषताओं वाले हैं।

34 विस्फोटक विनिर्माण एक ध्यानपूर्वक निगरानी करने वाली प्रौद्योगिकी है और गुणवत्ता नियंत्रण वैज्ञानिक सुरक्षा और विस्फोटक की गुणवत्ता के संबंध में अच्छे मापदण्डों के लिये विभिन्न कच्ची सामग्रियों का परीक्षण काते हैं। विभिन्न प्रकार के विस्फोटक लार्ज डायमीटर स्लरी विस्फोटक, साइट मिक्स स्लरि, विस्फोटकों का अनुमति प्राप्त समूह, लार्ज डायमीटर इमल्शन, बल्क इमल्शन इत्यादि जिनका अनुप्रयोग बहुत अलग है जबकि उनका रासयनिक संघटन पर्याप्त रूप से समान है। सामग्रियों में थोड़े बहुत उतार चढ़ाव के साथ विस्फोटकों की विशेषताये पर्याप्त रूप से परिवर्तित हो जाती हैं जो उत्पाद को विभिन्न अनुप्रयोगों के उपयुक्त बनाता है। इस प्रकार यह वक्तव्य कि विभिन्न धनत्व वाला और विभिन्न रूपों में अमोनियम नाइट्रेट समान अथवा एक जैसा है, वास्तव में गलत है।

निर्यातिक के विचार

मै ० जे एस सी नेविनोमिसकित एजोट, रूस

35 हमारे द्वारा निर्यातित उत्पाद उच्च सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट प्रिल है, जिसका भारत में विनिर्माण नहीं किया जाता है। अमोनियम नाइट्रेट मेल्ट और कम सधनता वाले अमोनियम नाइट्रेट जैसे उत्पाद हमारे द्वारा निर्यातित उत्पाद के समान वस्तु नहीं हैं। इस संबंध में, हमने तकनीकी और वाणिज्यिक मापदण्डों के संबंध में सूचना प्रस्तुत की है जो विभिन्न उत्पादों में अंतर

करती है। नियातक द्वारा यह उत्सेख किया गया है कि वे एल डी एन का विनिर्माण नहीं करते हैं और जॉच अवधि के दौरान इस उत्पाद की कोई धरेलू अथवा नियात बिकी नहीं हुई है। आगे यह भी स्पष्ट किया गया है कि हमारे द्वारा ए एन मेल्ट का विनिर्माण किया जाता है लेकिन इसका प्रयोग क्रैप्टिव खपत के लिये किया जाता है।

प्राधिकारी द्वारा जॉच और निश्कर्ष

36 वर्तमान जॉच में विचाराधीन उत्पाद अमोनियम नाइट्रेट है। इसे विभिन्न रूपों जैसे पिधला हुआ, प्रिल, सफ्टिक, कणिकओं, फाहों तथा पिण्डकों में उत्पादित किया जाता है। उत्पाद को पहले पिधले हुए रूप में उत्पादित किया जाता है, जिसे तब प्रिल, फाहों पिण्डका आदि प्राप्त करने के लिए ठोस रूप दिया जाता है। अमोनियम नाइट्रेट का विनिर्माण वृत्त आकार के निघ्यभावक में नाइट्रिक अम्ल (60% सांद्रण) के साथ वाष्प अमोनिया के जरिए संश्लेषण द्वारा किया जाता है। तब अमोनियम नाइट्रेट धोल (72-74 % सांद्रण) को वाष्पक, सांद्रित (अमोनियम नाइट्रेट मेल्ट मर्चेण्ट बिकी हेतु 82% तक तथा प्रिलिंग के लिए 96% तक) में भेजा जाता है और मेल्ट टंकी में जमा किया जाता है। इसके पश्चात एन प्रिल्स के उत्पादन के लिए प्रिलिंग प्रक्रिया हेतु (प्रिलिंग, पूर्व शुष्कन, शुष्कन, प्रशीतन, संधनन तथा बैगिंग) हेतु एन मेल्ट का उपयोग किया जाता है।

सधनता के संबंध में अमोनियम नाइट्रेट को दो रूपों में वर्गीकृत किया जाता है

- 0.85 ग्राम/मिली. से अधिक की सधनता वाला उच्च सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स।
- 10.85 ग्राम/मिली. से कम की सधनता वाला कम सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स।

37 कोटिंग दूयरा मापदंड है। अमोनियम नाइट्रेट आवरण हीन रायसयनिक रूप से नेपित हो सकता है। रायसयनिक रूप से लेपित अथवा अलेपित रूप समान वस्तु है दोनों के बीच एक मात्र अंतर कोटिंग का होना है। भंडारण के दौरान नमी वृद्धि को कम करने के कम में कोटिंग किया जाता है, वस्तुत कोकिंग/ हार्ड लम्प निर्माण से बचाने के लिये।

38 यह एक अकार्बनिक रसायन है तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्ष 3102.30 के अध्याय 31 के तहत वर्गीकृत है। सीमाशुल्क वर्गीकरण मात्र सांकेतिक है और जॉच क्षेत्र में बाध्यकारी नहीं है। अमोनियम नाइट्रेट का उपयोग पाटर जेल/गारा विस्फोटक, इमल्शन विस्फोटक में किया जाता है। जिनका निम्नलिखित उपयोग जैसे ओपन कार्स्ट माइनिंग, अंडर ग्राउन्ड मेटालिफेरस माइनिंग कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्रीज, प्रोजेक्ट आदि, जबकि कम सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट को ग्रेन्यूल्स/स्फटिक के मुकाबले अमोनियम नाइट्रेट ईन्थन तेल (ए एन एफ ओ) तैयार करने के लिये अधिक पसन्द किया जाता है जिसका विस्फोटक एजेन्ट तथा इमल्सफाइड (ए एन एफ ओ) रूप में किया जाता है। रूप चाहे जो भी हो, उच्च सधनता वाले अमोनियम नाइट्रेट को पाटर जेल/इमल्शन विस्फोटक के उत्पादन में अल्प वृद्धि उत्पादन प्रक्रिया तथा अतिरिक्त लागत की आवश्यकता होती है। कम सधनता वाले अमोनियम नाइट्रेट के उत्पादन में अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता जरूर होती है।

39 निर्यातको/आयातको ने उत्पाद को उच्च सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट/ अमोनियम नाइट्रेट (फर्टिलाइजर ग्रेड)/ अमोनियम नाइट्रेट उच्च सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट (फर्टिलाइजर ग्रेड)के रूप में बताया है। यू एस ए डी ओ सी ने रस से अमोनियम नाइट्रेट के आयाम के संबंध में पाटनरोधी जॉच में अमोनियम नाइट्रेट को 53 पाउण्ड प्रति धनीय मूल (0.849 ग्राम/एम एल के समतुल्य) से अधिक सधनता वाला उच्च सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट है जबकि अल्प सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट एल डी ए एन है 1 याचिकाकर्मा ने यह भी दावा किया है कि वे 0.85 ग्राम/एम एल से 1⁴39 ग्राम/ एल एल से अधिक सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट का उत्पादन करते हैं। जबकि हिमबद्ध पक्षकारों ने दावा किया है कि याचिकाकर्ता ए एन प्रिल्स से 0.85 ग्राम/ एम एल से कम सधनता वाला अमोनियम नाइट्रेट का उत्पादन कर रहे हैं। हिमबद्ध पक्षकारों ने अपने निवेदन में भी स्वीकार किया है कि मै0 डी एफ पी सी एल को छोड़कर कोई अन्य धरेलू उद्योग अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स का उत्पादन नहीं करता है बल्कि एल डी ए एन प्रिल्स का उत्पादन करता है। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि मै0 डी एफ पी सी एल उच्च तथा न्यून दोनों सधनता वाले अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स का मुख्य उत्पादक है और उन्हें ओपटीफार्म (एच डी ए एन प्रिल्स) तथा ओपटीमिक्स (एल डी ए एन प्रिल्स) ब्रान्ड नाम से बेचा जाता है।

इसके लिये उन्होंने एस जी एस जॉच रिपोर्ट यह बतलाते हुये कि ओपटीफार्म की सधनता 0.85 ग्राम/एम एल है जबकि उपभोक्ताओं ने 0.85% ग्राम/एम एल कम सधनता वाले अलेपिट अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स का एसजीएस जॉच प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किया है, पेश किया है। क्योंकि उनका दावा है कि धरेलू उद्योग एच डी ए एन प्रिल्स का उत्पादन नहीं करता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजी साक्ष्य निरपेक्ष रूप से यह प्रमाणित नहीं करते हैं कि ओपटीफार्म रूप में बेचा गया अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स रूसी तथा ईराकी निर्यातकों द्वारा 0.85 ग्राम/एमएल से अधिक सधनता वाले निर्यातित एचडीएएन प्रिल्स के समरूप है।

40 याचिकाकर्त्ताओं ने दावा किया है कि यद्यपि सधनता के अनुसार वाणिज्यिक रूप से अमोनियम नाइट्रेट को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है, तकनीकी मापदंड के रूप में सधनता बहुत से उत्पाद विनिर्देशनों में उल्लिखित नहीं है। वस्तुतः सामग्री की जॉच रिपोर्ट सामान्यता सामग्री की सधनता नहीं दर्शाती है। यह वर्गीकरण तकनीकी आवश्यकता की अपेक्षा बाजार रूख के संदर्भ में अधिक संगत है। हितबद्ध पक्षकारों ने अपने निवेदनों के विभिन्न चरणों में तर्क उठाया है कि आयातित एचडीएएन प्रिल्स धरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित किए जा रहे वस्तुओं के समान नहीं हैं। हितबद्ध पक्षकारों ने आगे बल दिया है कि धरेलू उद्योग एचडीएएन प्रिल को छोड़कर सभी अन्य रूपों का उत्पादन कर रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं एचडीएएन शब्द आयात के पूर्व धरेलू वाणिज्यिक कारोबार प्रक्रिया में नहीं था और विनिर्माण इकाईयों की धरेलू जॉच के दौरान उनकी बिक्रियां/विभिन्न उपभोक्ताओं की आपूर्ति दस्तावेजों से यह पाया गया था कि उत्पादकों ने कभी भी उत्पाद को एचडीएएन प्रिल अथवा एचडीएएन मेल्ट के रूप वर्णित नहीं किया बल्कि ए एन प्रिल (ऑटीमैक्स और आप्टीफार्म) अथवा एएन मेल्ट के रूप में आपूर्ति की।

41 एचडीएएन प्रिल के संबंध में, प्राधिकारी ने याचिकाकर्त्ताओं, निर्यातकों तथा आयातकों/प्रयोक्ताओं द्वारा व्यक्त दृष्टिकोण पर विचार किया है। पाटनरोधी नियमों का नियम 2 (ध) समान वस्तु को इस रूप में परिभाषित करता है,

“समान वस्तु का अर्थ है हर प्रकार से भारत में पाठित किए जाने हेतु जांचाधीन वस्तु के सारूप्य अथवा ऐसी वस्तु अथवा ऐसी वस्तु की गैर मौजूदगी में, दूसरी वस्तु जो हालांकि हर प्रकार से समान नहीं है परंतु जांचाधीन वस्तुओं के समान धनिष्ठ विशेषता वाली है।”

42 निर्यातकों, आयातक/प्रयोक्ताओं के इस तर्क के संबंध में कि आयातित उत्पाद जांचाधीन वस्तु के सारूप्य अथवा हर प्रकार से समरूप नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्त्ताओं ने अन्य बातों के साथ-साथ यह बताया है कि अमोनियम नाइट्रेट के विभिन्न रूपों के बीच प्रतिस्थापनीयता काफी हद तक है, धरेलू तौर पर उत्पादित अमोनियम नाइट्रेट तथा आयातित एचडीएएन प्रिल जिनका मात्र विस्फोटकों के उत्पादन में प्रयोग होता है कि विशेषताओं के अनुसार काफी धनिष्ठ समानता है। याचिकाकर्त्ताओं तथा हितबद्ध पक्षकारों दोनों के द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी यह प्रमाणित करने को बाध्य है कि धरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित अमोनियम नाइट्रेट जांचाधीन में से एक, एचडीएएन प्रिल्स के सामरूप्य अथवा हर प्रकार के से समान है। एक सामरूप्य उत्पाद की अनुपस्थिति में निर्धारण का अगला मापदंड कि धरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित किए जाने वाले उत्पाद जो हर प्रकार से समान नहीं हैं, जांचाधीन वस्तुओं के काफी समान हैं अथवा नहीं। एक हितबद्ध पक्षकार की अपनी स्वीकृति के अनुसार कि अमोनियम नाइट्रेट का विनिर्माण करने वाली दो इकाईयों नामतः सेल, राउरकेला तथा फर्टिलाइजर कारपोरेशन ऑफ इंडिया, सिन्दरी के बन्द/आवधिक रूप से बन्द होने के कारण पूर्वी भारत में स्थित विस्फोटक उद्योगों के पास आयातों का आश्रय लेने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है जो कि तुलनात्मक रूप से सस्ता और भारत के अन्य भागों से अमोनियम नाइट्रेट प्राप्त करने की तुलना में अधिक प्रयोक्ता अनुकूल थे। प्रयोक्ता उद्योग ने भी अपने निवेदनों में स्वीकार किया है कि मांग और आपूर्ति में अंतर होने के कारण वे आयातित अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स को सस्ता और हैंडलिंग में सुविधाजनक होने के कारण मेल्ट/ठोस अमोनियम नाइट्रेट की धरेलू आपूर्तियों की तुलना में अधिक पसंद करते हैं। एक ग्राहक ने अपने निवेदनों में यह भी स्वीकार किया है कि आयातित एचडीएएन प्रिल्स की पहुंच कीमत और पिछले हुए/ठोस अमोनियम नाइट्रेट प्राप्त करने में अंतर के कारण कीमत का न्यूनतम अंतर परिकलित होता है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि धरेलू तौर पर उत्पादित ए एन प्रिल हितबद्ध पक्षकारों की स्वीकृति के अनुसार एचडीएएन प्रिल के आयात के साथ काफी सीमा तक प्रतिस्थपनीय है।

43 अप्रैल 2001 से फरवरी, 2003 तक की अवधि अर्थात् पीओआई के बाद अमोनियम नाइट्रेट की बिक्री के बारे में धरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजी साक्षय से यह मालूम होता है कि अधिकांश विस्फोटक उद्योगों ने इन उत्पादकों से पिधला हुआ अमोनियम नाइट्रेट और अमोनियम नाइट्रेट प्रिल्स दोनों को प्राप्त किया है। धरेलू उद्योग की लागत की गणना और बिक्री की सूचना जांच के दौरान उनकी बिक्रियों और उत्पाद शुल्क रजिस्टर से यह सिद्ध हुआ था कि विस्फोटक उद्योग विस्फोटकों के विर्निमाण के लिए आयातित एचडीएएन प्रिल्स और धरेलू तौर पर खरीदे गए पिधले हुए/ठोस एएन का प्रयोग कर रहा है। ग्राहकों के दृष्टिकोण से ग्राहकों ने दोनों स्रोतों का एक सीमित सीमा तक एक दूसरे के स्थान पर भी प्रयोग किया है लेकिन एक दूसरे का प्रतिस्थापन भी किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि एक रूप को आयात किया गया है और उसका प्रयोग किया गया है जबकि प्रयोग किए गए दूसरे रूप से दोनों रूपों का तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापन सिद्ध होता है। सहयोगी रूसी और ईरानी निर्यातकों के परिसरों के सत्यापन के दौरान यह पाया गया था कि वे उसी प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहे हैं जिसका ए एन के विर्निमाण के लिए धरेलू उद्योग द्वारा किया जा रहा है।

44 यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि पहले अमोनियम नाइट्रेट के मुश्किल से कोई आयात हुए थे। आयातित सामग्री के उपयोक्ता केवल धरेलू स्रोत से अपनी आवश्यकता पूरी कर रहे थे। विस्फोटक विभाग, नागपुर ने भी यह सूचित किया है कि आयातित उत्पाद का प्रयोग करके विस्फोटक विनिर्माताओं ने इसे लाभकारी पाया और उन्होंने एचडीएएन प्रिल्स का प्रयोग किया। प्राधिकारी विस्फोटक विभाग, नागपुर द्वारा व्यक्त इस विचार को मानते हैं कि विस्फोटक उद्योग द्वारा आयातित एचडीएएन प्रिल्स और धरेलू तौर पर उत्पादित अमोनियम नाइट्रेट का प्रयोग किया गया है। विस्फोटक विभाग ने यह भी कहा है कि एफसीआई सिन्दरी और सेल, राउरकेला के बन्द हो जाने के कारण पिधले हुए अमोनियम नाइट्रेट की कमी को आयातित एचडीएएन प्रिल्स द्वारा पूरा किया गया है। दूसरे पिधले हुए और एलडीएएनपी के प्रहस्तन में शामिल जोखिम एचडीएएन प्रिल्स से अधिक है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि एक दूसरे रूप की वरीयता से यह मालूम होता है कि सभी रूप तुलनीय हैं इसलिए प्राधिकारी को हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क में कोई गुणा-व-गुण नहीं मालूम होते हैं कि एचडीएएन प्रिल्स को विचाराधीन उत्पाद अर्थात् अमोनियम नाइट्रेट के रूप में नहीं माना जा सकता।

45 सीमाशुल्क विभाग ने अमोनियम नाइट्रेट चाहे वह तरल धोल हों अथवा नहीं के रूप में उत्पाद का वर्णन करते हुए उप-शीर्ष 3102.30 के अंतर्गत सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अध्याय 31 के अंतर्गत उत्पाद का वर्गीकरण किया है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि एचडीएएन प्रिल जिसे उक्त सीमाशुल्क उप-शीर्ष के अंतर्गत शामिल और स्वीकृत किया गया है, से एचडीएएन प्रिल का समान वस्तु होने का याचिकाकर्ता का दावा सिद्ध होता है।

46 याचिकाकर्ता ने आगे यह दावा किया है कि अमोनियम नाइट्रेट चाहे किसी भी रूप में हो सामान्यता मात्र पिघले हुए रूप में उपयोग किया जाता है चूंकि इम्लशन विस्फोटक जल में अमोनियम नाइट्रेट को आक्सीकृत धोल तैयार करने के बाद बनाया जाता है। इस प्रकार, अमोनियम नाइट्रेट का ठोस रूप में रूपांतरण एक तकनीकी आवश्यकता नहीं है बल्कि भंडारण और हैंडलिंग हेतु सुविधाजनक होता है। हितबद्ध पक्षकारों ने भी अपने निवेदनों में स्वीकार किया है कि अमोनियम नाइट्रेट के ठोस रूपों को विशिष्टीकृत टैंकर में किया जाता है जबकि पिघले हुए रूप के परिवहन हेतु नियंत्रित तापमान वाले विशेष टैंकरों की आवश्यकता होती है ताकि इसकी तकनीकी विशिष्टता को बनाए रखा जा सके। इस प्रकार पिघले हुए अमोनियम नाइट्रेट के वहन हेतु विशिष्टकृत टैंकों के कारण अत्यधिक व्यय की आवश्यकता होती थी जो कि लम्बी दूरी की डिलीवरी के लिए वाणिज्यिक तौर पर व्यवहार्य नहीं है।

47 प्राधिकारी नोट करते हैं कि धरेलू तौर पर उत्पादित ए एन प्रिल्स की तुलना में एचडीएएन प्रिल के प्रयोग से कुछेक लाभ हो सकते हैं तथापि दोनों सामग्री की मूल रासायनिक विशेषताएं समान होती हैं चूंकि दोनों का उपयोग विस्फोटकों के विर्निमाण में होता है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि विर्निमाण प्रक्रिया तथा प्रोद्योगिकी अथवा विभिन्न कच्ची सामग्रियों की खपत आयातित एचडीएएन प्रिल तथा धरेलू तौर पर उत्पादित ए एन प्रिल्स दोनों के लिए समान है।

48 प्राधिकारी ने भारत को निर्यातित सामान के रूसी और ईरानी विनिर्माताओं का दौरा किया और यह समझते हैं कि ए एन पी उत्पादन प्रक्रिया उदगम के बावजूद आमतौर पर समान है। ए एन का उत्पादन अमोनिया की नाइट्रिक एसिड के साथ सहक्रिया द्वारा किया जाता है। अमोनिया की नाइट्रिक एसिड के साथ सहक्रिया से ए एन धोल प्राप्त होता है। इस धोल को या तो एक प्रिलिंग अथवा एक ग्रेनुलेटिंग प्रक्रिया द्वारा जमाया जाता है। इसके बावजूद आयातित एच

डी ए एन प्रिल्स का उपयोग विस्फोटक इमलशन के विनिर्माण में आयातकों / प्रयोक्ताओं द्वारा किया जा रहा है। अनेक हितबद्ध पक्षकारों ने सलाह दी कि ए एन धोल और एल डी ए एन प्रिल्स का आयात आर्थिक रूप से अथवा संभार-तंग की दृष्टि से व्यवहार्य नहीं है। निर्यातकों ने यह भी दावा किया है कि उन्होंने ए एन धोल और एल डी ए एन प्रिल्स का निर्यात नहीं किया है। यह किस्टली करण से बचाव के लिए एक निश्चित तापमान पर धोल को वाहित करने की आवश्यकता के धार है। ए एन धोल के परिवाहन और भड़ांरण के लिए विशेष उपकरणों और प्रबंधों की आवश्यकता होती है और एल डी ए एन प्रिल की विस्फोट की अधिक प्रबृत्ति होने के कारण प्राधिकारी यह मानते हैं कि ए एन के यह दोनों रूप निर्यातों के लिए व्यवहार्य नहीं हैं। इन दोनों प्रकारों का आयात न तो जॉच की अवधि में अथवा न ही जॉच अवधि से पूर्व किया गया है।

49. ए एन सधनता के मामले में प्रकार और सामान की स्थिति भौतिक विशेषताएँ हैं जो महत्वपूर्ण हैं और विस्फोट उद्योग में प्रयोक्ताओं के लिए कारकों का विभेद करता है। ये विशेषताएँ, विशेषकर सधनता उत्पाद की निष्पादन संभावना से जुड़ी हैं और संबंधित कीमत से प्रदर्शित होती है। तदनुसार प्राधिकारी मानते हैं कि कम सधनता वाले ए एन, उच्च सधनता वाले ए एन, ए एन धोल एक समान वस्तुएं नहीं हैं।

50. प्राधिकारी मानते हैं कि आयातित एवं स्थानीय रूप से उत्पादित ठोस अमोनियम नाइट्रेट के बीच महत्वपूर्ण स्तर तक प्रति स्थापनीयता है। यद्यपि आम तौर पर इस बात की संभावना नहीं है कि उच्च घनत्व वाले आयातित अमोनियम नाइट्रेट को विस्फोटकों के विनिमयि हेतु में घरेलू रूप से उत्पादित अमोनियम नाइट्रेट के स्थान पर प्रयोग में लाया जाता है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू रूप से उत्पादित अमोनियम नाइट्रेट में विचाराधीन उत्पाद से मिलती जुलती विशेषताएं हैं। ए एन के कुछ घनत्व, अवस्थाएं या रूप विशेष विस्फोट उत्पाद के विनिर्माण के लिए तकनीकी रूप से अधिक उपयुक्त होते हैं। विस्फोटक निर्माता कंपनियों ए एन एफ ओ, हेवी ए एन एफ ओ और बलक मिश्रण विस्फोटकों के लिए अपने अपेक्षित उत्पाद मिश्रण के निर्धारण में इस भिन्नताओं को अलग-अलग करते हैं। इसके बावजूद ए प्राधिकारी मानते हैं कि भिन्न-भिन्न ए एन उत्पाद की विशेषताएं घनत्व, अवस्था या रूप में भिन्नताओं के कारण बदलती नहीं हैं। स्थानीय रूप से उत्पादित या आयातित ए एन की अधिकांश मात्रा को विभिन्न प्रकार के विस्फोटकों के निर्माण के लिए खरीदा जाता है। तकनीकी रूप से ए एन को विस्फोट प्रक्रिया में एक आकसीजन स्रोत के रूप में प्रयोग किया जाता है। आयातित एच डी ए

एन प्रिल्स स्थानीय रूप से उत्पादित ए एन से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं। यद्यपि इनका उपयोग मूल रूप से काफी कम होता है बल्कि इन्हें विस्फोट उत्पाद के एक प्रमुख घटक के रूप में प्रयोग में लाया जाता है।

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों ने यह अनुरोध किया है कि संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तु के समान वस्तु नहीं है। प्रारंभिक जाँच परिणामों में प्राधिकारी ने यह माना था कि अमोनियम नाइट्रेट की सभी किस्में विचाराधीन उत्पाद हैं और संबद्ध वस्तुओं की जाँच नियम-2 (घ) के अंतर्गत दी गई समान वस्तु की परिभाषा के आलोक में की थी कि यदि आयातित एच डी ए एन जाँचाधीन वस्तु के सभी तरह से एक समान या समान नहीं हो तो परिभाषा के दूसरे भाग के सादृश्य में यह माना गया था कि ऐसी किसी समान वस्तु कि अनुपस्थिति में कोई अन्य वस्तु जो जाँचाधीन वस्तु से काफी मिलती जुलती हो को समान वस्तु माना जाएगा। हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि अमोनियम नाइट्रेट की भिन्न-भिन्न किस्मों को उद्योग द्वारा अपेक्षित विभिन्न विस्फोटक ग्रेडों की उत्पादन प्रक्रिया में उनके प्रयोग के अनुसार समान वस्तु नहीं माना जाता है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि चूँकि ए एन मेल्ट और एल डी ए एन का भारत में आयात नहीं किया गया है इसलिए इनसे घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है। एच डी ए एन के मामले जिसकी घनत्व 0.85ग्रा./ मिली. से अधिक होता है जिसका उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है और विस्फोटक प्रौद्योगिकी के विकास के साथ आन साइट विस्फोटक ग्रेड सामग्रियों के विनिर्माण तथा विभिन्न अन्य विस्फोटक अनुप्रयोग में एच डी ए एन का प्रयोग परम आवश्यक हो गया है।

52. प्राधिकारी मानते हैं कि चूँकि ए एन मेल्ट और एल ए डी एन का भारत में आयात नहीं किया जाता है इसलिए इनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही है जबकि उपभोक्ताओं द्वारा प्रयोग में लाया जाता है क्योंकि ये वस्तुएं घरेलू रूप से उत्पादित अमोनियम नाइट्रेट के साथ तकनीकी और वाणिज्यिक यप से प्रतिस्थानपीय है। इसलिए प्राधिकारी विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त विचारों को मानते हैं और विचाराधीन उत्पाद को ए एन मेल्ट एवं एल डी ए एन 0.85ग्रा./मिली. से कम घनत्व वाले को छोड़कर अमोनियम नाइट्रेट के रूप में संशोधित किया है। संशोधन के आलोक में विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु के लिए पास मार्जिन निर्धारित किया गया है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद पर हितबद्ध पार्टियों के विचारों तथा अमोनियम नाइट्रेट के विभिन्न रूपों के उत्पादन में शामिल विनर्माण प्रक्रिया की पूरी जाँच करने के बाद किया गया है। उत्पाद की उत्पादन प्रक्रिया को समझने के बाद प्राधिकारी का यह विश्वास है कि ए एन मेल्ट वह मूल चरण है जहां से अन्य सभी रूपों की संवर्धनात्मक प्रोसेसिंग अपेक्षित होती है; अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद पर हितबद्ध पार्टियों के विचारों तथा अमोनियम नाइट्रेट के विभिन्न रूपों के उत्पादन में शामिल विनर्माण प्रक्रिया की पूरी जाँच करने के बाद किया गया है।

53. प्राथिकारी याचिकाकर्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों के मद्देनजर और इसके साथ ही संबद्ध देशों से निर्यातित और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के एक समान उपभोक्ताओं द्वारा प्रतिस्थापनीयता एवं प्रसयोगों पर विचार करते हुए संबद्ध वस्तुओं, निर्यातित एवं घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु ए एन बेल्ट और एल डी ए एन (0.85ग्रा. /मिली. से कम घनत्व) को छोड़कर ए एन के सभी ग्रेडों/किसिमों को अंतिम जाँच परिणाम के प्रयोजनार्थ नियम 2 (घ) के अंतर्गत समान वस्तु मानते हैं।

ग घरेलू उद्योग

घरेलू उद्योग के विधार

54. यह याचिका संयुक्त रूप से गजरात नर्मदा वैली फटिलाइजर्स कम्पनी लि. (जीएनएफजी), नेशनल फर्टिलाइजर्स लि. (एनएफएल) तथा दीपक फर्टिलाइसर्जर्स तथा पेट्रोकेमिकल्स कारपोरेशन लि. (डीईपीसीएल) द्वारा दायर की गई है। याचिकाकर्ताओं द्वारा संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन भारत में समान वस्तु के उत्पादन का बड़ा हिस्सा परिकलित होता है। याचिकाकर्ता पाठनरोधी नियमों के तहज याचिका दायर करने की स्थिति को पूरा करते हैं, बाद में याचिका का समर्थन राष्ट्रीय केमिकल फर्टिलाइजर्स लि. द्वारा किया गया है।

55. यह बात दोहराई गई है कि दीपक फर्टिलाइजर्स वर्तमान याचिका दायर करने के लिए पात्र नहीं है, क्योंकि उसकी संबद्ध कंपनी ने संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है। यद्यपि निर्दिष्ट प्राथिकारी ने प्रारंभिक जाँच परिणामों में पहले ही यह माना है कि उक्त कंपनी को घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल किया जाना चाहिए, यह मानते हुए यद्यपि स्वीकार नहीं करते हुए कि ही। की संबद्ध कंपनी ने सामग्री का आयात किया है। यह अनुरोध किया गया है कि संबद्ध आयात जाँच अवधि से पहले की अवधि में किए गए थे। वर्तमान जाँच के प्रयोजनार्थ प्रारंभिक जाँच अवधि के दौरान किया गया आयात है जैसा कि पहले ही निर्दिष्ट प्राथिकारी और सेस्टेट ने अनके मामलों में माना है। याचिकाकर्ताओं ने निम्नलिखित मामलों में माननीय संस्टेट के निर्णयों को संदर्भ दिया है और उन्हें आधार माना है।

(क) हाइड्रोक्सील एमीन सल्फेट के मामलों में सेस्टेट ने याचिकाकर्ता को घरेलू उद्योग माना था क्योंकि उन्हेंने जाँच अवधि में आयात नहीं किया है।

(ख) आप्टिकल फाइबर के मामले में सेस्टेट ने याचिकाकर्ता को घरेलू उद्योग माना था क्योंकि याचिकाकर्ता द्वारा जाँच अवधि से पहले आयात किए गए थे।

56. याचिकाकर्ता भारत से पालिस्टर फ़िल्मों के मामले में यूएएआईटीसी के निर्णय का हवाला देना और उसे आधार बनाना चाहते हैं जिसमें आईटीसी ने यह निर्णय दिया था कि हम यह निर्धारण करने में कि क्या संबंधित पक्षकार संबंधी प्रावधान के अंतर्गत घरेलू उद्योग से घरेलू उत्पादक को बाहर रखा जाए आमतौर पर द्विस्तरीय विश्लेषण प्रक्रिया अपनाते हैं। हम सर्वप्रथम यह विचार करते हैं कि क्या कंपनी धारा 771 (4) (बी) के अंतर्गत संबंधित पक्षकार है और दूसरा कि क्या उत्पादक की संबंधित स्थिति के मद्देनजर घरेलू उद्योग की परिभाषा से जाँचाधीन कंपनी को बाहर रखने के लिए उचित परिस्थितियां विद्यमान हैं। संबंधित पक्षकार संबंधित प्रावधान को घरेलू उद्योग पर प्रभाव डालने वाले समग्र आकड़ों में किसी विकृति से बचने के लिए अपनाया जाता है जो ऐसे संबंधित पक्षकारों को शामिल करने से उत्पन्न हो सकती है जिनके प्रचालन संबंद्ध आयातों के प्रभावों से संरक्षित हैं। आईटीसी ने उन उत्पादकों को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर नहीं रखा था जिन्होंने जाँच अवधि के दौरान जापान और कोरिया से पेट फ़िल्म का आयात किया था क्योंकि उनके घरेलू प्रचालन मामले में अनुचित उनके घरेलू प्रचालन मामले में अनुचित ढंग से व्यापारित आयातों से संरक्षित, या उनसे लाभान्वित नहीं प्रतीत होते हैं।

57. आवेदक मै. दीपक फर्टिलाइजर्स एण्ड पेट्रोकैमिकल्स कार्पोरेशन को घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है क्योंकि उन्होंने अपने कम्पनी समूह कथित तौर पर एचडीएन प्रिंल के जरिए आयात किया है और तदनुसार नियम-2 के अंतर्गत उन्हें घरेलू उद्योग नहीं कहा जा सकता है।

58. याचिकाकर्ता ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि मै. स्मार्टकैम एक समूह कम्पनी है, इसलिए हमारा सविनय अनुरोध है कि उन्हें संबंधित कम्पनी माना जाना चाहिए। इसके अलावा याचिकाकर्ता अर्थात् डीएफपीसीएल ने आयातित उत्पाद की बिक्री से काफी लाभ कमाया है, इसलिए याचिकाकर्ता द्वारा उल्लिखित पालिस्टर फ़िल्म के मामले में निर्णय प्रासंगिक नहीं है।

59. याचिकाकर्ता ने बताया है कि घरेलू उद्योग को समान वस्तु के संदर्भ में देखा जाना चाहिए और परिभाषित किया जाना चाहिए। विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र को पुनः परिभाषित किया गया है जिससे घरेलू उद्योग का आधार बढ़ सकता है।

आयातकों/ प्रयाकृता उद्योग के विचार मै. इंडिया एक्सप्लोसिट्स लि. और मै. स्पेशल ब्लास्ट्स प्रा. लि।

60. इस बात से इंकार किया गया हो कि याचिकाकर्ताओं के पास घरेलू उद्योग संबंधी योग्यता है क्योंकि आयातित वस्तुओं की बिक्रियां जाँच अवधि के दौरान नहीं की गई हैं। इसके अलावा चूँकि याचिकाकर्ता आयातित वस्तु की समान वस्तु का विनिर्माण नहीं करते हैं इसलिए वे घरेलू उद्योग की परिभाषा पर खेरे नहीं उतरते हैं। अतः यह जाँच समाप्त कर दी जानी चाहिए।

मै. भारत एक्सप्लोसिट्स लिमिटेड

61. इस बात से इन्कार किया गया है कि याचिकाकर्ता के पास घरेलू उद्योग संबंधी योग्यता है क्योंकि भारत में आयातित उत्पाद की कोई समान वस्तु नहीं है। इसके अलावा मै. दीपक फर्टिलाइजर्स एण्ड पेट्रोकैमिकल कारपोरेशन जि. की सहयोगी कंपनियों में से एक ने जाँच अवधि के दौरान माल का आयात किया है और उस की भारी मात्रा में बिक्री की है। इस प्रकार मै. दीपक फर्टिलाइजर्स एण्ड पेट्रोकैमिकल कारपोरेशन जि. को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए।

62. प्राधिकारी द्वारा जाँच

वर्तमान याचिका संयुक्त रूप से गुजरात नर्मदा वैली फर्टिलाइजर्स कम्पनी लि. (जीएनएफसी) नेशनल फर्टिलाइजर्स लि. (एनएफएल) तथा दीपक फर्टिलाइजर्स तथा पेट्रोकैमिकल्स कारपोरेशन लि. (डीईपीसीएल) द्वारा दायर की गई है। याचिकाकर्ताओं द्वारा संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन भारत में समान वस्तु के उत्पादन का बड़ा हिस्सा परिकलित होता है। याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमों के तहत याचिका दायर करने की स्थिति को पूरा करते हैं। इसके अलावा उत्पाद की उत्पदन प्रक्रिया को समझे के बाद प्राधिकारी का यह विश्वास है कि एएन मेल्ट वह मूल स्तर है जहां से सभी अन्य रूपों के लिए संवैधनात्मक प्रोसेसिंग अपेक्षित होती है और इसके लिए प्राधिकारी ने तदनुसार घरेलू उद्योग के आधार में वृद्धि की है। याचिका का समर्थन राष्ट्रीय कैमिकल फर्टिलाइजर्स लि. द्वारा किया गया है।

63. कई हितबद्ध पक्षों ने तर्क दिए हैं कि मैसर्स डीएफपीसी एल वर्तमान याचिका को दायर करने के लिए पात्र नहीं है क्योंकि इसकी सहायक कम्पनी ने संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है, और यह घरेलू उद्योग का संघटक नहीं है। प्राधिकारी ने मैसर्स दीपक फर्टिलाइजर एवं पेट्रोकैमिकल कॉरपोरेशन लि. की स्थिति के बारे में वस्तुस्थिति की जांच की गई है और यह निष्कर्ष निकाला है कि मैसर्स स्मार्टकैम टेक्नोलॉजी लि. जोकि मैसर्स डीएफपीसीएल की एक सहायक कम्पनी है ने जाँच अवधि के पूर्व सामग्री का आयात किया है।

64. घरेलू उद्योग की स्थिति संबंधी योग्यता के बारे में प्राधिकारी ने याचिकाकर्ताओं निर्यातकों और आयातकों/प्रयोक्ताओं द्वारा व्यक्त कियए गए विचारों पर ध्यान दिया है। पाटनरांधी नियमावली का नियम 2 (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का अर्थ है समग्र रूप से घरेलू उत्पादक को समान वस्तु के विनिर्माण में तथा उनसे जुड़े किसी कार्य-कलाप में लगे हों अथवा वे जिनका कथित वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा अनुपात हो सिवाय इसके कि ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा वे स्वयं उनके आयातक हों, इस स्थिति में ऐसे उत्पादक घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं समझे जाएगे।

65. ऊपर दी गई घरेलू उद्योग की परिभाषा को नियमावली के नियम 5 द्वारा और स्पष्ट किया गया है जो इस प्रकार है :-

आवेदन को घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से किया गया तभी माना जाएगा यदि वह उन घरेलू उत्पाद को द्वारा समर्थित हो जिनका समग्र उत्पादन घरेलू उद्योग के उस हिस्से द्वारा उत्पादित समान वस्तु के कुल उत्पादन के पचास प्रतिशत से अधिक बनता हो जिन्हें आवेदन का समर्थन या विरांध, जैसा भी मामला हो, किया हो।

66. अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान याचिका के प्रयोजनार्थ जाँच अवधि में किए गए आयात प्रासंगिक हैं, जैसा कि पहले की निर्दिष्ट प्राधिकारी तथा सीगेट द्वारा माना गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं का घरेलू उद्योग के उत्पादन में 58 प्रतिशत हिस्सा बनता है और मै. राष्ट्रीय कैमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स लि. के समर्थन के साथ घरेलू उद्योग कुल उत्पादन के 74 प्रतिशत का उत्पादन करता है। इसलिए प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तुओं के कुल घरेलू उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक का उत्पादन करते हैं और इसलिए उनके पास पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 (3) (क) और (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने संबंधी योग्यता है और वे नियम 2 (घ) के अनुसार घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व भी करते हैं।

(घ) सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन
घरेलू उद्योग के विचार

67. रूसी निर्यातक द्वारा दिया गया उत्ता पूर्ण रूप से अपर्याप्त और अधूरा है। निर्यातक ने घरेलू बाजार में घरेलू बिक्रियों के संबंध में जानकारी नहीं दी है। निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार संबंधी दावे के लिए पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है। निर्यातक द्वारा प्रस्तुत उत्तर को अस्वीकार किया जाना चाहिए।

68. प्राकृतिक गैस अमोनियम नाइट्रेट के उत्पादन के लिए आवश्यक प्रमुख कच्ची सामग्री है। प्राकृतिक गैस रूस सरकार के नियंत्रण में है, जैसा कि यूरीया अमोनियम नाइट्रेट के आयातों से संबंधित एक जाँच में हाल में यू एस द्वारा माना गया है। आरट्रेलियाई सीमा शुल्क सेवा ने भी रूस से यूरीया अमोनियम नाइट्रेट से संबंधित जाँच में यह निर्णय दिया है कि प्राकृतिक गैस की कीमतों पर रूस सरकार का नियंत्रण है। इस प्रकार निविष्टियों और कच्ची सामग्री की कीमतों पर रूस सरकार का नियंत्रण है। ऐसे मामलों में निर्यातक यही भी दावा नहीं कर सकता है कि उसे बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार प्रदान किया जाए। यह नहीं कहा जा सकता है कि निविष्टियों की कीमतें उचित बाजार मूल्य प्रदर्शित करती हैं। निश्चित रूप से यह स्थिति नहीं हो सकती है कि किसी कंपनी को एक देश द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किया जाए और उन्हीं

परिस्थितियों में एक अन्य देश द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार प्रदान न किया जाए। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य को गैर बाजार अर्थव्यवस्था को शासित करने वाले सिद्धान्तों के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए।

69. रूस के निर्यातकों ने बाजार अर्थव्यवस्था के लिए अपना प्रस्ताव करके व्यवहार संबंधी सूचना और साक्ष्य प्रस्तुत करने के अपने दायित्व से बचने का प्रयास किया है। मौखिक सुनवाई के समय भी, यह कहा गया था कि निर्यातक से संबंधित आकड़ों को सत्यापित किया जा सकता है। तथापि याचिकाकर्ता यह बताने में विफल रहे हैं कि आकड़ों को कैसे सत्यापित किया जाए जबकि यह अब भी अधूरे है और निर्यातक ने उत्तर का पर्याप्त अगोपनीय अंश प्रस्तुत नहीं किया है। ऐसा लगता है कि निर्यातक यह सुझाव दे रहे हैं कि निर्दिष्ट प्राधिकारी सूचना एवं लक्ष्य एकत्र करने के लिए अधिकारियों की एक टीम नियुक्त कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में संगत आकड़े एकत्र करने के लिए एक सत्यापन दौरा किया जा सकता है। याचिकाकर्ता पोटेशियम परमेंगेनेट मामले में माननीय सेस्टेट के निर्णय का संदर्भ और आधार देते हैं, जिसमें न्यायाधिकरण ने यह निर्णय दिया है कि सत्यापन दौरों को आकड़ा संकलन दौरा नहीं बनाया जा सकता है। निर्यातक को पहले इस बात को न्याय संगत साबित करने के लिए पूरी सूचना एवं साक्ष्य प्रस्तुत करने चाहिए कि उसे बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार प्रदान किया जा सकता है।

70. ईरान से ईरान पेट्रोकैमिकल कमार्शियल कं. (आईपीसीसी) ने उत्तर दिया उत्तर पूर्ण रूप से अधूरा और अपर्याप्त है। निर्यातक ने प्रश्नावली शामिल भागों के विभिन्न परिशिष्टों के उत्तर में केवल संक्षेप में सूचना प्रस्तुत की है। इसके अलावा निर्यातक ने यह स्वीकार किया है कि उन्हें सभी मिल रही है, जिसके ब्यौरे उपलब्ध नहीं कराए गए हैं, जैसा कि प्रश्नावली में अपेक्षित है। किसी मामले में यदि समस्त सौदे कंपनी द्वारा सरकार से प्राप्त सब्सिडियों के आधार पर किए गए हों तो घरेलू बाजार में कीमतों को व्यापार के सामान्य क्रम में नहीं माना जा सकता है।

71. याचिकाकर्ताओं का यह अनुरोध है कि घरेलू उद्योग के दावे का समर्थन करने वाला निर्धारक तत्व रूस में प्राकृतिक गैस की कीमतें हैं। जो विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए आवश्यक प्रमुख कच्ची सामग्री है उत्पादन की कीमतें रूस की सरकार द्वारा नियंत्रित होती है। केवल इस आधार पर कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार प्रदान नहीं किया जा सकता है। यह देखा जा सकता है कि आस्ट्रेलियाई प्राधिकरणों ने केवल इस आधार पर रूस को गैर बाजार अर्थव्यवस्था माना है कि प्राकृतिक गैस की कीमतें रूस की सरकार द्वारा नियंत्रित होती है। यह भी देखा जा सकता है कि रूसी उत्पादक अंतिम उपयोग के आधार पर प्राकृतिक गैस को भिन्न-भिन्न कीमतों पर प्राप्त कर रहे हैं। यदि अंतिम उपयोग फर्टिलाइजर ग्रेड का उत्पाद है तो कीमतें काफी कम हैं (जिसका अर्थ है कि यदि अंतिम उपयोग विस्फोटक ग्रेड का उत्पाद है तो कीमतें काफी अधिक हैं)। फर्टिलाइजर ग्रेड और विस्फोटक ग्रेड अलग-अलग उत्पाद नहीं हैं।

72. ईरान के निर्यातक द्वारा किए गए अनुरांधों के बारे में यह स्पष्ट है कि निर्यातक अंतिम उपयोग के आधार पर प्राकृतिक गैस के लिए अलग-अलग कीमतें चुका रहे हैं। यदि अंतिम उपयोग फर्टिलाइजर होता है तो निर्यातक को सब्सिडी मिलती है। चूँकि उपयोग विस्फोटक का उत्पादन करना है इसलिए केवल विस्फोटकों के लिए घरेलू बाजार में बिक्री कीमतें तथा उत्पाद की उत्पादन लागत ही लागू होगी।

आयातकों/प्रयोक्ताओं के विचार

मै. भारत एक्सप्लोसिट्स लिमिटेड

73. यूरोपीय संघ और यूएसडीओ दोनों रूस को बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानते हैं। तथापि यदि यह माना भी जाता है कि रूस एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था है, तो भी सामान्य मूल्य उत्पादन लागत की गणना प्रतिनिधिक देश में उत्पादन के आधार पर हितबद्ध पक्षकारों को ऐसे देश के चयन के संबंध में टिप्पणी देने का अवसर देने के पश्चात की जाती है प्रारंभिक जाँच परिणामों से ऐसा कुछ स्पष्ट नहीं होता है कि किस प्रतिनिधिक देश का चयन किया गया है और क्या प्रतिनिधिक देश के विकास का स्तर रूस के समान है।

74. पाटनरोधी शुल्क भारत को किसी निर्यातक देश से निर्यातित वस्तु पर लगाया जाता है और यह आमतौर पर उसकी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच अंतर के बराबर होता है। चूँकि निर्यातक देश द्वारा भारत को एन मेल्ट का कोई निर्यात नहीं किया गया है और एलडीएएन प्रिल्स इसलिए उक्त वस्तुओं की निर्यात कीमत और सामान्य कीमत निर्धारित नहीं की जा सकती है। कानून में इस पूर्वाभास पर शुल्क की परिकल्पना एंव उसे लागू करने की व्यवस्था नहीं है। कि ऐसी किसी वस्तु का आयात होगा और ऐसा आयात घरेलू उद्योगों के लिए क्षतिकारी होगा।

मै. आइ. बी. पी. कं. लिमिटेड

75. चूँकि प्राथमिक रूप से शुल्क लगाने के लिए विचारित अधिकांश मापदंड परिकलित सामान्य लागत क्षतिरहित कीमत और याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत आकड़ों पर आधारित हैं, इसलिए हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से विस्फोटक उद्योग के लिए लागत प्रौद्योगिकी और सुरक्षा के बारे में संबंधित तथ्यों के सत्यापन द्वारा उक्त मापदण्डों का वास्तविक मूल्यांकन करने का अनुरोध करते हैं विस्फोटक निर्माता मोटे तौर का भावी विकास इस जाँच में प्राधिकारी द्वारा किए जाने वाले निर्णय पर निर्भर करता है।

76. परिकलित उत्पादन लागत के आधार पर रस के निर्यातकों के लिए 90 प्रतिशत का पाटन मार्जिन बनता है। इस पद्धति को रस को एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था मानते हुए अपनाया गया है। यह अनुरोध किया गया है कि रस को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानना न्याय संगत नहीं है विशेष रूप से यूएसडीओ जैसे प्राधिकरणों द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान किए जाने का।

मै. इंडियन एक्सप्लोसिट्स लिमिटेड, और मै. स्पेशल ब्लास्ट्स प्रा. लिमिटेड

77. रस को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया जाना चाहिए और प्रस्तुत की गई जानकारी के आधार पर मार्जिनों को तय किया जाना चाहिए। यदि एक प्रतिनिधिक देश का चयन किया जाना था तो इस संबंध में अपनी टिप्पणीयों देने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर दिया जाना आवश्यक था। इसके अलावा सामान्य मूल्य की गणना निर्यातकों की बड़े पैमाने पर किफायतों तथा कम कीमतों पर प्राकृतिक गैस की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।

निर्यातकों के विचार

मैत्र जे एस सी नेविनोमिस्की अजीत

78. अप्रैल 2003 के प्रारंभिक जाँच परिणामों में यह उल्लेख किया गया था कि प्राधिकारी पाटनरांधी नियमावली के अनुबंध के पैराग्राफ 8 के 34 पैरा 3 में यथा अपेक्षित निर्यातक द्वारा पर्याप्त सूचना/दस्तावेजित साक्ष्य की अनुपस्थिति में बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के अदावे को स्वीकार करने को बाध्य थे। निर्यातक ने यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त सूचना एवं साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किए हैं कि वह बाजार संबंधी स्थितियों में प्रचालन करते हैं। लेकिन यह उल्लेख नहीं किया गया है कि उपलब्ध कराई गई सूचना किस प्रकार से रस के एक बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश मानने के संबंध में सकारात्मक निर्णय करने के लिए अपर्याप्त है। मूल प्रश्नावली के अलावा हमने 17 अप्रैल 2003 को भारत की ओर से प्रदत्त पूरक प्रश्नावलियों के उत्तर तैयार किए थे। जून 2003 तक सभी प्रश्नों का समग्र रूप से और सविस्तार उत्तर दिया गया था। तथापि दिनांक 15 जुलाई 2003 के नोट में विदेश मंत्रालय ने रस निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत अपर्याप्त उत्तर की ओर ध्यान आकर्षित किया और कहा कि उत्तरों की जाँच की गई। संगत नियमों के अनुसार बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करने के प्रयोजनार्थ उत्तरों की जाँच की गई और उन्हें अधूरा पाया गया। प्रस्तुत की गई जानकारी पर्याप्त है और उसमें बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करने के दावे संबंधी अपेक्षाओं को पूरा किया गया है।

79. 90 प्रतिशत का पाटन मार्जिन पूर्णतया गलत है, क्योंकि यह निर्यात की मत और सामान्य मूल्य पर आधारित है, जो तथ्यों पर आधारित नहीं है। हम यह अनुरोध करते हैं कि सामान्य मूल्य का परिकलन करना युक्ति संगत नहीं है क्योंकि हमने उत्पादन लागत और बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के संबंध में काफी जानकारी उपलब्ध कराई थी।

अमोनियम नाइट्रोट

80. हम दिनांक 10 नवम्बर 2003 को अधिसूचना सं. 101/2003 की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहेगी जिसके द्वारा नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 4 में उपनियम (4) जोड़ा गया है। इस पैराग्राफ को निम्नानुसार पढ़ा जाता है।

उप पैराग्राफ (2) में उल्लिखित बातों के बावजूद प्राधिकारी ऐसे देश को बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार प्रदान कर सकते हैं जिसे संगत मापदंडों, जिसमें उप पैराग्राफ (3) में निर्दिष्ट मानदंड शामिल है, के हाल के विस्तृत मूल्यांकन के आधार पर किसी देश द्वारा, जो विश्व व्यापार संगठन का एक सदस्य हो, पाटनरौधी जॉच के प्रयोजनार्थ ऐसे मूल्यांकन को सार्वजनिक दस्तावेज में प्रकाशित करके बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार प्रदान किया गया है अथवा बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है।

81. पूर्वोक्त प्रावधान में यह व्यवस्था है कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी किसी देश को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान कर सकते हैं यदि पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर डब्लू टी ओ के किसी सदस्य द्वारा उसे बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार प्रदान किया गया हो, रूस को इस यू तथ यू एस ए दोनों के द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया गया है, अतः वर्तमान मामले में संशोधन की आवश्यकता है।

82. यह नियैदन किया गया है कि दिनांक 10 नवम्बर 2003 की अधिसूचना सं. 101/2003 सीमा शुल्क (एन टी) के द्वारा नियमावली में किए गए संशोधन लंबित जॉच पर भी लागू होते हैं। 2003 (155) ई एल टी 35 (टी) में रिपोर्ट किए गए एकसाइड इंडस्ट्रीज लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में माननीय न्यायाधिक करण ने इस मुद्दे पर विचार किया था कि क्या गैर बाजार अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित प्रावधानों में संशोधन करने वाली दिनांक 31.5.2001 की अधिसूचना उस जॉच पर लागू होती है जो 12.1.2001 में प्रारंभ हुई और 7.12.2001 को समाप्त हुई थी। माननीय न्यायाधिकरण द्वारा यह विचार किया गया था कि नियमावली के अनुसार जॉच नहीं की गई थी क्योंकि अधिसूचना के अंतर्गत कानूनी अपेक्षाओं पर विचार किए बिना जॉच की गई थी।

83. पिछले वर्ष रूसी आर्थिक तंत्र के विस्तृत विश्लेषण के बाद रूसी संघ को यूरोपिय संघ (07.11.2002 को) तथा यूएसए (06.06.2002) द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया

गया था। पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ रूसी कंपनियों को यूएस मामलों में 01.04.2002 से और ई यू जांच में 08.11.2002 से बाजार व्यवस्था में प्रचालनरत कंपनियां माना जाएगा। यह बाजार अर्थव्यवस्था सिद्धांतों के संबंध में रूस में हुई महत्वपूर्ण प्रगति की स्वीकृति प्रदान करता है।

84. प्रस्तुत की गई प्रश्नावली में हमने मापदंडों को पूरा करने वाली सूचना प्रस्तुत की है और दिया गया डॉक्युमेंटरी साक्ष्य यह सिद्ध करता है कि नेविनोमिस्की एंजोट कंपनी बाजार परिस्थितियों के अंतर्गत प्रचालन कर रही है। हमारी कंपनी बिना राज्य के स्वामित्व के निजी स्वामित्व वाली कंपनी है। अमेनियम नाइट्रेट की बिक्री कीमतों को मांग व पूर्ति के अनुरूप निर्धारित किया जाता है। उपभोक्ताओं के साथ कीमतों के संबंध में विचार विमर्श किया जाता है और बिक्री परस्पर रूप से स्वीकार्य कीमत जो अमेनियम नाइट्रेट के उचित मूल्य को दर्शाती है और उत्पादन लागत को पूरी तरह वहन करती है पर की जाती है।

85. चूंकि कंपनी सर्वोत्तम उपलब्ध कीमतों पर अपना कच्चा माल, मजदूर आदि खरीदने के लिए स्वतंत्र है, अतः जेएससी नेविनोमिस्की के निर्णय लेने में राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं है। मात्रा तथा कीमत जिस पर कंपनी अमेनियम नाइट्रेट बेचती है, के संबंध में भी राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं है। चूंकि कंपनी में राज्य का कोई स्वामित्व नहीं है इसलिए सभी मुद्रों पर कंपनी के निर्णय राज्य के हस्तक्षेप से मुक्त हैं।

86. हमारी कंपनी दिवालियापन और संपति कानूनों के अधीन आती है जिनके तहत फर्मों के प्रचालन हेतु कानूनी निश्चितता एवं स्थायित्व की गारंटी प्रदान की गई है। इस संबंध में हमने दिवालियापर संबंध संघीय कानून तथा रूस की सिविल सहिता का संदर्भ लिया था जिनमें फर्मों के प्रचालन हेतु कानूनी निश्चितता एवं स्थायित्व का प्रावधान है। उर्पुक्त के अलावा यह स्टॉक कंपनी संबंधी संघीय कानून के उद्धरण भी संलग्न किए गए थे जिनमें यह प्रावधान है कि कंपनी विधिक व्यक्ति होगी और उसका एकल संपति में स्वामित्व होगा।

87. निर्यातक ने इस मौजूदा लंबित जांच में 10.11.2003 की अधिसूचना संख्या 101/2003 -सीमाशुल्क के तहत नियमों में किए गए संशोधनों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। आगे यह उल्लेख किया जाता है कि 2003 (155) ईटीएल 35 (टी) में सूचित एक्साइड इंडस्ट्रीज लि.

बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में माननीय न्यायाधिकरण ने जांच की कार्रवाई के दौरान एनएमई के बारे में उस अधिसूचना को लागू करने पर विचार किया था जो पाटनरोधी जांच शुरू होने के बाद प्रकाशित की गई थी। निर्णय के उद्धरणों में अन्य बातों के साथ-साथ यह उल्लेख किया गया “इसके अलावा, जांच समाप्त होने तथा अंतिम जांच परिणाम जारी होने से कई माह पूर्व 31.5.2001 की अधिसूचना जारी की गई थी जिसमें चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों में से एक देश माना गया था। उक्त जांच इन अधिसूचनाओं के अंतर्गत अपेक्षाओं को पूरा किए बिना अब भी चल रही है। हम यह भी नोट करते हैं कि यह एक ऐसा मामला नहीं जिसमें अधिसूचनाओं की अपेक्षाओं को तथ्यतः पूरा किया गया था और केवल अंतिम परिणामों में ही उन पर ध्यान नहीं दिया गया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी के रिकॉर्डों का अवलोकन करने से संदेह की कोई गुंजाइश नहीं बचती है और प्राधिकारी गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाली इकाईयों पर लागू होने वाले नियमों के अनुसार मूल्य की जांच करने में विफल रहे हैं।”

88. दिनांक 15.7.1999 का अधिसूचना ने इस कठिनाई को कानूनी मान्यता प्रदान की और एक अलग आधार प्रस्तुत किया। दिनांक 31.5.2001 की अधिसूचना में गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों में हो रहे परिवर्तनों को मान्यता प्रदान की गई और गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों में बाजार द्वारा संचालित एककों यह सिद्ध करने के लिए अवसर एककों यह सिद्ध करने के लिए अवसर उपलब्ध कराया कि वे बाजार सिद्धांतों के अनुरूप प्रचालन कर रहे हैं। वर्तमान मामले में जांच 12.1.2001 को अर्थात् दिनांक 15.7.1999 की अधिसूचना के जारी होने के काफी बाद में शुरू हुई थी। दिनांक 7.12.2001 को अर्थात् दिनांक 31.5.2001 की अधिसूचना जारी होने के काफी बाद में जांच समाप्त हुई थी और अंतिम जांच परिणाम जारी किए गए थे। फिर भी, अधिसूचना के अंतर्गत कानूनी अपेक्षाओं पर विचार किए बिना जांच की गई थी।

89. इस संबंध में उन्होंने दिनांक 10.11.2003 की अधिसूचना संख्या 101/2003 की ओर ध्यान आकृष्ट किया है जिसके द्वारा नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 4 में उपनियम (4) जोड़ा गया है। उसमें यह उल्लेख है “उप पैराग्राफ (2) में उल्लिखित बातों के बावजूद प्राधिकारी ऐसे देश को बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार प्रदान कर सकते हैं जिसे संगत मानदंडों, जिसमें उप पैराग्राफ (3) में निर्दिष्ट मानदंड शामिल हैं के हाल के विस्तृत मूल्यांकन के आधार पर किसी देश द्वारा, जो विश्व व्यापार संगठन का एक सदस्य हो, पाटनरोधी जांच के प्रयोजनाथ ऐसे

मूल्यांकन को सार्वजनिक दस्तावेज में प्रकाशित करके बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश का व्यवहार प्रदान किया गया है अथवा बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है ।“

90. अतः निर्यातक ने अनुरोध किया है कि बाजार अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्रचालन के संबंध में जांच प्राधिकारी को जांच के लिए उपलब्ध कराई गई सूचना पर विचार करते हुए इस अधिसूचना के आधार पर रूस को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया जाए ।

मै. जेएससी नेविनोमिस्की एजोट, रूस के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था परिस्थितियों की जांच

91. याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि चूंकि पिछले तीन वर्षों से यूरोपिय कमीशन तथा यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा रूस को गैर बाजार अर्थव्यवस्था माना जा रहा है अतः रूस एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है । अतः इन देशों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण दिनांक 4.1.2002 की अधिसूचना द्वारा यथासंशोधित नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7-8 में उल्लिखित गैर बाजार अर्थव्यवस्थाओं संबंधी नियमों के अनुसार किया जाना है । तदनुसार, उन्हेने दावा किया है कि इन देशों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक व्ययों तथा लाभ सहित भारत में उत्पादन लागत के अनुमानों के आधार पर किया जा सकता है ।

92. पूर्वोक्त रूसी उत्पादक ने वर्तमान जांच के लिए बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दावा किया है । नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8(2) के उपबंध में अन्य बातों के साथ - साथ अनुबंध 1 के पैरा 8 के उप पैरा 63 में निर्यातक को विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर एनएमई की परिकल्पना का खंडन करने का अवसर प्रदान किया गया है । प्राधिकारी का यह विचार है कि जहाँ तक एनएमई संबंधित नियमों का संबंध है, राष्ट्रीय कानून अर्थात् नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 एवं 8 के अंतर्गत यथा उल्लिखित नियम इस जांच के लिए संगत है ।

मै. जेएससी नेविनोमिस्की एजोट, रूस के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था परिस्थितियों की जांच 7 एवं 8 के अंतर्गत यथाउल्लिखित नियम इस जांच के लिए संगत हैं।

93. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पारनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 में अन्य बातों के साथ-साथ यह प्रावधान है कि:

"गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से होने वाले आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा परिकलित मूल्य अथवा किसी ऐसे देश से भारत समेत अन्य देशों के किए गए निर्यात की कीमत के आधार पर किया जाएगा अथवा जहां यह संभव न हो वहां उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए विधिवत समायोजित, यदि आवश्यक हो, समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में भुगतान की गयी अथवा भुगतान योग्य कीमत समेत किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा।"

94. इसके अतिरिक्त, नियमावली (यथा संशोधित) के अनुबंध I के पैरा 8 में यह प्रावधान है कि:

(क) "गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश" शब्दों का अभिप्राय यह है कि कोई देश जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी इस रूप में निर्धारित करे कि वह देश उप-पैरा (3) में निर्दिष्ट मानदंड के अनुसार लागत के बाजार सिद्धांतों अथवा कीमत निर्धारण ढाँचे पर प्रचालन नहीं कर रहा है जिससे ऐसे देश में पाण्य वस्तुओं की बिकियां पण्य वस्तुओं के उचित मूल्य को प्रदर्शित न करती हों।

(ख) यह एक परिकल्पना होगी कि कोई देश जिसे जांच से पहले के तीन वर्ष के दौरान पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ निर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा डब्ल्यूटीओ के किसी सदस्य देश के सक्षम प्राधिकारी द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माना गया है अथवा समझा गया है एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। तथापि ऐसे देश की संबंधित फर्में निर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना तथा साक्ष्य उपलब्ध कराकर ऐसी परिकल्पना का खंडन कर सकते हैं जो यह साबित करे कि ऐसा देश निर्दिष्ट मानदंड के आधार पर एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

95. रूसी निर्यातक ने दावा किया है कि:

(क) कीमतों, कच्ची सामग्री, प्रौद्योगिकी लागत तथा श्रम, उत्पादन, बिक्रियों तथा निवेश सहित लागतों और निवेशों के संबंध में रूसी विनिर्माता द्वारा निर्णय आपूर्ति तथा मांग के प्रदर्शित करने वाले बाजार संकेतकों के उत्तर में लिए जाते हैं और निवेश की लागतें बाजार मूल्यों के दर्शाती हैं। यह प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों और प्रश्नावली के गापनीय उत्तर के साथ उत्तर प्रदाताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए गोपनीय आंकड़ों, जिनका सत्यापन मौके पर सत्यापन के दौरान किया गया था, से प्रदर्शित होता है। यह पाया गया है कि रूस में न तो इन निवेशों की लागतों अथवा कीमतों का राज्य द्वारा विनियमन होता है और न ही प्रशासित कीमतों की कोई व्यवस्था है।

(ख) उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति में कोई विरुद्ध प्रश्नावली के उत्तर और उसके साथ दी गई गोपनीय सूचना के विवरणों के अनुसार उत्तरप्रदाता पूरी तरह से निजी कंपनियां हैं और चूंकि इसके अतिरिक्त, उत्तर प्रदाताओं ने पूर्ववर्ती राज्य परिसम्पत्तियों को परिवर्तित नहीं किया है अथवा उसके कारण हुए हास में विरुद्ध प्रश्नावली के उत्तरप्रदाता नहीं किया है अथवा बार्टर व्यापार या ऋण माफी या ऋण/ इक्विटी विनियम में शामिल नहीं रहा है अथवा किसी घाटे का लाभ नहीं उठाया है।

(ग) रूसी विनिर्माता कमशः दिवालियापन और संपत्ति के संबंध में रूस के विनियमों के अधीन हैं।

(घ) भारत में विनियम दर जैसा कि उक्त गोपनीय प्रश्नावली के उत्तर के साथ प्रस्तुत किए गए गोपनीय आंकड़ों से प्रदर्शित होता है, केंद्रीय बैंक द्वारा किए गए निर्धारण के अनुसार बाजार दर पर आधारित होती है।

96. मै. नेविनोमिर की एजोट ने संगत सूचना प्रस्तुत करके इस परिकल्पना का खंडन करने के लिए अनुरोध दायर किया है जिसका सत्यापन मौके पर सत्यापन के दौरान कर लिया गया है।

(क) "कच्ची सामग्रियों समेत कीमतों, लागतों और निविष्टियों, प्रौद्योगिकी एवं श्रम लागत, निविष्टि बिक्रियां एवं निवेश के बारे में ऐसे देश की संबंधित फर्मों का निर्णय बाजारी संकेतों जो आपूर्ति एवं मांग प्रदर्शित करते हैं, के अनुरूप और इस बारे में पर्याप्त सरकारी छस्तक्षेप के बिना लिया जाता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत से बाजार मूल्य प्रर्याप्ततः प्रदर्शित होते हैं।"

97. कंपनी एक मुक्त संयुक्त स्टॉक कंपनी है। कंपनी द्वारा सामान्य लेखा सिद्धांतों के अनुरूप लेखों का रख-रखाव किया जात है और तुलन पत्र तथा लाभ एवं हानि लेखे के अनुरूप सूचना प्रदान करने वाली रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है। निर्णय लेने के बारे में कोई निनिर्दिष्ट राज्य हस्तक्षेप नहीं पाया गया है।

98.. कंपनी को बिक्री तथा लाभ बढ़ाने के उद्देश्य के साथ बाजार सिद्धांतों पर प्रचालन करता पाया गया है। अमोनियम नाइट्रेट की बिक्री कीमतों के संबंध में लिए गए निर्णय भी बाजार संकेतकों के अनुरूप पाए गए हैं। बिक्री कीमतें अमोनियम नाइट्रेट के उचित मूल्य की प्रदर्शित करती हैं और उनमें इस उत्पाद की विनिर्माण लागत पूरी तरह शामिल है। उत्पादों के लिए कीमतों की रेंज की उपस्थिति से यह संकेत मिलता है कि कीमत का निर्धारण पूरी तरह से बाजार परिस्थितियों के कारण होता है और न कि इस संबंध में राज्य हस्तक्षेप के कारण।

99. अमोनियम नाइट्रेट के विनिर्माण के लिए प्रमुख कच्ची सामग्री प्राकृतिक गैस, मैग्नेशियम काबोनेट, ग्राउंड ब्रुसाइट तथा लिलेमिनम हैं। प्राकृतिक गैस की खरीद एलएलसी स्टैक्पोल, क्षेत्रीय गैस कंपनी से की जाती है। संयंत्र में सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान संगत अवधि के लिए प्राकृतिक गैस खरीद बिल की प्रतियों का सत्यापन किया गया है और यह देखा गया है कि प्राकृतिक गैस का अधिग्रापण प्रबल बाजार परिस्थितियों में मांग-आपूर्ति स्थितियों के आधार पर किया गया है।

100. रूस के पास विश्व का सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस संसाधन है। प्राकृतिक गैस की उपलब्धता घरेलू मांग से अधिक है और फलतः कई देशों को प्राकृतिक गैस का निर्यात किया जाता है। वर्ष 2001 में रूस ने 6.7 ट्रिलियन क्यूबिक फीट प्राकृतिक गैस का निर्यात किया जिसने उसे विश्व का सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस निर्यातक देश बना दिया। प्राकृतिक गैस की बिक्री संयुक्त स्टॉक कंपनी गैजप्रौम द्वारा रूस की अन्य समूह/ संबद्ध कंपनियों के माध्यम से की जाती है। गैजप्रौम एक लाभप्रद कंपनी है और प्राकृतिक गैस की इसकी बिक्रियों से लाभ हुआ जिसका 1993 में निजीकरण कर दिया गया था। राज्य के पास 38.37% शेयर हैं, विदेशी शेयरधारकों के पास

सांविधिक पूँजी का 10.31% है और शेष नागरिकों को पास हैं। कंपनी के शेयरों का रूसी स्टॉक बाजार में मुक्त रूप से व्यापार होता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि गैस की कीमत का निर्धारण राज्य के हस्तक्षेप के बिना आपूर्ति एवं मांग को प्रदर्शित करने वाले बाजार संकेतकों के अनुसार होता है।

101. गैज़प्रौम का गठन संयुक्त स्टॉक कंपनियों संबंधी संघीय कानून के अंतर्गत हुआ था। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, अधिकांश शेयर राज्य के अलावा अन्य व्यक्तियों के पास हैं और निर्देशों के अंतर्गत कार्य नहीं करते हैं। निदेशक बोर्ड लाभ को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक गैस की कीमत का निर्धारण जैसे निर्णय लेता है। यह भी नोट किया गया है कि संयंत्र के सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान बाजार परिस्थितियों के आधार पर प्राकृतिक गैस की कीमत में परिवर्तन होता रहा है। प्राकृतिक गैस की कीमत से 472 रुबल प्रति हजार क्यूबिक मीटर से 592 रुबल प्रति हजार क्यूबिक मीटर के बीच में परिवर्तन होता रहा है। इसके अतिरिक्त, गैज़प्रौम भारी लाभ पर प्रचालन कर रहा है, इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राकृतिक गैस की कीमतों का निर्धारण बाजार संकेतकों के प्रत्युत्तर में किया गया है।

102. जहां तक अन्य कच्ची सामग्रियों का संबंध है, कंपनी उन्हें आपूर्तिकर्ताओं से कीमत तथा मात्रा संबंधी विचार-विमर्शों के बाद प्राप्त करती है। यूनिफाइड एनर्जी सिस्टम ऑफ रशिया, जो संयुक्त स्टॉक कंपनी है, के द्वारा विद्युत की आपूर्ति की जाती है। इस कंपनी के पास नियंत्रक कंपनी तथा कई अन्य सहायक और आग्रित कंपनियां हैं जो रूस में विद्युत शक्ति का उत्पादन, संचरण तथा वितरण करती हैं। इस कंपनी के शेयर धारकों में रूसी व्यक्ति, विधिक हस्तियां तथा विदेशी व्यक्ति शामिल हैं। अन्य उपभोक्ताओं की तुलना में औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए टैरिफ उच्चतर है जिससे यह संकेत मिलता है कि औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए विद्युत प्रभार में उत्पादन, संरचरण तथा वितरण लागत शामिल है और ये बाजार मूल्यों को प्रदर्शित करता है। विद्युत की कीमतें बाजार सिद्धांतों के आधार पर निर्धारित होती हैं।

103. कर्मचारियों को दो श्रेणियों अर्थात् अमोनियम नाइट्रेट के उत्पादन में भागीदारी करने वाले कार्मिक और दूसरे जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन में शामिल नहीं हैं, में संघबद्ध किया गया है। प्रत्येक कर्मचारी के साथ करार किया जाता है जिसमें काम के घटे, वेतन आदि जैसी रोजागार की

स्थितियां दर्शाई गई हैं। नियोक्ता के पास करार के अनुसार, जिसमें सामान्यतः 2 से 4 सप्ताह की सूचना अवधि की अपेक्षा की जाती है, रोजगार समाप्त करने का अधिकार है। रुसी संघ की श्रम संहिता के अनुबंध 77 में कर्मचारी को बर्खास्त करने अथवा रोजगार की समाप्ति के आधारों का प्रावधान हैं। अनुबंध 78 के अनुसार रोजगार के दोनों पक्षों की परस्पर सहमति के साथ भी समाप्त किया जा सकता है। इसे करार की वैद्यता के समाप्त होने पर अथवा कर्मचारी या नियोक्ता की पहल पर समाप्ति के कारण (अनुच्छेद 80, 81) भी समाप्त किया जा सकता है। नियोक्ता कंपनी के स्वामित्व के परिवर्तन के कारण अथवा श्रम करार में स्थितियों में परिवर्तन होने के कारण कर्मचारी द्वारा काम जारी रखने से, मना करने पर भी रोजगार समाप्त किया जा सकता है। अन्य परिस्थितियों में स्थानांतरण से मना करना अथवा श्रम करार के विनियमन का उल्लंघन, कर्मचारी पर अर्थदंड, अयोग्यता, मृत्यु आदि का दोषारोपण आदि शामिल हैं।

(ख) "ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति महत्वपूर्ण विकृतियों के अधीन है जो पूर्ण गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली खासकर पारिसम्पत्तियों के मूल्य हास, अन्य बट्टे खातों वस्तु विनियम व्यापार और ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए भुगतान के कारण आई हैं; "

104. प्राधिकारी ने राज्य अथवा किसी अन्य प्राधिकारी द्वारा किसी बट्टे खाते, वस्तु विनियम व्यापार या ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए भुगतान की प्राप्ति का कोई साक्ष्य नहीं पाया है। पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था तंत्र से कोई विकृतियों प्राप्त नहीं हुई हैं। स्टॉक तथा निगम संपत्ति के निजीकरण संबंधी संघीय कानून के अनुसार कंपनी के निजीकरण की प्रक्रिया 10 वर्ष पूर्व प्रारंभ हो गई थी। अधिनियम के अनुच्छेद 15 के अनुसार एक कमीशन गठित किया जाएगा जो लेखा, परामर्श, अनुमान लगाने आदि के क्षेत्र में विशेषज्ञों की राय के आधार पर निजीकरण स्कीम का सूचीकरण करेगा। विकेता द्वारा अनुच्छेद 17 में की गई परिकल्पना के अनुसार वर्तमान बाजार स्थिति को ध्यान में रखते हुए शुरूआती कीमत के बारे में निर्णय लिया जाएगा। यह भी प्रावधान है कि कीमत का निर्धारण भू-क्षेत्र जिस पर कंपनी अवस्थित है, ऐसी कंपनी की भू-संपत्ति की विशिष्टताएं और उत्तरदायित्वों की उपस्थिति, संघीय बजट के लिए ऐसी कंपनी के दायित्व, कंपनी के उत्पादों की रेंज, कर्मचारियों की संख्या आदि को ध्यान में रखते हुए कीमत निर्धारित की जाएगी। कानून के अनुसार यह सूचना को सभी केताओं को उपलब्ध कराई जाएगी। इस बारे में

कंपनी को राज्य संपत्ति के निजीकरण तथा रूसी संघ में निगम संपत्ति के निजीकरण के सिद्धांत संबंधी कानून से दिशा-निर्देश प्राप्त होते हैं।

(ग) "ऐसी फर्में दिवालिएपन और सम्पत्ति संबंधी ऐसे कानूनों के अधीन हैं जो फर्म के प्रचालन हेतु कानूनी निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी प्रदान करते हैं; और "

105. सभी फर्में तथा कंपनियां जनवरी 1988 के दिवालियापन संबंधी संघीय कानून के अंतर्गत रूसी दिवालियापन तथा संपत्ति कानूनों के अधीन हैं जो रूस में फर्मों के प्रचालन के लिए कानूनी निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी प्रदान करते हैं। इस अधिनियम के अनुच्छेद 2 के अंतर्गत दिवालियापन को निर्णयक न्यायालय द्वारा प्रदत्त मान्यता अथवा आर्थिक दायित्वों और/ या निर्धारित अवधि के भीतर अनिवार्य भुगतान करने के दायित्व के निष्पादन संबंधी ऋणप्रदाताओं के दावों को पूरा करने के लिए ऋणी द्वारा की गई घोषणा के अनुसार ऋणी की असमर्थता के रूप में परिभाषित किया गया है। उपरोक्त कानून के अनुच्छेद 3 के अंतर्गत यह अवधि 3 महिने की निर्धारित की गई है। ऋणप्रदाता निर्णयक न्यायालय में जाएगा जो ऋणी के दायित्वों, यदि कोई हों, और ऋण चुकाने की उसकी असमर्थता का निर्धारण करेगा। अनुच्छेद 24 के अंतर्गत किसी कानून सत्ता द्वारा कानून द्वारा विनिर्दिष्ट विधि में अपने दिवालिएपन और ऐच्छिक परिसमापन की घोषणा की जा सकती है। ऐसी घोषणा किए जाने पर निर्णयक न्यायालय के पास किसी ऋणी दिवालिया करार देने का और बैंकों तथा अन्य ऋणप्रदाता संगठनों को उचित सूचना भेजने का अधिकार है।

106. अनुच्छेद 137 के अंतर्गत ऋणप्रदाताओं के दावों को पूरा करने के लिए ऋणी इंटरप्राइज़ को बेचा जा सकता है। अनुच्छेद 179 आय के वितरण तथा अन्य नुद्दों से संबंधित है। इस प्रकार, प्राधिकारी नोट करते हैं कि रूस में दिवालिएपन पर विचार करने के लिए एक विस्तृत कानून है।

107. रूस की सिविल संहिता के अंतर्गत संपत्ति, कानूनी निश्चितता तथा विभिन्न प्रकार की कानूनी सत्ताओं को मान्यता की संकल्पना दी गई है। अनुच्छेद 66 में यह प्रावधन है कि कंपनियों

की प्राधिकृत पूँजी शेयरों में विभाजित होगी। किसी कार्यकलाप की प्रक्रिया में कंपनी द्वारा प्राप्त की गई यह संपत्ति स्वामित्व के अधिकारों से उसकी होगी।

108. बाजार अर्थव्यवस्था के प्रचालन के लिए निजी संपत्ति को स्वामित्व संबंधी अधिकार आधारभूत है और प्रायः अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र के शामिल होने की व्याप्ति तथा सीमा से उस सीमा का संकेत मिलता है जहां तक अर्थव्यवस्था बाजार से प्रेरित है। राज्य तथा निगम इंटरप्राइज़ेज के निजीकरण संबंधी 1991 के कानून के कार्यान्वयन के साथ 1992 में रूस में निजीकरण का प्रथम औपचारिक चरण प्रारंभ हुआ जिससे लघु फर्मों तथा व्यापार की बिक्री और मध्यम आकार के इंटरप्राइज़ेज के सामूहिक निजीकरण के लिए कानूनी और संगठनात्मक आधार को स्थापित किया। वर्ष 2001 में सरकार ने सिविल संहिता के पाठ 17 की अंगीकृत किया और एक नई भूमि संबंधी संहिता पारित जिसमें पहली बार भूमि निजीकरण तथा स्थानांतरणों संबंधी स्पष्ट और सुपरिभाषित नियम निर्धारित किए गए हैं।

109. विकेंद्रीकृत आर्थिक निर्णय बाजार अर्थव्यवस्थाओं का हॉलमार्क हैं जबकि निजी लाभ के उद्देश्य से व्यक्तियों और फर्मों की स्वतंत्र निवेश, इनपुटसेसिंग, उत्पादन तथा कीमत निर्धारण संबंधी कार्यवाहियों से सामूहिक तौर पर यह सुनिश्चित होता है कि आर्थिक संसाधनों को उनके सर्वोत्तम (सर्वाधिक कुशल) उपयोग के लिए आवंटित किया जाता है। ऐसी अर्थव्यवस्थाओं में कीमतों की प्रकृति मांग परिस्थितियों और उत्पादन में प्रयुक्त संसाधनों के सापेक्ष अभाव को प्रदर्शित करने की होती है।

110. रूस में विदेशी निवेश का विनियमन “रूसी परिसंघ में विदेशी निवेश” संबंधी कानून द्वारा होता है। अनुच्छेद 11 के अनुसार विदेशी निवेशकों के पास रूसी परिसंघ के विधान द्वारा निर्धारित सभी करों और शुल्कों का भुगतान करने के बाद आय, लाभ और कानूनी रूप से प्राप्त अन्य धन को रूसी परिसंघ के क्षेत्र से बाहर अंतरित करने का अधिकार होता है। इसके अलावा किसी विदेशी निवेशक के पास वर्तमान संघीय कानून के अनुच्छेद 4 के खंड 2 के प्रावधान के अनुसार पुनर्निवेश हेतु रूसी परिसंघ के क्षेत्र के भीतर आय तथा लाभ का मुक्त उपयोग करने अथवा आर एफ के विधान के अनुकूल अन्य लक्ष्यों में उन्हें लगाने और पूर्ववर्ती निवेशों तथा

निम्नलिखित के परिणामस्वरूप विदेशी मुद्रा में प्राप्त आय, लाभ और कानूनी दृष्टि से प्राप्त अन्य धन को रूसी परिसंघ की सीमा से बाहर मुक्त अंतरण करने का अधिकार होता है:

लाभ, लाभांश, ब्याज के रूप में प्राप्त निवेशों से राजस्व अथवा राजस्व का कोई अन्य स्वरूप,

करारों तथा अन्य प्रकार के सौदों के अनुसार विदेशी निवेशों वाले वाणिज्यिक संगठन अथवा रूसी परिसंघ के क्षेत्र के भीतर सहायक कंपनी वाले विदेशी विधिक व्यक्ति के दायित्वों की पूर्ति हेतु धन,

विदेशी निवेशों वाले वाणिज्यिक संगठन अथवा किसी विदेशी विधिक व्यक्ति की किसी सहायक कंपनी के परिसमाप्न के बाद अथवा निवेशित संपत्ति, ब्याज और मासिक कार्य कलाप के परिणामस्वरूप एकल अधिकारों के हस्तांतरण के द्वारा विदेशी निवेशक को प्राप्त धन।

111. विश्व बांजारों में किसी देश का समेकन उसकी मुद्रा के परिवर्तन पर अत्यधिक निर्भर होता है। व्यापार और निवेश दोनों प्रयोजनों के लिए मुद्रा परिवर्तनियता का स्तर जितना अधिक होता है उक्त देश में विश्व बाजार की कीमतों से घरेलू बाजारी कीमतों को जोड़ने वाली आपूर्ति और मांग की शक्तियां उतनी ही अधिक होती है। यह संबंध जितना अधिक होता है, बाजार आधारित घरेलू कीमतें भी उतनी ही अधिक होती हैं। रूसी सरकार ने किसी परिवर्तनीय मुद्रा के लिए पूर्वपिक्षाएं निर्धारित करने की कार्यवाई शीघ्र की थी जो बाजार आधारित विनिमय दर का आधार बनेगा। रूसी उद्यमों के लिए विदेशी आर्थिक कार्य कलाप को उदार बनाते हुए नवम्बर 1991 की राष्ट्रपति की डिक्षित में विदेशी मुद्रा में हुई नीलामियों, मुद्रा परिवर्तनों तथा अंतर बैंक बाजार ने आपूर्ति एवं मांग पर निर्धारित बाजार आधारित विनिमय दर तय की गई थी। रूस की बाजार आधारित विनिमय दर निर्धारित करने वाली आपूर्ति एवं मांग को तय करने के लिए 1992 के यथासंशोधित मुद्रा विनिमयन एवं मुद्रा नियंत्रण कानून में निवासियों (व्यष्टियों एवं कंपनियों) को विदेशी मुद्रा रखने, उसके स्वमित्व और बिक्की करने, प्राधिकृत बैंकों में विदेशी मुद्रा लेखे रखने तथा चालू खाते से मुक्त रूप से सौदा करने के अधिकार की गारंटी दी गई है। 1990 के यथासंशोधित सेन्ट्रल

बैंक कानून में राज्य और सेन्ट्रल बैंक ऑफ रस (सी बी आर के कार्यों और दायित्वों को अलग कर दिया गया है। इसमें सीबीआर को रुबल का स्थायित्व बनाए रखने, बैंकिंग एवं निपटान प्रणालियों के सुदृढ़ीकरण और उन्हें तैयार करने, धनापूर्ति की व्यवस्था करने, बैंकों के अंतिम सहारे के रूप में ऋणदाता की सेवा प्रदान करने तथा मुद्रा एवं लेखा विनियमन निर्धारित करने की प्राश्निक जिम्मेवारी प्रदान की गई है। रुबल 1996 से, जब रस ने आई एम एफ के अनुच्छेद आ॥ के दायित्वों को लेने पर सहमति व्यक्त की थी, चालू खाते के प्रयोजनार्थ पूर्णतः परिवर्तनीय रहा है। घरेलू और विदेशी कंपनियों तथा व्यष्टि विदेशी मुद्रा को अर्जित करने के लिए स्वतंत्र हैं तथा विदेशी कंपनियों पूंजी को स्वदेश भेजने और लाभों का हस्तांतरण करने के लिए स्वतंत्र है। रुबल पूंजी खाता प्रयोजनों के लिए भी परिवर्तनीय है। रुबल व्यापार एवं निवेश के प्रयोजनार्थ विदेशी मुद्राओं में परिवर्तनीय है जिससे मुद्रा बाजारों में आपूर्ति और मांग में वृद्धि होती है जिनसे विनिमय दर निर्धारित होती है।

112. बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करने उनके घरेलू बाजार में हुई घरेलू बिक्रियों के आधार पर अनुबंध-1 के पैरा 1-6 के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के बारे में नियतिक के अनुरोध की प्राधिकारी ने जांच की थी। निर्यातक ने पाटनरोधी नियमावाली के अनुबंध-1 के पैरा 8/3 के तहत यथापेक्षित सूचना प्रस्तुत की थी जिसका सत्यापन उसके परिसारों का मौके पर सत्यापन करने के दौरान किया गया है। कंपनी प्राधिकारी की संतुष्टि के अनुरूप यह प्रदर्शित करने में समर्थ रही थी कि उत्पादन, विपणन और कीमत निर्धारण के बारे में कंपनी का प्रबंधन और नियंत्रण प्रबंधन के हाथों में है जो राज्य के हस्तक्षेप से पूर्णतः मुक्त है। तथापि प्राधिकारी ने एक्साइड इंडस्ट्रीज लि० बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में माननीय न्यायाधिकरण को ध्यान में रखते हुए रसी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों और 10/11/2003 की अधिसूचना संख्या 101/2003 प्रासंगिकता की जांच की। उपर्युक्त जांच को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने इस निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करने तथा पाटनरोधी नियमावाली के अनुबंध 1 के पैरा 1 से लेकर 6 के तहत सामान्यमूल्य का निर्धारण करने पर विचार किया।

113. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 9क (1) (ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ यह होगा कि:

- (i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्धारित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्की नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-
- क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु की उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक सूचक मूल्य; या
- ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित प्रशासनिक, बिक्की और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत;

बशर्ते कि ऐसे मामले में जहां वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल यानान्तरित किया गया हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक कीमत नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

खस

मै0 जे एस सी नेविनोमिस्की जोट, खस सामान्य मूल्य

114. निर्यातक ने अपने घरेलू बाजार में हुई घरेलू बिक्की के अनुसार बाजार आर्थिक व्यवहार तथा सामान्य मूल्य के निर्धारण का दावा किया था। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्रे के संबंध में दयर की गई सूचना के मद्देनजर, निर्यातक द्वारा दी गई सूचना पर विचार किया है। प्राधिकारी ने मौके पर हुई जांच के दौरान बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में दायर किए गए दस्तावेजों/सूचना का मिलान एवं सत्यापन किया है। विस्तृत जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 1 से 6 के अंतर्गत बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान करने तथा सामान्य मूल्य का निर्धारण करने पर विचार किया है।

115. सैदेवार घरेलू बिक्की का विवरण निर्यातक प्रश्नावली के परिशिष्ट-1 में दिया गया है जिसका सत्यापन रिकॉर्ड द्वारा कर लिया गया था। उन्होंने उत्पादन की लागत भी उपलब्ध कराई है, जिसका मिलान उनके बही खातों एवं लाभ एवं हानि खातों से कर लिया गया था। यह जांचने के लिए कि क्या घरेलू बिक्की, सामान्य व्यापार की प्रक्रिया में है, 80/20 जांच का संचालन किया गया था और यह पाया गया कि घरेलू बाजार में घरेलू बिक्की सामान्य व्यापार की प्रक्रिया में है। कच्ची सामग्री, उपयोगिताओं तथा अन्य वित्तीय लागतों का भी सत्यापन किया गया एवं उनके खातों के साथ मिलान किया गया था। कारखाना-द्वार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए किए गए समायोजन के दावों पर विचार करने के बाद घरेलू बाजार की घरेलू बिक्की कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया था। इस प्रभारों तथा विधि व्ययों के आधार पर दावा किए गए समायोजनों का सत्यापन उनके रिकॉर्ड द्वारा किया गया था तथा सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए उस पर विचार किया गया था।

116. तथापि, अंतिम निर्धारण के उद्देश्य से मैं जे एस सी नेविन्नोमिस्की अजोट, रूस के लिए सामान्य मूल्य *** डालर /मीटन माना गया है।

निर्यात कीमत

117. प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा परिशिष्ट 2 में निर्यात कीमत के संबंध में उपलब्ध कराई गई सूचना पर विचार किया गया है। निर्यातक ने बीमा, भंडारण, अंतर्रेशीय भाड़ा, हैडलिंग, फारवर्डिंग, सुरक्षा, प्रमाणन, निर्यातों पर सीमाशुल्क हेतु समायोजनों का दावा किया है, जिसके लिए उनके

रिकॉर्डों द्वारा सत्यापन एवं मिलान के पश्चात अनुमति दे दी गई है। प्राधिकारी ने मै0 जे एस सी नेविनोमिस्की अजोट, रूस की निवल निर्यात कीमत की गणना के उद्देश्य से इन समायोजनों पर विचार किया गया है। अंतिम आजं के उद्देश्य से कारखाना-द्वार निर्यात कीमत *** अम. डा. /मी.टन मानी गई है।

रूस के अन्य निर्यातक/उत्पादक

सामान्य मूल्य

118. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 जे एस सी नेविनोमिस्की अजोट, रूस के अतिरिक्त किसी भी निर्यातक ने पूरी सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। इस असहयोग के मद्देनजर, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (8) के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर अन्य सभी रूसी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

119. अंतिम निर्धारण के उद्देश्य से रूस के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य *** डा./मी.टन माना है।

निर्यात कीमत

120. निर्यात कीमत का निर्धारण डी जी सी आई एंड एस द्वारा उपलब्ध कराए गए आयाता आंकड़ों के आधार पर किया गया है। कारखाना द्वार निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए एक ओ बी के पूर्व सहयोगी निर्यातक द्वारा दावा किए गए समायोजनों पर विचार किया गया है परंतु एक ओ बी के पश्चात पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (8) के अनुसार सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर समायोजनों का विचार किया गया है।

121. अंतिम निर्धारण के उद्देश्य से कारखाना द्वार निर्यात कीमत *** डा./मी.टन मानी गई है।

ईरान

मै0 ईरान पेट्रोकेमिकल्स कमार्शियल कंपनी, तेहरान

सामान्य मूल्य

122. प्राधिकारी ने धारा 9 क (1) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी थी। मैं 0 आई पी सी सी ने उत्पादन की लागत, लाभ एवं हानि खातों तथा समायोजनों के दावों संबंधी उनके दस्तावेजों में पाई जाने वाली त्रुटियों का सुधार किया है। जांच के दौरान उन्होंने सहयोग किया है तथा निर्यातक प्रश्नावली कमे अनुसार सभी आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध कराए हैं। महानिदेशालय के अधिकारियों ने मौके पर सत्यापन किया तथा उत्पादक के मूल रिकांडों के साथ उपलब्ध कराई गई सूचना को मिलान किया। सौदेवार बिक्की के ब्यौरे परिशिष्ट 1 में उपलब्ध कराए गए थे तथा सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान यह पाया गया कि घरेलू बिक्की कीमत, उत्पादन लागत से काफी कम थी। चूंकि, अधिकांश घरेलू बिक्की सौदे, घटे के सौदे थे इसलिए प्राधिकारी ने जांच की अवधि में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए संबंध उत्पाद की घरेलू बिक्की कीमत पर विचार नहीं किया गया, क्योंकि वे व्यापर की सामान्य प्रक्रिया में नहीं थे। उत्पादन लागत का निर्धारण करने के लिए, कच्ची सामग्री, उपयोगिताओं तथा अन्य व्ययों का मिलान उनके रिकॉर्डों द्वारा किया गया था। चूंकि घरेलू बिक्की व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में नहीं थी इसलिए प्राधिकारी ने मैं 0 आई पी सी सी द्वारा निर्यातक प्रश्नावली में उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया था।

123. इसलिए अंतिम निर्धारण के उद्देश्य से मैं 0 ईरान पैट्रोकेमिकल्स कमर्शियल कं0लि0 के लिए सामान्य मूल्य * * * डा./मी.टन माना गया है।

निर्यात कीमत

124. प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा परिशिष्ट 2 में निर्यात कीमत के संबंध में उपलब्ध कराई गई सूचना पर विचार किया है। प्राधिकारी ने बीमा, हैंडलिंग, भंडारण, अंतर्रेशीय भाड़ों के संबंध में समायोजनों पर विचार हुआ है। तथापि निर्यातक ने कमीशन तथा समुद्री भाड़ा के संबंध में समायोजन नहीं दर्शाया है, जिन्हें ईरान के एक आयातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के आधार पर लिया गया है! प्राधिकारी ने मैं 0 आई पी सी सी तेहरान के लिए अंतिम निर्धारण हेतु

ईरान से भारत तक कारखाना द्वार स्तर पर निवल निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए इन समायोजनों पर विचार किया है।

ईरान के अन्य निर्यातकों/उत्पादक

सामान्य मूल्य

125. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 आई पी सी सी ईरान के अतिरिक्त ईरान के किसी भी निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है। चूंकि ईरान के निर्यातकों/उत्पादकों में से केवल एक ही निर्यातक ने उत्तर दिया है इसलिए अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए भी उत्तर देने वाले निर्यातक के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य पर ही विचार किया गया है।

126. इसलिए अंतिम निर्धारण के उद्देश्य से ईरान के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य * * * डा./मी.टन माना गया है।

निर्यात कीमत

127. समस्त निर्यात मै0 आई पी सी सी द्वारा किए गए थे जो डी जी सी आई एंड ए के आयात सांख्यिकीय आंकड़ों के साथ परस्पर संबद्ध थे। चूंकि उत्तर देने वाले निर्यातक के अतिरिक्त कोई अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए भी उत्तर देने वाले निर्यातक के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य पर ही विचार किया गया है।

128. अंतिम निर्धारण के उद्देश्य से कारखाना द्वार निर्यात कीमत * * * डा./मी.टन मानी गई है।

पाटन के संबंध में

सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत की तुलना

129. तुलना से संबंधित नियमों में निम्नानुसार व्यवस्था है:

(i) डंपिंग का मार्जिन निकालते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के इसी स्तर पर सामान्यतः कारखाना द्वारस्तर पर की जाएगी और यथासम्भव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। जो अंतर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दोष के आधार पर समुचित छूट दी जाएगी, अंतर में शामिल हैं बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं तथा अन्य अंतर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं।

(ii) सम्बद्ध देश के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन का मूल्यांकन करने के लिए जांच की अवधि में प्राधिकारी ने भारित औसत कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के साथ भारित औसत सामान्य मूल्य की तुलना की है।

निर्यातकों/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार है:-

निर्यातक / उत्पादक	सामान्य मूल्य (एन वी) डालर/मी.टन	निर्यात कीमत(इ.पी.) डालर/मी.टन	निर्यात कीमत के % के रूप में पाटन मार्जिन
(1) रूस मै0 जे एस सी निविल्लोमिस्की अजोत	****	****	0.03%
अन्य सभी निर्यातक/उत्पादक	****	****	65.27%
(2) ईरान मै0 आई पी सी सी, तेहरान	****	****	12.90%
अन्य सभी निर्यातक/उत्पादक	****	****	12.90%

5. क्षति तथा कारणात्मक संबंध:

घूल उद्योग के विचार

130. याचिकाकर्ताओं ने इस संबंध में विस्तृत निवेदन प्रस्तुत किया है, जो पहले ही प्राधिकारी के रिकॉर्ड में मौजूद है। वास्तव में एक तरह से कुछ हितबद्ध पार्टियों ने माना है कि जांच

अवधि के बाद ही सही, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में काफी गिरावट आई है। याचिकाकर्ताओं ने निवेदन किया है कि बिक्री कीमतों में इस गिरावट का एकमात्र कारण आशातित सामग्री के कारण घरेलू उद्योग को होने वाली कीमत कटौती है। किसी हितबद्ध पार्टी ने आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना ए एन मेल्ट की बिक्री कीमत के साथ की है। क्या इस तर्क से यह इंगित नहीं होता कि ए एन मेल्ट तथा आयातित उत्पाद समान उत्पाद है। तथापि इस हितबद्ध पार्टी ने जिस तथ्य को नजरअंदाज किया है, वह यह है कि एक कीमत छूट का निर्धारण किया जाना है जिसके द्वारा ठोस तत्वों की तुलना में ए एन मेल्ट की बिक्री में आने वाले उच्च परिवहन लागत को विचार में लिया जाएगा। दोनों संबद्ध परिवहन लागतों को समायोहित करने के बाद यह ज्ञात हो जाएगा कि आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम था।

131. उपभोक्ताओं ने इस कथन द्वारा कि यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को लगाने का निर्णय लिया जाता है तो उनकी व्यवहार्यता को गंभीर खतरा उत्पन्न हो जाएगा, मामले को अनावश्यक तूल देने की कोशिश की है। इस तथ्य के बावजूद कि यह अनुमान किसी साक्ष्य द्वारा समर्पित नहीं है, रिकार्ड के अनुसार (तथा हितबद्ध पार्टियों की स्वीकृति द्वारा) विचाराधीन उत्पाद की कीमतों में आयात पूर्व स्तर से अधिक वृद्धि नहीं हुई है। तब ये कंपनियां पूर्व में किस तरह चल रही थीं। और यदि विचाराधीन उत्पाद सभी उपभोक्ताओं के लिए सस्ती पड़ते हैं, तो उस स्थिति में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता किसी तरह प्रभावित होती है।

132. याचिकाकर्ता दृढ़तापूर्वक निवेदन करते हैं कि प्रारंभिक जांच में निर्धारित संदर्भित कीमत, समग्र रूप से कम है तथा भारतीय उत्पादकों के वैध हितों को सुरक्षा प्रदान करने हेतु पर्याप्त नहीं है। तथापि याचिकाकर्ताओं ने निवेदन किया है कि कृपया बेंच मार्क को उचित रूप से बढ़ाया जाए। मूलभूत मुद्रा इस बात के निर्धारण का प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से अधिक होना इन दोनों घटकों की उचित तुलना पर आधारित नहीं है। जहां निवल बिक्री प्राप्ति बिक्री और वितरण व्यय को छोड़कर डिब्बाबंद/बैग में रखी गई सामग्री के संबंध में है वही क्षति रहित कीमत बिक्री एवं वितरण व्यय को छोड़कर पैक न की गई/बैग में न रखी गयी सामग्री के संबंध में है। उचित तुलना के लिए इसी पद्धति को अपनाया जा सकता है और उचित तुलना के प्रयोजनार्थ या तो प्रिलिंग लगात को ए एन मेल्ट की क्षति रहित कीमत में जोड़ा जा सकता है या फिर निवल बिक्री प्राप्ति को दीपक फर्टिलाईजर्स को छोड़कर अन्य दोनों यूनिटों के लिए समायोजित करना अपेक्षित है।

आयातकों/उपयोक्ताओं के विचार

मैं0 आई बी पी कं0 लि0

133. चूंकि याचिकाकर्ता इकाईयां पर्याप्त लाभ अर्जित कर रही है इसलिए क्षति का पूर्णतः अभाव है। प्रारंभिक जांच परिणाम के अनुसार भी याचिकाकर्ताओं की बिक्री लाभों तथा क्षमता उपयोग में जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है।

आयातों के पहुंच मूल्य

क्षति रहित कीमत की तुलना

134. आयातों के पहुंच मूल्य के साथ क्षति रहित कीमत की तुलना करने के द्वारा क्षति की मौजूदगी का पता चलता है। यह निवेदन किया गया है कि निर्धारित क्षतिरहित कीमत को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया, चूंकि याचिकाकर्ता ऐसी क्षतिरहित कीमत के साथ कई वर्षों से हानि उठाते हुए प्रचालनरत रहे होंगे। यह इसलिए असंभाव्य मालूम होता है कि याचिकाकर्ता के लाभों में समय के साथ-साथ वृद्धि प्रतीत होती है। डी एफ पी सी एल जैसी इकाईयां अपनी संस्थापित क्षमता से बढ़कर कार्य कर रही है, जिसक कारण उर्वरकों के बजाय ए एन के विनिर्माता के लिए संसाधनों का अपवर्तन हुआ है। यदि ए एन का विनिर्माण लाभप्रद नहीं होता तो इस प्रकार का अपवर्तन नहीं हुआ होता। इसके अलावा डी ए पी सी एल मेल्ट तथा एल डी ए एन पी के लिए अपनी उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने की प्रक्रिया में है। अमोनियम नाइट्रोजन से निश्चित रूप से यह साबित होता है कि जॉच अवधि के पहले, दौरान और बाद में याचिकाकर्ता लाभ में प्रचालन कर रहे हैं। उनके पास आगे निवेश के लिए संसाधन जुटाने की क्षमता भी है।

135. आयातों और अमोनियम नाइट्रोजन के विनिर्माताओं को हुई क्षति, यदि कोई हो, में कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। आयातों का पहुंच मूल्य मेल्ट की कीमत से आयातों के पहले भी अधिक है। इसलिए आयातों से मेल्ट की बिक्री कीमत कम नहीं हो सकती थी जैसा कि दावा किया गया है। इसके अलावा मेल्ट की कीमतें आयातों के पहले और बाद दोनों में लगभग स्थिर रही हैं। एच डी ए एन पी के आयातों से एल डी ए एन पी की कीमत पर भी प्रभाव नहीं पड़ा है क्योंकि दोनों उत्पादों का प्रयोग अलग-अलग अनुप्रयोगों के लिए होता है। इसलिए आयात याचिकाकर्ताओं को हुई क्षति यदि कोई हो, का कारण नहीं है।

मैं ० भारत एक्सप्लोसिव लिमिटेड

136. याचिकाकर्ताओं की मात्रा और बाजार हिस्सा जांच अवधि के दौर स्वीकार्य रूप से बढ़े हैं। लाभप्रदता में भी पिछली अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है। उत्पादकता और क्षमता उपयोग लगभग 2 प्रतिशत से बढ़े हैं जबकि बिक्री मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसलिए प्रारंभिक जांच परिणामों से यह प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता पूर्व की अवधि मी तुलना में जांच अवधि के दौर कहीं अधिक अच्छी स्थिति में थे।

137. प्रारंभिक जांच परिणामों के अनुसार उत्पादन लागत जांच अवधि के दौरान कम हो गई है। ऐसी कमी का लाभ यदि ग्राहक को दे जिया जाए तो इसके परिणामस्वरूप कीमतें कम हो गई होती। इसलिए कीमत में वृद्धि की कोई आवश्यकता नहीं थी। आयातों से पहले याचिकाकर्ता लाभ में प्रचालन कर रहे थे और यदि उन कीमतों को क्षतिरहित कीमत मान लिया जाए तो यह देखा जाएगा कि कोई भी क्षति या कीमत कटौती नहीं हुई है। जैसा कि प्रारंभिक जांच परिणामों में पाया गया है। ऐसा लगता है कि याचिकाकर्ता की वित्तीय स्थिति में जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है।

138. याचिकाकर्ता जांच अवधि तक अमोनियम मेल्ट की अपनी बिक्री कीमतों में लगातार वृद्धि कर रहे थे यद्यपि उनकी उत्पादन लागत कम हो रही थी। जांच अवधि के दौरान आयातों का पहुँच मूल्य मेल्ट की बिक्री कीमत से अधिक था और आयातों का मेल्ट के विनिर्माताओं पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा था। डी एफ पी सी एल के अलावा सभी याचिकाकर्ता आयातों से किसी भी तरीके से प्रभावित नहीं हुए हैं क्योंकि उनकी बिक्री मात्राएं बढ़ हैं और कीमतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। पिल्स का एकमात्र विनिर्माता अर्थात् डी एफ पी सी एल को भी कोई क्षति नहीं हो रही है जैसा कि इसकी वार्षिक रिपोर्टों से स्पष्ट है।

139. एक जांच परिणाम यह है कि आयातों से घरेलू बिक्री कीमतें मन्द हुईं। यह निवेदन किया गया है कि क्षतिरहित कीमत की गणना उच्च स्तर पर की गई प्रतीत होती है। यदि ऐसी उत्पादन लागत (एन आई पी) को सही मान लिया जाए तो यह लगता है कि याचिकाकर्ता साथ-साथ घाटा उठा रहे हैं। यदि याचिकाकर्ताओं की बिक्री कीमत आयातों के पहले भी ऐसी थी कि वे घाटा

उठा रहे थे, तो ऐसे घाटे के लिए आयातों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है और ऐसा अवश्य ही आयातों के अलावा अन्य कारकों के परिणामस्वरूप हुआ है।

140. अमोनियम नाइट्रेट के विनिर्माता मूल रूप से उर्वरक इकाइयां हैं और अमोनियम नाइट्रेट का विनिर्माण उनकी कुल बिक्रियों का केवल लगभग 2-5 प्रतिशत है। शुल्क की अगाही से अमोनियम नाइट्रेट का विनिर्माण अधिक लाभप्रद होगा जिसके कारण क्षमताओं और प्राकृतिक गैस का अमोनियम नाइट्रेट जैसे गैर प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में विपणन होगा। एक तथ्य यह भी है कि भारत में अमोनियम नाइट्रेट के विनिर्माण पर प्राकृतिक गैस की सीमित उपलब्धता के कारण प्रतिबंध है। इसलिए शुल्क की अगाही से आयात कम नहीं हो सकते हैं क्योंकि अमोनियम नाइट्रेट की मांग और आपूर्ति के बीच अन्तर समय के साथ और बढ़ेगा। माननीय प्राधिकारी कंपनी और विस्फोटक पदार्थों का विनिर्माण करने वाली लघु इकाइयों पर इस उगाही के प्रभाव के संबंध में विचार करनें में कुल मिलाकर असफल रहे हैं।

मै0 इंडियन एक्सप्लोसिब्ज लि0 और मै0 स्पेशल ब्लास्टज प्रा0 लि0.

141. चूंकि इन कंपनियों के बाजार हिस्सों में वृद्धि हुई है, इसलिए बिक्रियों में कोई वास्तविक और संभावित कमी नहीं आयी है परन्तु वास्तव में वृद्धि हुई है। यद्यपि आयात समग्र रूप से बढ़ है, फिर भी आयातों का बाजार हिस्सा नगण्य है और इसका याचिकाकर्ताओं पर कोई क्षतिकारी प्रभाव नहीं पड़ता है। आयातों से घरेलू बिक्री कीमत में कटौती नहीं हो रही है क्योंकि एच डी ए एन पिल्स का पहुँच मूल्य मेल्ट की बिक्री कीमत से अधिक है। एल डी ए एन एक ऐसा उत्पाद है जिसकी उच्च उत्पादन लागत है इसलिए, इसकी कीमत क्षति मार्जिन निकालने के लिए आधार नहीं हो सकती है।

याचिकाकर्ताओं द्वारा क्षति का दावा पूर्णतया गलत है क्योंकि :

- (i) याचिकाकर्ताओं ने जांच अवधि के दौरान और जांच अवधि के पश्चात अमोनियम नाइट्रेट की अपनी बिक्री और क्षमता उपयोग में बढ़ोत्तरी की है।
- (ii) दीपक फर्टिलाइजर्स 2002-03 के दौरान विस्फोटक विनिर्माता उद्योग द्वारा अपेक्षित मात्राओं की पूर्णरूपेण आपूर्ति नहीं कर सका जिसके कारण विस्फोटक सामग्री का

विनिर्माण करने वाली इकाइयों, जिनमें पिल्स की जरूरत होती है, की आंशिक कामबंदी हुई।

- (iii) दीपक गुप्त ने राउरकेला इस्पात संयंत्र की उर्वरक इकाई का अधिग्रहण करने अमोनियम नाइट्रेट की विनिर्माण क्षमता में संवृद्धि की है और अमोनियम नाइट्रेट पिल्स का विनिर्माण करने के लिए अपनी मौजूदा क्षमता में थी वृद्धि की है।
- (iv) मालसूचियां जांच अवधि के दौर नगण्य रही है।
- (v) उर्वरक का विनिर्माण करने वाली अधिकांश इकाइयों के रसायन प्रभाग (जिनमें अमोनियम नाइट्रेट शामिल है।) 2002-2003 की वार्षिक रिपोर्ट में बढ़े हुए लाभ और मार्जिनों को प्रदर्शित कर रहे हैं।

142. चूंकि प्रारंभिक शुल्कों के लिए विचार किए गए अधिकांश मापदंड परिकलित सामान्य लागत, क्षतिरहित कीमत और याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों पर आधारित हैं इसलिए हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से विस्फोटक विनिर्माता उद्योग के लिए लागत, प्रौद्योगिकी और सुरक्षा संबंधी संबद्ध तथ्यों के सत्यापन के द्वारा इन मापदण्डों का एक वास्तविक आकलन करने का अनुरोध करते हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

143. उपर नियम 11 अनुबंध - 2 के अंतर्गत जब क्षति का निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण भी शामिल होगा। ऐसा करते समय सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा जिनमें शामिल हैं - डम्प किए गए आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों का परिणामी प्रभाव ***। “कीमतों” पर डम्प किए गए आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए, इस बात की जांच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में डम्प किए गए आयातों द्वारा कीमतों में पर्याप्त कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव प्रर्याप्त मात्रा में कीमतों को अन्यथा कम करना या कीमतों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी बढ़ गई होती।

144. संबंधित घरेलू उद्योग पर पारित आयातों के प्रभावों की जांच करने के लिए उपर्युक्त नियम के अनुबंध II(iv) के अनुसार बिक्री में वास्तविक और संभावित कमी, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेशों पर आय या क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह पर वास्तविक और नकारात्मक प्रभाव, माल सूचियां रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूँजी निवेश जुटाने की क्षमता सहित सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों का मूल्यांकन शामिल होगा जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं।

145. प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण करते समय क्षति संबंधी सभी संकेतकों को ध्यान में रखा है। घरेलू उद्योग के लिए विचाराधीन उत्पाद के अंतर्गत समान वस्तु की क्षतिरहित कीमत का निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की इष्टतम उत्पादन लागत पर विचार किया जिसमें उपभोग संबंधी मानकीकृत सर्वोत्तम नियमों को ध्यान में रखा जाएगा और कच्चे माल संबंधी सुविधाओं की वास्तविक कीमत आदि को भी ध्यान में रखा जाएगा जिसे उद्योग की अकुशलता को निष्प्रभावी बनाने के लिए विचाराधीन उत्पाद में काम में लाया जाएगा।

146. रूस और ईरान के निर्यातक भातीय बाजार में अमोनियम नाइट्रेट का पाटन कर रहे हैं पाटनरोध नियमों के अनुबंध II (iii) में यह अपेक्षित है कि जहां एक से अधिक देशों से किसी उत्पाद के आयातों की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही हो वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी इस प्रकार के आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन तभी करेगा जब वह यह निर्धारित करे कि

- (क) प्रत्येक देश से हुए आयातों के संबंध में प्रमाणित किया गया पाटन मार्जिन निर्यात मूल्य के प्रतिशत के रूप में दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयात की मात्रा समान उत्पाद के आयात की तीन प्रतिशत है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात तीन प्रतिशत से कम है, वहां संचयी आयात समान उत्पाद के आयात के साथ प्रतिशत से अधिक बनता हो, और,
- (ख) आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के आलोक में आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना उपर्युक्त है।
- (ग) प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक हो।

147. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा न्यूनतम सीमा से अधिक है। आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन उपयुक्त है क्योंकि संबद्ध देशों से निर्यात प्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे के साथ और भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई समान वस्तु के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्राधिकारी ने यह पाया कि संबद्ध वस्तुओं के आयातों से घरेलू उद्योग पर क्षति का संचयी प्रभाव पड़ा।

148. ईरान और रूस द्वारा आपूर्ति किए गए उत्पाद में कोई अन्तर नहीं है जिसकी घरेलू उद्योग तथा रूस और ईरान के निर्यातकों दोनों के सत्यापन के दौरान जांच की गई है। रूस और ईरान से आयात किए गए उत्पाद को उपभोक्ताओं द्वारा निदिष्ट प्रयोग के बदले में प्रयोग किया गया है। इसके अलावा इनका उपभोग किया गया है और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के स्थान पर प्रयोग किया गया है। वे उपभोक्ता जो याचिकाकर्ताओं से खरीददारी कर रहे थे, संबद्ध देशों से आयात किए गए उत्पाद का प्रयोग करने लगे। अतः दोनों देशों में उपभोक्ता घरेलू उद्योग और उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किए गए माल को अदल-बदल कर प्रयोग कर रहे हैं।

149. संबद्ध देशों में आपूर्ति किए गए उत्पादों को इसी अवधि के दौरान तुलनीय विक्री चैनलों के जरिए और समान वाणिज्यिक स्थितियों के अंतर्गत भारत में बाजार में लाया जा रहा है।

150. जांच अवधि के पश्चात, उपभोक्ता उकेन से आयात करने लगे हैं जिसमें आगे इसकी कीमत की पूष्टि होती है कि विभिन्न देशों के उत्पादक एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

151. विभिन्न देशों से अयात किए गए उत्पाद के कीमत स्तर समान हैं। वास्तव में, वह एकमात्र कारण कीमत ही है जिसी बजह से उपभोक्ता घरेलू उत्पाद के बीच और संबद्ध देशों में विभिन्न विदेशी उत्पादकों के बीच अधिमान बदलते रहते हैं।

152. प्रयोक्ताओं ने संबद्ध वस्तु को रूस और ईरान से खरीदा है। क्य के लिए एकमात्र कसौटी विभिन्न देशों में उत्पादकों द्वारा प्रस्ताव की गई कीमत है।

153. दोनों देशों से आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में विशेष रूप से कटौती हो रही है।

154. घरेलू उत्पादक और संबद्ध देशों में निर्यातकों द्वारा उत्पाद को समान श्रेणी के उपभोक्ताओं को बेचा जा रहा है।

155. इन परिस्थितियों के अंतर्गत प्राधिकारी का यह विश्वास है कि घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच और आयातित उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तें विद्यमान हैं।

पाठित आयातों की मात्रा और बाजार हिस्सा

156. प्राधिकारी ने वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस), कोलकाता द्वारा उपलब्ध कराए गए संबद्ध वस्तु के आयातों संबंधी आंकड़ों और सहयोगी निर्यातकों द्वारा प्रदान किए गए निर्यात संबंधी ब्यौरों पर विचार किया है। प्राधिकारी ने संबद्ध देश से आयात प्रवृत्ति और इसके कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का विश्लेषण करने के लिए डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों ओर निर्यातकों/आयातकों द्वारा प्रदान किए गए निर्यात संबंधी ब्यौरों पर विश्वास किया है।

आयात (मी.टन)	1999-00	2000-01	जांच अवधि (वार्षिक)	2001-02	2002-03 (प्रथम त्रैमासिक)
रूस	0	60	22136	7759	19911
ईरान	0	0	9600	0	12000
संबद्ध देश	0	60	31736	7759	31911
अन्य	0	0	32.8	41	0
कुल	0	60	31768.8	7800	31911

157. उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि जांच अवधि (अप्रैल 2001-जून 2002) के दौरान ईरान और रूस से 39670 मीटन अमोनियम नाइट्रेट का निर्यात किया गया था। अमोनियम नाइट्रेट के आयातों में समग्र रूप से अत्यधिक वृद्धि हुई है। 2000-2001 के आयातों की तुलना में 2001-2002 की अवधि के दौरान आयात ~~शब्दपूर्ण~~ रूप से बढ़े हैं। पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान भी आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। जांच अवधि की अंतिम तिमाही के दौरान भारी मात्रा में अर्थात् 31911 मीटन के आयात हुए।

संबद्ध देशों से आयातों की औसत सी आई एफ कीमत जांच अवधि में कम हो गई और अंतिम तिमाही में संबद्ध देशों से जांच अवधि में बड़ी मात्रा में नियति हुआ है।

मांग में हिस्सा%	1998-99	1999-00	2000-01	जांच अवधि (वार्षिक)	2001-02	2002-03 (प्रोत्त्रैमासिक)
व्यापारिक उत्पादन	8.05	14.69	17.49	26.01	25.92	20.13
संबद्ध देशों से आयात	0	0	0.01	6.14	1.47	20.84
अन्य भारतीय उत्पादक	22.49	21.16	27.42	19.09	18.64	16.12
कैप्टिव खपत सहित मांग	584517	546492	542596	516934	529417	153089
व्यापारिक बिक्रियाँ	47070.61	80271	96985	134444.64	137246.06	30809.22

158. कुल मांग में आयातों की मात्रा का हिस्सा वर्ष 2000-2001 में 0.1 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 6.14 प्रतिशत हो गया है जबकि घरेलू उद्योग की मांग में बाजार हिस्ता भी वर्ष 2000-2001 के दौरान 17.49 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 26.01 प्रतिशत हो गया है। यह देखा जा सकता है कि व्यापारिक बिक्रियाँ कम नहीं हुई हैं जबकि संबद्ध देशों से आयात हिस्सा जांच अवधि में .01 प्रतिशत से बढ़कर 6.14 प्रतिशत हो गया है परन्तु जांच अवधि की अंतिम तिमाही में इसका हिस्सा 20.84 प्रतिशत तक बढ़ गया। अन्य भारतीय उत्पादकों का हिस्सा 27.42 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि (वार्षिक) में 19.09 प्रतिशत रह गया है। इसलिए प्राधिकारी का अहृ विश्वास है कि सामान्य तौर पर अन्य भारतीय उत्पादकों के घटे हुए हिस्से को संबद्ध देशों द्वारा हासिल कार लिया गया है जबकि घरेलू उद्योग ने अपने बाजार हिस्समें वृद्धि की है।

कैप्टिव खपत के अलावा मांग	1998-99	1999-00	2000-01	जांच अवधि (वार्षिक)	2001-02	2002-03 (प्रोत्त्रैमासिक)
व्यापारिक मांग (मी.टन)	178557	195913	245824	274533	255775	87391
घरेलू उद्योग %	26.36	40.97	39.45	50.76	56.32	35.25
अन्य उत्पादक %	73.64	59.03	60.52	37.26	40.50	28.23
संबद्ध देशों से आयात			0.02	11.98	3.18	36.52

अन्य देश	0	0	0	0.01	0.02	0
----------	---	---	---	------	------	---

159. व्यापारिक मांग में संबद्ध देशों का आयाता हिस्सा 2000-2001 में 0.02 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 11.98 प्रतिशत है गया है जबकि घरेलू उद्योग का हिस्सा भी वर्ष 2000-2001 में 39.45 प्रतिशत से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान 50.76 प्रतिशत हो गया है। अन्य भारतीय उत्पादकों का हिस्सा 1998-99 के दौरान 73.64 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि (वार्षिक) में 37.26 प्रतिशत रह गया है। अन्य भारतीय उत्पादकों ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान व्यापारिक मांग में 23 प्रतिशत तक बाजार हिस्सा खो दिया है। यदि जांच अवधि की अंतिम तिमाही की प्रवृत्ति को देखा जाए तो यह देखा जाता है कि पाटित आयातों का हिस्सा 36.52 प्रतिशत तक बढ़ गया है जबकि घरेलू उद्योग और अन्य उत्पादकों दोनों ने पाटित आयातों की अप्रतिस्पर्धी कीमत के कारण भारी मात्रा में बाजार हिस्से को खो दिया है परन्तु घरेलू उद्योग ने अपने बाजार हिस्से में जांच अवधि (वार्षिक) में वृद्धि की है।

कीमत कटौती/कीमत हास/कम कीमत पर बिक्री

देश	पहुँच मूल्य	बिक्री कीमत	कटौती
रूस	****	****	****
ईरान	****	*****	****

देश	पहुँच मूल्य	भातिरहित कीमत	कम बिक्री
रूस	****	****	****
ईरान	****	****	****

160. पाटित आयातों का कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि आयातों के पाठन से कीमत में भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा क्या इस प्रकार के आयातों के प्रभाव से कीमतों में उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना निवल बिक्री प्राप्ति के साथ की है और यह पाया है कि पाटित आयातों द्वारा कीमत में भारी कटौती हुई है। आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की विल बिक्री प्राप्ति से काफ़ी कम पाया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि

क्षति का आकलन करने के लिए कम कीमत पर बिक्की एक प्रमुख संकेतक है। प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद की क्षति रहित कीमत निकली हो और कम कीमत पर बिक्की की मात्रा का आकलन करने के लिए उसकी तुलना पहुँच मूल्य के साथ की है। इस विश्लेषण से कम कीमत पर बिक्की का महत्वपूर्ण प्रभाव प्रदर्शित होता है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्की की मात्रा निर्धारित की है और वे यह मानते हैं कि पाटित आयात जांच अवधि के दौरान भारी कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्की का कारण है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के पहुँच मूल्य से घरेलू उद्योग की बिक्की कीमत में 15 प्रतिशत से 24 प्रतिशत तक की कटौती होती है। प्राधिकारी द्वारा कम कीमत पर बिक्की की भी जांच की गई है और उन्हें पाया है कि पाटित आयातों के पहुँच मूल्य से घरेलू उद्योग की बिक्की कीमत में 7 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक की कटौती होती है।

लाभप्रदता

घरेलू उद्योग	1998-99	1999-00	2000-01	जांचअवधि वार्षिक
उत्पादन की ईकाई लागत	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	123.48	132	124.92
ईकाई बिक्की कीमत	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	109.17	123.78	118.15
ईकाई लाभ/हानि	****	****	****	****
प्रवृत्ति	-100	-289.50	-227.36	-202.12

161. जांच अवधि में घरेलू उद्योग के उत्पादन लागत में गिरावट आयी है जबकि बिक्की कीमत में भी गिरावट आयी है। उत्पादन की लागत में अमोनियम नाइट्रेट की बिक्की कीमत की गिरावट की सीमा तक गिरावट नहीं आयी है। जांच अवधि के दौरान उत्पादन की लागत वार्षिकृत रूप से 100 से बढ़कर 124.74 हो गयी है जबकि जांच अवधि में क्षति अवधि के दौरान बिक्की कीमत वार्षिकृत रूप से 118.25 तक की बढ़ी है। प्राधिकारी का यह विश्वास है कि बिग्री कीमत में जो वृद्धि हुई है वह उत्पादन लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में नहीं है। यह उल्लेख किया जाता है कि जांच अवधि में घाटे की स्थिति में वार्षिकृत रूप से मामूली सुधार हुआ है। घरेलू उद्योग को इस तथ्य की वजह से घाटा हो रहा है कि घरेलू उद्योग कीमत की वसुली नहीं कर पा रहा है। किन्तु घाटे की स्थिति में सुधार जांच अवधि में हुआ (वार्षिकृत) **मालसूची/स्टॉक**

	1998-99	1999-00	2000-01	जांचअवधि वार्षिक
प्रारंभिक स्टॉक (मी.टन)	293.2	293.2	108.7	358.61
प्रवृत्ति	100	101.03	36.86	122.31
अतिशेष	296.43	107.97	358.61	463.78
प्रवृत्ति	100	36.42	120.98	109.18
औसत स्टॉक (मी.टन)	294.865	202.19	233.19	411.19
प्रवृत्ति	100	68.54	79.08	115.69

162. प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि माल सूची वर्ष 1999-2000 में 107.97 मीटन से बढ़कर वर्ष 2000-2001 में 358.61 मीटन हो गयी थी और यह जांच अवधि (वार्षिकृत) में घटकर 323.65 मीटन हो गयी थी। औसत स्टॉक वर्ष 1999-2000 में 202.1 मीटन से बढ़कर वर्ष 2000-2001 में 233.19 मीटन हो गया था जिससे बढ़ने की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है और यह जांच अवधि के दौरान (वार्षिकृत) बढ़कर 341.13 मीटन हो गया है जो उत्पादन का 1 प्रतिशत से कम है। याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि ठोस अमोनियम नाइट्रेट हाइग्रोस्कोपिक स्वरूप का होने के कारण उसकी आय सीमित होती है इसी कारण वे अत्यधिक माल नहीं रखते हैं। द्रव्य अमोनियम नाइट्रेट के मामले में चूंकि सामग्री का भण्डारण लगभग 130 डिग्री से 0 तापमान में बिजली अवरोधक भंडार टैक में किया जाता है, इस प्रकार संयंत्र मात्र न्यूनतम माल सूची पर कार्य करता है। अतः प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि न्यूनतम स्तरों में मालसूची भी बिक्की संविदाओं की उपलब्धता पर उत्पादन की मात्रा को निनियमित करता है। फिर भी अनन्य रूप से यह नहीं कहा जा सकता है कि यह प्रवृत्ति घरेलू उद्योग को क्षति दर्शाती है।

उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

मी.टन	1998-99	1999-00	2000-01	जांचअवधि वार्षिक	2001-0	Q I 2002-03
क्षमता	563587	563587	563587	563587	563587	140869.8
उत्पादन	453034	430663	394007	406083	411053	96551.21

क्षमता उत्पादन	80.38	76.41	69.91	72.06	72.94	68.58
घरेलू बिकियाँ	47070	80272	96985	134444	137246	30809
कैप्टिव	405960	350579	296772	242449	273661	65698

163. वर्ष 2000-2001 में उत्पादन में वृद्धि हुई है किन्तु जांच अवधि (वार्षिकृत) के दौरान 3 प्रतिशत की मामूली वृद्धि प्रदर्शित होती है। क्षमता उपयोग में भी पूर्ववर्ती वर्ष 2000-2001 की तुलना में जांच अवधि में 1 प्रतिशत से थोड़ा अधिक की वृद्धि हुई है। मांग में वृद्धि के कारण घरेलू बिक्री में भी वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है। याचिकाकर्ता यह दावा करते हैं कि बिक्रियों में वृद्धि का कारण मै0 सेल राउरकेला और मै0 एफ सी आई सिंधी की बिक्रियों/ संविदा का हस्तांतरण घरेलू उद्योग को किया जाना है क्योंकि उन्होंने अमोनियम नाइट्रेट का उत्पादन बन्द कर दिया है।

164. प्राधिकारी का यह विश्वास है कि याचिकाकर्ता कंपनियों के पास यूरिया विनिर्माण के प्रयोजनार्थ उत्पाद की पर्याप्त कैप्टिव खपत है। साथ ही, याचिकाकर्ता कंपनियों की घरेलू बाजार में उत्पाद की पर्याप्त मर्चेट बिक्री है। उत्पाद की कैप्टिव खपत होने एवं मर्चेट बाजार में इसकी बिक्री करने के कारण इसका अंतिम बाजार में इसकी बिक्री करने के कारण इसका अंतिम उपयोग पूर्ण रूप से भिन्न है। ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि कैप्टिव एवं मर्चेट बाजारों में घरेलू उद्योग का निष्पादन दो पृथक एवं विशिष्ट बाजारों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता से जुड़ा हुआ है अथवा उसको प्रभावित करता है। यूरिया के उत्पादन के लिए न तो उत्पाद का आयात किया जाता है और न ही संबद्ध माल के मर्चेट बाजार में परिवर्तन से यूरिया का बाजार प्रभावित हुआ प्रतीत होता है।

165. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के इन विचारों पर विचार किया कि एन आई पी और एन एस आर का उल्लेख एक समान स्तर पर किया जाना चाहिए। जैसाकि पहले भी चर्चा की गयी है कि सम्पूर्ण जांच के दौरा एक्स मैल्ट को मूल आधार माना गया है जिससे सभी अभिवृद्धियों को एक उचित तुलना हेतु एन एस आर के निर्धारण के लिए किमत में लिया गया है चाहे वह प्रिलिंग लागत के रूप में हो और अतिरिक्त एस जी ए और बैगिंग के रूप में हो। एन एस आर परिकलन हेतु बढ़ती हुई अभिवृद्धि की गणना विचाराधीन उत्पाद के अनुरूप एस जी ए और बैगिंग के साथ की गयी है। घरेलू उद्योग के लिए नुकसान रहित कीमत का निर्धारण करने में प्राधिकारी ने संबद्ध माल के उत्पादन में प्रयुक्त कच्ची सामग्री उसकी खपत, बिजली, पानी इत्यादि

जैसी उपयोगी वस्तुओं की लागत, ब्याज लागत, श्रमिक लागत, मूल्य छास लागत, बिक्री एवं प्रशासनिक व्ययों की लागत सहित सभी संगत कारकों की व्यापक जांच एवं विश्लेषण किया है।

लागत विश्लेषण एवं क्षमता उपयोग जैसे कारकों की भी जांच की गयी है। इन सभी कारकों का निर्धारण मूल बही खातों तथा उत्पादन वित्तीय विवरणियों के संदर्भ में किया गया है।

घरेलू उद्योग के अन्य आर्थिक मापदण्ड

वर्ष	1998-99	1999-00	2000-01	जांचअवधि वार्षिकृत
मजदूरी	100	105.12	115.40	127.66
नकद प्रवाह	100	81.21	124.40	19.93
उत्पादन प्रतिदिन	100	95.06	86.97	89.64
वृद्धि	41.36	17.23	27.86	29.33
रोजगार	100	97.13	93.64	94.98
निवेशित पूँजी पर आय	-100	-132.02	-99.05	-107.09

(क) घरेलू उद्योग के रोजगार की प्रवृत्ति में जांच अवधि में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आया है। घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर में समग्र क्षति अवधि के दौरान गिरावट आयी है जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकता के स्तर में वृद्धि हुई है की प्राधिकारी ने इस कारक को क्षति का कारण नहीं पाया है।

(ख) घरेलू उद्योग बहु-उत्पाद समूह कम्पनी है जिसके कारण प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद से संबंधित नकद प्रभाव का निर्धारण नहीं कर पाया है। अतः प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि इस कारक के कारण अति प्रमाणित नहीं होती है।

(ग) घरेलू उद्योग की मजदूरी- जांच अवधि में 100 से बढ़कर 127.66 हो गयी थी जिसके कारण जांच अवधि में उत्पादन की लागत में वृद्धि हो गयी होगी। मजदूरी में वृद्धि करना राष्ट्रीय कानून के अनुसार विनियमित होता है और घरेलू उद्योग का मार्गदर्शन देश के मौजूदा कानून द्वारा होता है।

(घ) घरेलू उद्योग के प्रति दिन उत्पादन में हर दूसरे वर्ष में गिरावट आयी है। बिक्री माचा में जो वृद्धि हुई थी वह वर्ष 1999-2000 में 41 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि (वार्षिकृत) में 27.86 प्रतिशत रह गयी थी। निवेशित पूँजी पर आय में जो नकारात्मक

खुब है वह सम्पूर्ण जांच अवधि में घेरेलू उद्योग को हुए घाटे के कारण हुआ है अतः उसने कोई विस्तार करने की योजना नहीं बनायी।

क्षति का खतरा

166. जहां तक क्षति के खतरे का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों में निम्नानुसार है:-

167. वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण तथ्यों के आधार पर किया जाएगा और न कि केवल आरोप कल्पना अथवा परोक्ष संभावना के आधार पर। परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली ऐसी किसी स्थिति का स्पष्ट तौर पर अनुमान लगाया जाना चाहिए और ऐसी स्थिति आसन्नवर्ती होनी चाहिए जितमें पाटन से क्षति पहुंचेगी। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के संबंध में आकलन करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित कारकों पर विचार करेगा :-

- (क) भारत में पाटित आयातों की अत्यधिक वृद्धि पद जिससे आयातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना प्रदर्शित होती हो।
- (ख) किसी अतिरिक्त निर्यात को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता व्यान में रखते हुए निर्यातक की पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य क्षमता अथवा उसमें तत्काल पर्याप्त वृद्धि जिससे भारतीय बाजार को अत्यधिक संवर्धित पाटित निर्यातों की संभावना प्रदर्शित होती हो।
- (ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं, जिनसे घेरेलू कीमतों में अत्यधिक गिरावट या कमी आएगी और जिनसे आगे और आयात हेतु मांग बढ़ने की संभावना होगी, तथा
- (घ) वस्तु सूचियों की जांच की जा रही हो।

- (इ) प्राधिकारी ने क्षति के खतरे के संबंध में याचिकाकर्ताओं के तर्कों का परीक्षण किया है और नोट किया है कि बहुत से देश रूप से अमोनियम नाइट्रेट के आयातों पर पहले ही पाटनरोधी शुल्क लगा चुके हैं। इसके परिणामस्वरूप रूपर्णा निर्यातकों

पर भारतीय बाजार में अधिक विक्षय करने का दबाव बढ़ गया है, क्योंकि उनका उत्पादन आधार विस्तृत है। डी जी सी आई एंड एस के आयात आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि पिछले 3 महीनों की जांच अवधि (अप्रैल - जून 2002) के दौरान रूसी निर्यातकों द्वारा 2001-2002 के 19786 मीटन की तुलना में 19911 मीटन के अमोनियम नाइट्रेट का निर्यात किया गया। डी जी सी आई एंड एस कोलकाता से उपलब्ध आयात आंकड़ों के अनुसार जूलाई - सितम्बर 2002 (जांच अवधि के पश्चात्) रूसी निर्यातकों द्वारा 37926.3 मीटन के अमोनियम नाइट्रेट का निर्यात किया गया था।

- (ii) आयातों के द्वारा घरेलू बाजार की कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है।
- (iii) उत्पादन की तुलना में स्थापित क्षमता की जांच करने पर यह पाया गया है कि निर्यातक के पास जो उपलब्ध स्टॉक है वह रूसी और ईरानी दोनों निर्यातकों के मामले में कुल उत्पादन के 1 प्रतिशत से कम है।
- (iv) जांच अवधि के पश्चात् आयातों में जो प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई है वह अत्यधिक है किन्तु घरेलू उद्योग ने वार्षिक अवधि में विचाराधीन उत्पाद की कुल मांग में अपनी हिस्सेदारी कम नहीं की है।
- (v) उपर्युक्त जांच के आधार पर, प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के खते का साक्ष्य निकालने के लिए कोई पर्याप्त कारण नहीं प्राप्त कर सके।

169. अनेक हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना की पर्याप्तता एवं यथार्थता के बारे में स्वयं को संतुष्ट नहीं किया है और दायर याचिका निर्धारित रूप में एवं निर्धारित ढंग से दायर नहीं की गयी है। यह भी तर्क दिया गया है कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा महत्वपूर्ण सूचना को गोपनीय रखा गया है जिससे विरोधी हितबद्ध पक्षकारों को सूचना को चुनौती देने की प्राधिकारी को अर्थपूर्ण अनुरोध करने के अधिकार से वंचित हो गए हैं। तथापि, विरोधी पक्षकारों को उपलब्ध नहीं जा रही सूचना के बारे में गोपनीयता संबंधी एक प्रावधान को ध्यान में रख गया है। पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 में यथा निर्धारित शर्त के अध्यधीन गोपनीयता के आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सूचना प्रस्तुत किए जाने का प्रावधान है। गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का अगोपनीय सार सार्वजनिक फाइल में प्रस्तुत है जो पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(7) के अनुसार सभी हितबद्ध पक्षकारों हेतु

निरीक्षण के लिए उपलब्ध है। इस मामले में भी, गोपनीय अनुरोधों के अगोपनीय सार सभी हितबद्ध पक्षकारों के अवलोकनार्थ सरकारी फाइल में प्रस्तुत किया गया था।

कारणात्मक संबंध

170. प्राधिकारी ने कारणात्मक संबंध के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की सावधानीपूर्वक जांच की है। प्रारंभिक जांच परिणामों के पश्चात् प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति एवं पाटित आयातों के बीच कारणात्मक संबंध के मुद्दों के बारे में एक विस्तृत जांच की गयी थी। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध ॥ के पैराग्राफ (v) में निम्नलिखित उल्लिखित हैः—

“यह प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि उपर्युक्त पैराग्राफ (ii) और (iv) में यथानिर्धारित पाटित आयात पाटन के प्रभाव के जरिए घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा रहे हैं। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंधों का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संगत साक्ष्यों की जांच के आधार पर होगा। निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों से इतर उन अन्य ज्ञात कारकों की भी जांच करेंगे जो उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा रहे हैं और इन अन्य कारकों द्वारा हुई क्षति का कारण पाटित आयात नहीं होने चाहिए। इस संबंध में जो तथ्य संगत हो सकते हैं उनमें अन्य के अलावा पाटित कीमतों पर न बेचे गये आयातों की मात्रा एवं कीमतें, मांग में कमी अथवा खपत के रूप में परिवर्तन, विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा और उनके व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार, प्रोटोग्राफी में विकास और निर्यात निष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल है।”

171. प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं के पास संबद्ध माल का पर्याप्त बाजार हिस्सा है और जांच अवधि में इसमें वृद्धि हुई है। रूस और ईरान को छोड़कर जिनका संबद्ध माल के कुल आयात का 76.81 प्रतिशत और 23.1900 प्रतिशत बनता है, अन्य सभी संबद्ध देशों का संचयी हिस्सा कुल आयातों का .01 प्रतिशत बनता है अतः निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक है। इसलिए अन्य देशों से कथित पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर को मात्रात्मक प्रभाव नहीं पड़ा था। कीमत के प्रभाव की जांच करने पर, अर्थात् क्या पाटित आयातों ने भारत

में समान वस्तु की कीमतों में पर्याप्त कटौती की है, प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि संबद्ध देशों क्षेत्रों से संबद्ध माल का उत्तरार्द्ध मूल्य याचिकाकर्ताओं की निवल बिक्री कीमत से कम या किन्तु जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित नुकसानरहित कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री से कम है। अतः पाटित आयातों से याचिकाकर्ता को वास्तविक क्षति होने का कोई प्रश्न नहीं उठता है।

172. यह निर्धारित करने में कि क्या पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई थी, प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव और उद्योग की स्थिति पर उनके परिणामों की जांच की थी। पाटित आयातों से इतर ज्ञात कारक जो उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा सकते थे, की जांच यह सुनिश्चित करने के लिए की गयी थी कि इन अन्य कारकों द्वारा हुई संभव क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई थी। प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि क्षति एवं कारणात्मक संबंध संबंधी उठाए गए मुद्रों सहित विभिन्न मुद्रों जो घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति पहुंचा रहे थे, के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्रों का निराकरण किया गया है। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के अन्य ज्ञात कारकों के प्रभाव की भी जांच की है और यह विश्वास करते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति अन्य ज्ञात कारकों के कारण नहीं हुई है। तथापि, प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है और निवल बिक्री वसूली घरेलू उद्योग के लिए विचाराधीन उत्पाद की क्षतिरहित कीमत से अधिक है।

173. संबद्ध माल का उत्पादन करने वाली दो अन्य उद्योगों के बन्द हो जाने की भी जांच की गयी थी। प्राधिकारी उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर यह निर्धारित नहीं कर सकते हैं कि इन दो उद्योगों ने संबद्ध देशों से पाटन होने के कारण प्रचालन बन्द कर दिया है। प्राधिकारी मांग में कमी का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके। तथापि, प्राधिकारी ने संबद्ध माल जो अब प्रयोक्ता उद्योग की मांग है, की तकनीकी विशेषताओं के बारे में निर्यातकों/आयातकों/प्रयोक्ता उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों का सत्यापन किया है। उपर्युक्त के आधार पर, प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि खपत के रूप में परिवर्तन एवं सुविधा हुई है। इस प्रकार प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को जो कतिपय अति हुई है वह संबद्ध देशों से संबद्ध माल के पाटन के कारण नहीं बल्कि खपत के रूप में हुए परिवर्तन के कारण हुई है, लेकिन घरेलू उद्योग को अभी

भी क्षति नहीं हुई है योंकि वे उचित बिक्री कीमत की वसूली करने में समय है। प्राधिकारी का यह मानना है कि संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में जो वृद्धि हुई है और खासकर जाँच अवधि के अंतिम तिथाही में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है उससे याचिकाकर्ता को बाजार का हिस्सा प्रभावित नहीं हुआ है और मांग में वृद्धि हुई है। एच डी ए एन प्रिल के आयात से अमोनियम नाइट्रेट के अन्य उत्पादकों की न कि याचिकाकर्ताओं की बिक्री संविदा में कमी आयी है।

174. घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में जाँच अवधि के दौरान मामूली सुधार हुआ है किन्तु वह कुल उत्पादन के 1 प्रतिशत से कम है और घरेलू उद्योग की मर्चेट बिक्रियों का लगभग 2.5 प्रतिशत है अतः प्राधिकारी यह विश्वास करते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन का परिणाम नहीं है। विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार व्यवहार एवं प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास, निर्यात निष्पादन अथवा घरेलू उद्योग की उत्पादकता से घरेलू उद्योग को क्षति हुआ प्रतीत नहीं होता है न ही जाँच की प्रक्रिया के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी के ध्यान में इनकी वजह से घरेलू उद्योग को क्षति होने संबंधी कोई साक्ष्य लाया गया है।

175. अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को जो वास्तविक क्षति हुई है वह संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों से नहीं हुआ है। उपयुक्त को देशते हुए, प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत निर्धारित अपेक्षाओं के अनुसार संबद्ध माल के आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति एवं वास्तविक क्षति का खतरा का पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर पाए हैं। अतः प्राधिकारी का यह विश्वास है कि पाटनरोधी संबंधी पाटनरोधी करार के नियम ॥ के अर्थ के भीतर पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति एवं वास्तविक क्षति का खतरा नहीं हुआ है।

च. निष्कर्ष

176. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध माल का निर्यात अपने सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिससे मैसर्स ज एस सी ने विनोमिस्की आजोत, रूस को छोड़कर पाटन हुआ है,

घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण जांच अवधि के दौरान कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है।

अतः रूस एवं ईरान मूल के अथवा वहाँ से निर्धारित अमोनियम नाइट्रेट, जो सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 31 के उप-शीर्ष सं0 3102.30 के अंतर्गत वर्गीकृत है के आयातों पर 7 अप्रैल, 2003 की अधिसूचना सं0 14/36/2002 डी.जी.ए.डी. द्वारा संस्तुत अनंतिम पाटनरोधी शुल्क को वापस लेना आवश्यक समझा गया है।

उपर्युक्त के मद्देनजर, निर्दिष्ट प्राधिकारी नियम 18, उपनियम (4) के प्रावधानों के अनुसार अनंतिम शुल्क को वापस लेने की सिफारिश करते हैं।

उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार इस आदेश के विस्तृद्ध एक अपील सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जाएगी।

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 19th March, 2004

FINAL FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning import of Ammonium Nitrate originating in or exported from Russia and Iran

No. 14/36/2002-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE

1. The Procedure described below has been followed:

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a petition filed by M/s. Gujarat Narmada Valley Fertilisers Company Ltd., (GNFC), M/s. National Fertilisers Ltd., (NFL) and M/s. Deepak Fertilisers and Petrochemicals Corporation Ltd., (DFPCL) on behalf of the domestic industry alleging dumping of Ammonium Nitrate originating in or exported for Russia and Iran (hereinafter referred to as subject countries). The petition has been further supported by M/s. Rastriya Chemicals and Fertilisers Ltd.

(ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the petitioners revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was, therefore, considered as properly documented.

(iii) The Authority on the basis of *prima-facie* evidence submitted by the petitioner decided to initiate the investigation against imports of subject goods from Russia and Iran. The Authority notified the Embassies/High Commissions/Representatives of Russia and Iran in New Delhi about the receipt of the dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with Sub-Rule 5(5) of the Rules.

(iv) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by petitioner) and industry/user associations and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2), 6(3) and 6(4).

(v) The Authority made available the public file as per Rule 6(7) to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted by various interested parties for inspection, upon request. Also on request of certain interested parties regarding additional information from the interested parties for offering comments was also made available to the extent it was relevant feasible and permissible within the Rules.

(vi) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of subject goods made in India during the past three years, including the period of investigation.

(vii) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified preliminary findings vide Notification No. 14/36/2002-DGAD dated the 7th April 2003 with regard to Anti Dumping investigations concerning imports of Ammonium Nitrate originating in or exported from Russia and Iran and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;

(viii) The Authority forwarded a copy of the Preliminary Findings to known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the Preliminary Findings within forty days of the date of the letter;

(ix) The Authority also forwarded copy of the Preliminary Findings to the Embassy/High Commission/Representative of subject countries in New Delhi with a request to furnish their views on the Preliminary Findings;

(x) The Authority held public hearings on 03/12/2002, 13/01/2003, 24/02/2003 and 05/8/2003 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the interested parties. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. Designated Authority has considered the written submissions thus received from interested parties in these findings;

(xi) Arguments raised by interested parties before announcing of Preliminary Findings, which have been brought out in the Preliminary Findings notified earlier have not been repeated herein for sake of brevity. However, arguments raised after the preliminary findings by the interested parties have been appropriately dealt in these findings wherever appropriate;

- (xi) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India was worked out on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and by analyzing the cost information furnished by the petitioners.
- (xii) The Authority verified the information provided by the petitioners to the extent considered necessary and also conducted on spot verification of the data furnished by M/s. JSC Nevinnomomyssky Azot, Russia and M/s. IPCC, Tehran, Iran.
- (xiii) The views expressed by various interested parties have been discussed in the preliminary findings and also in the disclosure statement. The views which have not been discussed earlier in the preliminary findings and disclosure statement and those now raised in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paras herein below the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The Authority has considered all views expressed by the interested parties to the extent they are relevant as per rules and have bearing on the case and have been appropriately considered in these findings at appropriate places.
- (xiv) In accordance with Rule 16 of the anti dumping Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed on **dated 1st March 2004** to known interested parties and comments received on the same have also been duly considered in these findings;
- (xv) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2001 to 30th June 2002;
- (xvi) **** in the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by Authority under the Rules.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLES:

Views of the Domestic Industry

1. The product involved in the present investigation is “Ammonium Nitrate”. It is produced in various forms such as melt, prills, crystal, granules, flakes and lumps, all having same chemical composition.
2. Petitioners wish to refer to and rely upon elaborate submissions made by them earlier in this regard, which is already on the record of the Authority. These submissions clearly establish that there is no merit in the argument of the consumers. The consumers had created a hype without basis and with a view to derail the present investigations with malafide and malicious intentions. The goods produced by the domestic industry are like article to the product under consideration and that is the sole legal requirement on this issue.

The fact is that:-

- a) petitioner companies produce HDAN;
- b) HDAN is produced by the petitioner companies in various forms, which include melt, prills, lumps, etc.;
- c) HDAN in various forms is nothing but one like product.

3. The consumers have claimed that various forms of AN are not interchangeable. The Statement of Supplies made establishes the fallacy of the argument by each of the petitioner companies. When the same customer has consumed in different forms, petitioners really wonder on what grounds the consumers are now arguing that they have not used the two product interchangeably.

4. In the matter of fused magnesia, in the absence of fused magnesia, sintered seawater magnesia has been held as like article to the imported product. If consumers wish to argue that identical article does not exist in India, another article, in its absence, is required to be considered by the Designated Authority for examination of like article. And if consumers agree that similar product exists in India, there is no basis for the argument repeatedly raised by the petitioner. In Caustic Soda, Caustic Soda Lye and Caustic Soda solid have been treated as one like product. It should be noted that even Solid Caustic Soda could have many forms – prills, flakes, granules, or any others. In Lead Acid Batteries, various types of Lead Acid Batteries have been treated as like article. In fact, within lead acid batteries, various types of maintenance free batteries have been treated as one like product and the Designated Authority has recommended one benchmark.

5. According to M/s. Stanbrook and Bentley, it will be very rare that the exported product is identical to the product manufactured by the community industry. Even in the case of a substance, which has the same chemical formula, there will usually be differences in the level of impurities. Thus in practical terms, the community Authorities have to examine whether the imported product has characteristics closely resembling those of the community product. In refectory chamottes from the People's Republic of China, the community authorities refused to treat processed and unprocessed chamottes as a single product even though they were classified under the same customs headings. Their essential physical and technical characteristics; minor physical differences include such matters as whether the material used for a pocket lighter body was either plastic or nylon, differences in shape or levels of impurities, and provided that these do not affect end use will not prevent cumulation;

6. According to Edwon Vermulst and Paul Waer, minor differences in physical characteristics will not necessarily preclude a like product finding if the product nevertheless compete with each other in the market. There has therefore been gradual shift from an emphasis on the physical characteristics of the product to a focus on their end-uses and substitutability in the market place. The definition of the like product is in first instance in the hands of the EC industry because it mostly depends

on the scope of the complaint. For the EC industry, it is extremely important to define the scope of the complaint as precisely as possible.

7. In the magnesite cases, a European importer argued that the differences between the exported Chinese products and the Greek products were so great as to prevent them from being considered like products. The commission examined the chemical composition and determined that, despite slight differences, the products were used in the same industries and the same purposes and therefore constituted like products.

8. The USITC in the matter of Ammonium Nitrate from Russia has considered the solid, fertilizer grade Ammonium Nitrate products with a bulk density equal to or greater than 53 pounds per cubic foot (equivalent to 0.849g/ml) as a product under consideration. With regard to the argument that the domestic product is not a like article to the imported product, it is submitted that the word HDAN is being used by the importers, with a view to show that the imported product is not "like article", and possibly to evade the legal complications involved in importing this material, even when their own specification sheet and test certificate do not mention any density.

9. The fallacy in the argument of the opposing interested parties is established by the fact that:-

- a) one of the petitioner companies produces Ammonium Nitrate in prill form also;
- b) ammonium nitrate in melt form and solid forms including prills, crystals, flakes, lumps, etc have been used interchangeably,
- c) Prilled Ammonium Nitrate is not a technical requirement. Solid Ammonium Nitrate is consumed eventually in liquid form. Solidification including in prill form is done more with a view to ensure ease in transportation.

10. Notwithstanding above, the definition of like article provides for (a) identification of an article, which is identical in all respects to the imported product; and (b) in the absence of identical article, another article that has characteristics closely resembling. Assuming though not admitting that the domestically produced product is not identical in all respect to the imported product, it can not be denied that the domestically produced does not have closely resembling characteristics to the imported product, particularly when the consumers are using the two interchangeably. It is important in this connection to note that there were hardly any imports of Ammonium Nitrate earlier. No new requirement of the product has been generated. Such being the case, the consumers of imported material were meeting their requirement from the domestic sources only. During last 6 months when imports have not taken place either due to Anti dumping case under finalisation or due to higher prices prevailing in Exporting countries. Consumers are merrily running their explosives manufacturing business with Domestic AN Melt and Solid in various forms as mentioned earlier.

11. Consumers once again made reference to the submissions made by Department of Explosives. Following fallacy in the argument of the Department of Explosives is worth highlighting:-

- a) when the consumers have admittedly consumed both LDAN and HDAN produced by Deepak, how the Deptt. of Explosives have stated that the consumers have discovered the advantages and suitability of the HDAN Prills over melts. Are the Indian consumers of the size and shape of IEL, IBP, Gulf Oil etc today wish to argue that they were unaware of the comparative advantages of HDAN prill over HDAN melt?
- b) The Department of Explosives stated in their comments that because of the closure of FCI and Rourkela Steel Plant Fertilizer Division, there was shortage of AN melt in the eastern region, which has been met by the imported product. The argument admits that the melt and the imported prill are like article.
- c) The Department of Explosives stated that the risk involved in handling melt and LDANP are higher than for HDAN prills. This statement does not mean that melt, LDANP and HDAN prills are not used interchangeably. One product type is preferred over other product type per se implies that two are comparable and hence like article.

12. It is stated by the Department of Explosives that imported product, i.e., HDAN Prill is preferred over melt and LDAN. This more than establishes that the two are like article. Preference of one product over other cannot be found for dislike products. In fact, one of the interested party has gone to the extent of stating that “..... the present investigation” is nothing but taking advantage of the weakness in defining the like article in the anti dumping Law in India”. Be as the case may be, the legal provisions contained under the Rules govern the Designated Authority. Suffice it would be to state that the legal provisions in this regard are quite comparable in all the countries (having dumping law) as also WTO Agreement.

13. Regarding the sales of HDAN prills, the petitioners have already furnished supplies made by each petitioner companies, which is already on the record of the Authority. The petitioners have sold HDAN prills to explosive manufacturers in India. The fact that one customer has consumed in different forms of AN supplied by imported and domestic sources clearly establishes that the two are substitutable and the two have been substituted and hence like article.

14. The domestic industry in their comments to the disclosure has stated that the scope of product under consideration has now been restricted HDAN from Ammonium Nitrate after excluding AN melt and LDAN. However even when the scope of product under consideration itself has been restricted to HDAN, scope of like article produced by the domestic industry has been kept as all forms of AN excluding LDAN and AN melt. At the same time the domestic industry has raised that whether the DA has not considered only prill form of AN solid (other than LDAN) produced by the domestic industry or all other forms of this AN solid such as AN lumps, crystals and prills. However petitioner note that the DA has restricted the

scope of like article at the disclosure statement proceeds whether determination of standing, scope of domestic industry, by all the three forms of AN.

Views of Importers/user industries

M/s. IBP Co., Ltd.,

15. The only AN prill manufacturer in the country i.e., Deepak group claims to manufacture "Optiform" as AN prill. In all its annual reports and advertisements, they have represented themselves as manufacturers of LDAN prills in coated and uncoated form. The claim of density of Optiform at 0.855 g/cc through a test report is just to get inclusion as HDAN, whereas the actual density of both of their products varies from 0.75-0.85 g/cc. It is impossible to manufacture a prilled product with exact density of 0.855 g/cc as claimed by Deepak Fertilisers.

16. Major International Antidumping investigations against Ammonium Nitrate have specifically segregated the HDAN prills from LDAN prills and AN melt. Giving high reliance to factors such as technology and safety, the three products were never considered as like product by the major countries for the anti dumping investigations.

17. The product under consideration was defined as ammonium nitrate. The only product imported during the period of investigation or thereafter is HDAN prills. The investigations regarding the dumping of ammonium nitrate can, therefore only be initiated on the basis of a petition by the manufacturers of such article, or in the absence thereof, of the like article.

M/s. Bharat Explosives Limited

18. In the preliminary findings, no consideration appears to have been given to the fact that each ammonium product is ideally suited for a particular application. The argument that there is an overall shortage of ammonium nitrate in the country has been misinterpreted to be an admission that the AN products are inter-changeable. It is a fact that the petitioners are not in a position to meet the domestic demand of ammonium nitrate products—that is of HDAN prills, LDAN prills, and melt. In applications, where HDAN prills are required, they must necessarily be imported. The shortage of LDAN prills and melt, can to some extent be met by the imports, as HDAN prills can substitute for melt or LDANP. The reverse is however not true specially with regard to Safety and range of application. The argument that there is a shortage, which can be met by the imports, does not prove that LDANP and melt can substitute for HDANP. For a product to be considered a "like article", to another, there must exist technical and commercial interchangeability. Merely because HDAN can substitute for other forms of AN, would not satisfy the test of like article.

19. In the preliminary findings, it has been recognised that Melt, HDAN prills and LDAN prills are separate products, as separate duties have been recommended in respect thereof. Having held so, separate export price, normal value, dumping margin and injury margin ought to have been determined for each product. In the case of melt and LDAN prills, there can be no export price or normal value or dumping margin, since this product has never been imported into India. In the absence of any import, it is difficult to understand how the dumping margin has been arrived at for these two products. In the case of HDAN prills no doubt, there is an export price, normal value and presumably some dumping margin, there can not be any non-injurious price or injury margin since this product is not manufactured in India.

20. A claim has been made that HDAN is manufactured and sold in India in prill form by the petitioners, is not true. The users as well as the association of explosive manufacturers, who are the main customers for such products, have repeatedly denied this fact. This claim has been made by M/s. DFPCL, yet their annual reports, Web site, advertisement etc only mention production and sale of LDAN prills. Moreover, during the period of investigation none of the petitioners have either offered or sold to us HDAN prills manufactured by them.

21. The petitioners have stated that since HDAN prills, LDAN prills and melt have been used for manufacture of explosives, this implies interchangeability. The aforesaid products have different applications in the manufacture of explosives. The Ammonium Nitrate product to be used is dependent on the type of explosive to be prepared/manufactured. The selection is based on technological and safety considerations. Therefore, the explosives manufacturers do use different types of Ammonium Nitrate however not interchangeably.

22. The petitioners have rightly stated that the focus should be on the end use and substitutability in the market place as per Edwin Vemulst and Paul Waer. It is submitted that the user can only highlight the end uses of the products themselves. Since the various products have different applications for explosives, there is no substitutability in the market place. In fact the petitioners itself sells the products manufactured by it at very different prices suggesting that they are not substitutable. The difference in price is sometimes to the extent of 30% to 40%. If the products were substitutable, as stated by the petitioners, then all users would have been purchasing only the cheapest product i.e., melt. The users are purchasing the products as per their technical requirement for manufacture of explosive. The different prices confirm the lack of substitutability.

23. The petitioners have repeatedly stated that the use of LDAN prills and melt by explosive manufacturers implied interchangeability. This is not so, as the different products have separate applications in the manufacture of explosives. For example melt cannot be used for on site blasting (or deep-hold blasting) operations. Therefore, different explosives applications require different Ammonium Nitrate products. In fact, HDAN prills is the optimally suited product for technologically advanced explosive applications, and is also the safest raw material. The indigenous products

can not substitute it. Therefore, in the absence of a like article, the investigations are liable to be terminated.

24. Initiation of investigation under Rule 5 is also bad because the Applicants are not a domestic industry in respect of HDAN prills which are not manufactured domestically. The same are also not like article. This being the factual position, domestic industries cannot allege any injury to them because of import of HDAN prills.

M/s. Indian Explosives Ltd., and M/s. Special Blast (P) Ltd.,

25. Under the Anti Dumping Rules and Section 9A of the Customs Tariff Act, product under consideration is defined as the imported product, which may have been dumped and caused resultant injury to the domestic industry. Since the during the period of investigation, only HDAN Prills have been imported, this should be defined as the product under consideration. Other ammonium nitrate products, such as LDAN prills, melt, etc. have not been imported during the POI, therefore they can not be included within the purview of product under consideration and no duty can be imposed thereon.

26. It is submitted that no reliance can be placed on the claims of petitioners like Deepak Fertilizers, who have resorted to gimmicks such as false declaration of the density of their product Optiform (Density quoted as = 0.855g/cc). The entire explosives industry has given a declaration that the product Optiform is sold as uncoated LDANP and has a density ranging from 0.75-0.85 g/cc. The most common value being 0.81 g/cc. Moreover, this company is having a license and capacity to manufacture only LDAN in prill form as per their own annual reports.

27. Ammonium Nitrate in its primitive / basic form exists as melt or solidified into lump or flakes. Advanced / processed forms of Ammonium Nitrate include AN prills and granules.

28. AN Prills and Granules can be further classified as:

- i) HDAN Prills (also known as Fertilizer Grade AN prills)
- ii) LDAN prills (also known as Explosive Grade prills)
- iii) AN granules

29. High Density Ammonium Nitrate Prills (HDANP) are thermally stabilized, free flowing, dispersible, and uniform sized with high static resistance and spherical shape. They have a density of >0.90 g/cc, because of their non-porous structure. They can be suitably coated externally to avoid caking for longer shelf life. It is an ideal product for BULK STORAGE and HANDLING because of its low detonation sensitivity. The product is termed

as Fertilizer Grade because it passes the detonation sensitivity test in the European market and is considered safe for Bulk handling and Storage.

30. Low Density Ammonium Nitrate Prills on account of its high porosity, has density of 0.75 g/cc to 0.85 g/cc. The porosity is introduced to increase the detonation sensitivity. The ANFO explosives, produced from LDAN prills have very high initiation sensitivity and require a very small shock stimulus as compared to HDANP for initiation. The propensity of getting accidentally contaminated with liquid fuels because of its high absorption capacity in the pores makes it extremely dangerous to store. Stringent environmental regulations govern LDANP.

31. AN granules are in tabular form, thermally stabilized and coated with anticaking agents meant to be used for making ANFO explosives. Granules were manufactured by some manufacturers like CANPEX Chemicals and Explogel India on an experimental basis, but in the absence of proper technology, the product was not accepted by the user industry, and there is no production of granules for the last 10 years in India.

32. Ammonium Nitrate Melt is a primitive form of AN. It is produced by nitration of surplus ammonia meant for production of nitrogenous fertilizers such as ANP, Urea etc. and was sold as a by-product by leading fertilizer manufacturers such as NFL, GNFC and RCF, FCI and RSP. This melt is solidified in the crude form to make products such as AN Lumps, Crystals and Flakes. None of the above requires any specific technology. Melt is to be maintained at high temperature and is required to be stored and transported in stainless steel tankers and storage vessels. This leads to high risk and exorbitant capital infrastructure requirement. On the other hand solid products like lumps and crystals are associated with impurities; they are of irregular shape, difficult to break and handle, prone to thermal recycling, unsuitable for pumping and onsite applications, poor disposability and have a low shelf life.

33. Since the technology for manufacture of prills has been developed, the technology for the manufacture of explosives has also undergone a tremendous change, and new generation explosives can be made only with prills and not crystals, flakes or lumps. Use of any form, other than prills would mean taking back, the technology for manufacture of explosives. Prills are the optimum product, as they are free flowing, can be coated and have anti-caking and other beneficial properties.

34. Explosive manufacturing is a closely guarded technology and Quality Control Scientists test the various raw materials for the finer parameters with regard to the safety and quality of the explosive. There are various types of explosives such as Heat Resistant explosive, large diameter slurry explosive, site mixed slurry, permitted group of explosives, large diameter emulsion,

bulk emulsion etc. whose applications are very different yet their chemical composition is substantially the same. With minor variations in the ingredients, the properties of the explosives are significantly changed making the product suitable for different applications. Therefore, the statement that ammonium nitrate with different densities and in different forms is like or similar is factually incorrect.

Views of exporter

M/s. JSC Nevinnomiyssky Azot, Russia

35. The product exported by us is a High Density Ammonium Nitrate prill, which is not manufactured in India. Products such as ammonium nitrate melt and low density ammonium nitrate are not like article to the product exported by us. In this regard, we had produced information regarding the technical and commercial parameters, which distinguish the various products. It is stated by the exporter that they do not manufacture LDAN and there is no domestic or export sale of this product during the period of investigation. It is further clarified that AN melt is manufactured by us but it is used for captive consumption.

EXAMINATION AND FINDING BY AUTHORITY

36. The product under consideration in the present investigation was Ammonium Nitrate. It is produced in various forms such as melt, prill, crystal, granules, flakes and lumps. The product is first produced in melt form, which is the basic stage then solidified to obtain prills, flakes, lumps etc. Ammonium Nitrate is manufactured by synthesizing vapour Ammonia with Nitric Acid (60% concentration) in a circular type neutralizer. Then the Ammonium Nitrate solution (72 – 74% concentration) is sent to evaporator, concentrated (upto 82% for Ammonium Nitrate Melt and upto 96% for prilling) and stored in Melt tank. Thereafter AN melt is used for prilling/further process (prilling, pre drying, drying, cooling, condensing and bagging) to produce AN prills/other solid forms of AN.

With regard to density, Ammonium Nitrate is classified in two forms:-

- High Density Ammonium Nitrate prills having density more than 0.85gm/ml.
- Low Density Ammonium Nitrate prill having density less than 0.85gm/ml .

37. Coating is another parameter. Ammonium Nitrate can be uncoated or chemically coated. Chemically coated and uncoated forms are like article, the only difference between the two being that of coating. Coating is done in order to minimize moisture pick-up during storage, in turn, avoid caking/hard lump formation.

38. It is an inorganic chemical and classified under chapter 31 of Customs sub-headings 3102.30 of the Customs Tariff Act 1975. The Custom classification is

indicative only and not binding on the scope of investigation. Ammonium Nitrate is used in water gel/slurry explosives, emulsion explosives which have the following applications like open cast mining, under ground metalliferous mining construction industries, project etc, whereas low density Ammonium Nitrate(explosive grade) is preferred over granules/crystals/HDAN prills for making Ammonium Nitrate fuel oil (ANFO) which is used as blasting agents as well as emulsified (ANFO). However, production of solid form requires small incremental production process and extra cost. Production of low density Ammonium Nitrate of course requires further additional investment.

39. The exporters/importers have described the product as High Density Ammonium Nitrate/Ammonium Nitrate(Fertilizer Grade)/Ammonium Nitrate/ High Density Ammonium Nitrate(Fertilizer Grade) . USDOC in the anti dumping investigation concerning import of Ammonium Nitrate from Russia described AN with density higher than 53 pounds per cubic foot (equivalent to 0.849 gm/ml) is HDAN while AN with lower density is LDAN. The petitioner claims that they produce Ammonium Nitrate with density higher than 0.85 gm/ml to 1.39 gm/ml. Whereas interested parties have claimed the petitioners are producing only Low Density Ammonium Nitrate having density less than 0.85 gm/ml apart from AN prills. The interested parties have also admitted in their submissions that none of the other domestic industry except M/s. DFPCL produces Ammonium Nitrate prills but i.e., LDAN prills. The petitioner have claimed that M/s. DFPCL is the sole producer of both High and Low density Ammonium Nitrate prills and which are sold with the brand name Optiform (HDAN prills) and Optimix (LDAN prills). To this effect they have produced SGS test report stating that Optiform has a density of 0.85 gm/ml whereas the consumers have produced the SGS test certificate of unquoted Ammonium Nitrate prills having density less than 0.85 gm/ml as they claim that the domestic industry do not produce HDAN prills. The Authority notes that the documentary evidence furnished by the petitioner could not categorically establish that the Ammonium Nitrate prills sold as Optiform is identical to HDAN prills exported by Russian and Iranian exporters.

40. Petitioners have claimed that even though commercially Ammonium Nitrate is classified into two categories in terms of density, density as a technical parameter is not specified in most of the product specifications. Even the test reports of the material normally do not mention density of the material. The classification is more relevant in the market parlance rather than as a technical requirement. The interested parties have raised arguments at different stages of their submissions that the imported HDAN prills are not the like article to those being produced by the domestic industry. Interested parties have further stressed that domestic industry is producing all other forms of Ammonium Nitrate except HDAN prill. The Authority notes that the word HDAN was not in domestic commercial transaction practice prior to imports and during the domestic verification of manufacturing units it was observed from their sales/ supplies documents of various consumers that the producers have never described the product as HDAN prill rather supplied as AN prill (optimax and optiform) or AN melt.

41. As regards the HDAN prill, the Authority has considered the view expressed by the petitioner, exporters, and importers/users. Rule 2 (d) of the Anti Dumping Rules defines the like article as,

"like article means an article which is identical or like in all respect to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such an article, another article which although not alike in all respects has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."

42. As regards the arguments of exporters, importers /users that the imported product is not identical or alike in all respect to the article under investigation, the Authority notes that the petitioners have stated inter alia that there is a great amount of substitutability between the various forms of Ammonium Nitrates, there is a close resemblance in terms of characteristics of domestically produced Ammonium Nitrate and imported HDAN prill which is also used for production of explosives only. On the basis of evidence furnished both by the petitioners and interested parties the Authority is constrained to establish that Ammonium Nitrate produced by the domestic industry are not identical or alike in all respects to HDAN prills, one of the products under investigation. In the absence of an identical product the next parameter for determination whether the products being produced by the domestic industries which although not alike in all respects, is closely resembling to the articles under investigation or not. As per the admission by one of the interested parties that due to the closure/periodic shutdown of two of the manufacturing Ammonium Nitrate units mainly SAIL, Rourkela and Fertilizer Corporation of India, Sindhri, the Explosives Industries located in Eastern India have no other option but to resort to the imports which were comparatively cheaper and more user friendly compared to sourcing Ammonium Nitrate from other parts of India. The user industry has also admitted in their submissions that because of gap in demand and supply, they prefer the imported Ammonium Nitrate prills over the domestic supplies of Ammonium Nitrate Melt/solids due to it being cheaper and convenient in handling. One of the consumers has even admitted in his submissions that due to the difference in landed price of imported HDAN prills and sourcing Ammonium Nitrate melt/solids constitute a minimal difference of price. The Authority notes that domestically produced Ammonium Nitrate (excluding AN melt and LDAN prills) is substitutable to a great extent to the imported HDAN prill as per the admission of interested parties.

43. From the documentary evidence provided by the domestic industries regarding the sales of Ammonium Nitrate for the period April 2001 to February 2003 i.e., beyond the POI it is found that majority of Explosives Industries have sourced both AN melt and AN prills from these producers. During the course of verification of costing and sales information of the domestic industry it was established from the sales and excise register that Explosive Industry is using both AN melt/solids for manufacturing explosives. From consumers' point of view, the consumers have also consumed the two sources interchangeably in a limited extent but substituting one another for different application of explosive manufacturing. During the course of

verification at the premises of cooperative Russian and Iranian exporters it was found that they are also using the same technology as been used by the domestic industry for manufacturing of AN. The Authority believes that domestically produced Ammonium Nitrate (excluding AN melt and LDAN prills) is substitutable to a great extent to the imported HDAN prill, if not interchangeable.

44. It is important to note that there were hardly any imports of AN earlier. Consumers of imported material were meeting their requirement from domestic source only prior to imports. Even the Department of Explosive, Nagpur has informed that by using the imported product, the explosive manufacturers found it advantageous and switched to HDAN prills for some specialized application in explosives. The Authority holds the view expressed by DOE, Nagpur that both the imported HDAN prills and domestically produced Ammonium Nitrate have been used by explosive industry but certainly not for the same application. The DOE further stated that because of closure of FCI, Sindri and SAIL, Rourkela, the shortage of AN has been met by the imported HDAN Prills. Secondly, the risk involved in handling ANmelt and LDANprills are higher than the HDAN Prills. The Authority holds that preference of one form over the other per se implies that all forms are comparable therefore the Authority does not find merit in the argument of interested parties that HDAN prills cannot be covered as product under consideration i.e., domestically produced Ammonium Nitrate(excluding AN melt and LDAN prills).

45. The custom has classified the product under Chapter 31 of Customs Tariff Act 1975 under sub-heading 3102.30 describing the product as Ammonium Nitrate whether or not in aqueous solution. The Authority holds that HDAN prill which is being covered and cleared under the above Custom sub-heading, does substantiate the claim of the petitioner as HDAN prills being a like article to a great extent.

46. The petitioner has further claimed that Ammonium Nitrate is generally consumed in melt form only as emulsion explosives. Thus, conversion of Ammonium Nitrate into solid form is not a technical requirement rather is convenient for storage and handling. The interested parties have also admitted in their submissions that Solids forms of AN transported without specialized tanker whereas transportation of melt requires special tankers with controlled temperature to maintain its technical specification. Thus transportation of AN melt required higher expenditure due to specialized tankers which is commercially not viable for long distance deliveries.

47. The Authority notes that the use of HDAN Prills over domestically produced AN Prills may offer certain advantages however the basic chemical properties of both the material remains same as both are used for manufacturing explosives. The Authority further notes that manufacturing process and technology or consumption of different raw materials are same for both imported HDAN Prills and domestically produced AN Prills .

48. The Authority did visit the Russian and Iranian manufacturers of the goods exported to India and understands that the production process of AN is generally the

same irrespective of origin. AN is produced by reacting ammonia with nitric acid. The reaction of Ammonia with nitric acid produces AN solution. The solution can solidified in either a prilling or a granulating process. Notwithstanding the imported HDAN prills is being used by importers/users in the manufacture of explosive emulsions and various other explosives. Several interested parties advised that it is not economically or logically viable to import AN solution and LDAN prills for various reasons. The exporters have also claimed that they have not exported AN solution and LDAN prills. Special equipment and arrangements are necessary for the transport and storage of the AN solution and LDAN prill(known as explosive grade) is being highly prone to explode, thereby the Authority believes that these two forms of AN is not viable for exports. These two forms have not been imported either in the POI or prior to the POI whereas HDAN prills is safe in storage and handling.

49. In case of Ammonium Nitrate density, form and state of the goods are physical characteristics that are significant and distinguishing attributes for the user in the explosive industry. These characteristics, specially the density is linked with the performance expectation of the product and is reflected in the related prices. Accordingly, the Authority considers that low density AN, high density AN and AN solution are not identical goods.

50. The Authority believes that there is a considerable degree of substitutability between the imported and the locally produced solid ammonium nitrate. It is possible though generally not the case the imported high density ammonium nitrate may be substituted for the domestically produced ammonium nitrate in the manufacture of explosives. On the basis of above analysis, the Authority considers that the domestically produced solid ammonium nitrate (excluding AN melt and LDAN prills) have characteristics closely resembling the product under consideration. Certain densities, states or forms of Ammonium Nitrate are technically more suited to manufacture the particular explosive product. Explosive companies do differentiate these distinctions in determining their required product mix of ANFO, heavy ANFO and bulk emulsion explosives. Notwithstanding, the Authority considers the essential characteristics of different Ammonium Nitrate product are not changed due to variation in density state or form. The majority of locally produced and imported AN is purchased for the purpose of making various types of explosives. Technically AN is used in explosives as an Oxygen source in the detonation process. The imported HDAN prills competes directly with the locally manufactured AN, though rarely in its original form rather it is used as a major component of explosive product.

51. The Authority notes that the submission made by various interested parties regarding the product under consideration that the subject goods imported from subject countries are not like article to the goods manufactured by the domestic industry. In the preliminary finding the Authority had taken a view that all forms of Ammonium Nitrate as a product under consideration and examined the subject goods in the light of definition of like article under Rule 2(d) that even if the imported HDAN is not identical or like in all respect to the article under investigation, it was considered on the analogy of the second part of the definition that in absence of such

an like article another article which resembles closely to the article under investigation. The interested parties have argued that the different forms of Ammonium Nitrate are not like article in terms of its uses in the production process of various explosives grade required by the industry. At the same time they also argued since AN melt and LDAN are not imported into India, thereby not causing injury to the domestic industry. As regards the HDAN which is having a density more than 0.85 gm/ml which is not produced by the domestic industry and with the advancement of explosive technology it is of paramount necessity to use HDAN prills for manufacturing on site explosives grade materials and various other explosive application.

52. The Authority believes since AN melt and LDAN are not imported into India, thereby not causing injury to the domestic industry whereas imported HDAN which has been used by the consumers as there is technical and commercial substitutability of these goods with the domestically produced Ammonium Nitrate. The Authority after considering the views expressed by various interested parties believes to modify the product under consideration as **Ammonium Nitrate excluding AN melt and LDAN having density less than 0.85 gm/ml**. The Authority has considered the scope of product under consideration as all forms of ammonium nitrate excluding AN melt and LDAN having density less than 0.85 gm/ml. After understanding the production process of the product the Authority believes that AN melt is the basic stage from which all other forms are further required incremental processing and therefore the Authority holds that the product under consideration has been considered after the complete examination the views of the interested parties and manufacturing process involved in production of various forms of Ammonium Nitrate.

53. The Authority in view of submission made by the petitioners and other interested parties, thereby keeping in view of substitutability and uses by the same consumers of the subject goods, exported from subject countries and those produced by the domestic industry, considers the subject goods exported and domestically produced subject goods all grades/types of AN (excluding AN melt and LDAN having density less than 0.85 gm/ml) as like article under Rule 2(d) for the purpose of final findings.

C. DOMESTIC INDUSTRY

VIEWS OF DOMESTIC INDUSTRY

54. The petition was jointly filed by M/s. Gujarat Narmada Valley Fertilizers Company Ltd., (GNFC), National Fertilizers Ltd., (NFL) and Deepak Fertilizers and Petrochemicals Corporation Ltd., (DFPCL). Petitioners are major producers of Ammonium Nitrate in India and thus satisfy the standing to file the application under Anti Dumping Rules. Further, the petition has been supported by Rashtriya Chemicals Fertilizers Ltd.

55. It was reiterated that Deepak Fertilizers is not eligible to file the present petition, as its affiliate has imported the subject goods. While the Designated Authority has already held in the preliminary findings that the company should be included within the purview of domestic industry, assuming though not admitting that Deepak's affiliate has imported the material, it is submitted that the import under reference was in the period prior to the investigation period. What is relevant for the purpose of present investigations is imports under investigation period, as has already been held by the Designated Authority and CESTAT in a number of cases. Petitioners refer to and rely upon the decisions of Hon'ble CESTAT in the following cases:-

- a) in the matter of Hydroxyl amine sulphate the CESTAT treated the petitioner as domestic industry because they have not imported in POI.
- b) in the matter of Optical fibre, CESTAT treated the petitioner as domestic industry since imports made by petitioner were before POI.

56. Petitioners wish to refer and rely upon the decision of the USITC in the matter of Polyester Films from India, wherein the ITC held that "we generally apply a two-step analysis in determining whether to exclude a domestic producer from the domestic industry under the related parties provision. We consider first whether the company is a related party under section 771 (4) (B), and second, whether, in view of the producer's related status there are "appropriate circumstances" for excluding the company in question from the definition of the domestic industry. The related parties' provision is employed to avoid any distortion in the aggregate data bearing on the condition of the domestic industry that might result from including related parties whose operations are shielded from the effects of the subject imports." The ITC did not exclude the producers from the scope of domestic industry who have imported Pet Film from Japan and Korea during the period of investigation because their domestic operations do not appear to have been shielded from, or benefited by, the unfairly traded imports at issue.

57. The Applicant, M/s. Deepak Fertiliser and Petrochemicals Corporation Ltd., cannot be treated as domestic industry because it has imported through their Group Company the alleged HDAN prill and accordingly is disqualified under Rule 2 from being called as a domestic industry.

58. The petitioner have mentioned in their annual report that M/s. Smartchem is a group company, therefore, in our humble submission, they must be treated as a related company. Moreover, the petitioners i.e., DFPCL have earned handsome profits from sale of the imported product, therefore, the decision in the case of polyester film cited by the petitioners is of no relevance.

59. The petitioner has stated that the domestic industry should be seen and defined in the context of like article. Since the scope of the product under consideration has been redefined thereby the standing of the domestic industry may be accessed.

Views of importers/user industry**M/s. Indian Explosives Ltd., and M/s. Special Blasts Pvt. Ltd.,**

60. It is denied that the petitioners have standing as domestic industry since the sales of the imported products have not been made during the period of investigation. Moreover, since the petitioners do not manufacture a like article to the imported product they do not satisfy the definition of domestic industry. The investigation is, therefore, liable to be terminated.

M/s. Bharat Explosives Limited

61. It is denied that the petitioners have standing as domestic industry since there is no like article to the imported product in India. Moreover, one of the associate companies of M/s. Deepak Fertilisers and Petrochemical Corporation Limited has imported the material and sold it in substantial quantities during the period of investigation. Hence, M/s. Deepak Fertilisers and Petrochemical Corporation Limited is liable to be excluded from the purview of domestic industry

EXAMINATION BY THE AUTHORITY:

62. The present petition has jointly been filed by Gujarat Narmada Valley Fertilizers Company Limited (GNFC), National Fertilizers Limited (NFL) and Deepak Fertilizers and Petrochemicals Corporation Limited (DFPCL). Production of the subject goods by the petitioners constitutes a major proportion of production of like article in India. Petitioners satisfy the standing to file the application under anti dumping Rules. Further the petition has been supported by Rashtriya Chemicals and Fertilizer Ltd,. The Authority believes that AN melt is the basic stage from which all other forms are further required incremental processing and therefore the Authority accessed the standing of the domestic industry accordingly.

63. Arguments have been raised by many interested parties that M/s. DFPCL is not eligible to file the present petition as its one of the affiliates has imported the subject goods and does not constitute the domestic industry. The Authority has examined the position with regard to standing of M/s. Deepak Fertilizer and Petrochemical Corporation Ltd., and holds that M/s. Smartchem Technology Ltd., an affiliate of M/s. DFPCL has imported the material prior to the period of investigation.

“domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case (such producers may be deemed) not to form part of domestic industry.

64. As regards the standing of the domestic industry, the Authority has considered the view expressed by the petitioner, exporters and importers/users. Rule 2 (b) of the Anti dumping rules defines domestic industry means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers may be deemed not to form part of domestic industry.”

65. The definition of Domestic Industry given above is further clarified by Rule 5 of Rules which reads as follows:-

“----- the application shall be deemed to have been made by or on behalf of the domestic industry, if it is supported by those domestic producers whose collective output constitute more than fifty percent of the total production of the like article produced by that portion of the domestic industry expressing either support for or opposition as the case may be to the application.

66. The Authority notes that for the purpose of present investigations, the imports under investigation period are relevant, as already been held by the Designated Authority and CEGAT. The Authority notes that the petitioners constitute 58% of the production of the domestic industry. The Authority, therefore, believes that the petitioners constitute more than 50% of the total domestic production of the subject goods and, therefore, have the standing to file the petition on behalf of the domestic industry as per Rule 5 (3) (a) and (b) of the Anti-Dumping Rules and also represent Domestic Industry in terms of Rule 2(b).

D. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE & DUMPING MARGIN

Views of Domestic Industry

67. The response filed by the Russian exporter is grossly insufficient and inadequate. The exporter has not furnished information regarding domestic sales in home market. Exporter has not provided sufficient evidence to claim Market Economy Treatment. The response filed by the exporter must be rejected.

68. Natural gas is the major raw material required for production of Ammonium Nitrate. Natural gas is controlled by the Govt. of Russia, as has been held by USA very recently in an investigation relating to imports of Urea Ammonium Nitrate. The Australian customs service also has held in the investigation related to Urea Ammonium Nitrate from Russia that Natural Gas prices are controlled by the Govt. of Russia. Prices of inputs and raw material, therefore, are controlled by the Govt. of Russia. Such being the case, the exporter can not even claim that it can be granted market economy

treatment. It can not be said that prices of inputs reflect fair market value. It can not certainly be a situation that a company would be granted MET by one country and under identical circumstances, it would deny MET by another country. Normal value, under circumstances, has to be determined on the basis of principles governing non market economy.

69. The exporters from Russia have attempted to bypass their obligation to give information and evidence on MET by offering themselves for verification. At the time of oral hearing also, it was stated that the data relating to the exporter could be verified. However, petitioner have failed to appreciate how the data could be verified when the same is not yet complete and the exporter has not filed sufficient non confidential version of the response. It appears that the exporter is suggesting that the Designated Authority can depute a team of Officers to collect information and evidence. In other words, a verification visit can be undertaken to collect relevant data. Petitioners refer to and rely upon the decision of Hon'ble CESTAT in the matter of Potassium Permanganate, wherein the Tribunal has held that verification visits can not become data compiling visits. The exporter must first provide full information and evidence to justify that it can be granted MET.

70. Iran Petrochemical Commercial Co., (IPCC) from Iran has filed response. However, response filed by the exporter was also grossly deficient and inadequate. The exporter has provided only summary information in response to various appendices forming part of questionnaire. Further, the exporter has admitted that it is getting subsidies, details of which have not been provided, as required in the questionnaire. In any event, since entire transactions are based on subsidies received by the company from the Govt., the prices in the domestic market can not be regarded in the ordinary course of trade.

71. Petitioners submit that the clinching factor supporting the claim of the domestic industry is the natural gas prices in Russia. Admittedly, natural gas prices (which is the principal raw material required for production of the product under consideration) are controlled by the Govt. of Russia. Based on this ground alone, the Company can not be granted MET. It may be seen that Australian Authorities have treated Russia as non market economy solely on the ground that natural gas prices are controlled by the Govt. of Russia. It would also be seen that the Russian producers are getting natural gas as differential prices depending on the end use. If the end use is for production of fertilizer grade, the prices are much lower (which implies, if the end use is for production of explosive grades, the prices are much higher). Fertilizer grade and explosive grades are not different products.

72. With regard to submissions made by Iranian exporter, it is evident that the exporter is paying differential prices for natural gas, depending upon the end use. If the end use is fertilizers, the exporter gets a subsidy. Since the end use of the exports

made to India was for production of explosive, the selling price in the home market as also cost of production for product meant for explosives only would apply.

VIEWS OF IMPORTERS/USERS

M/s. Bharat Explosives Limited

73. Russia is treated as a market economy by both European Union and USDOC. However, even if it is assumed that Russia is a non market economy, the cost of production (normal value) is to be calculated on the basis of production in surrogate country after providing due opportunity to the interested parties to comment on the selection of such country. There is nothing apparent from the preliminary findings as to which surrogate country has been selected and, whether the level of development of the surrogate country is at par with Russia.

74. Anti dumping duty is levied on article exported from an exporting country to India and is usually equivalent to the difference between its export price and its normal value. Since there has been no export by the exporting countries to India of AN melt, and, LDAN prills the export price as also normal price of the said articles cannot be determined. The law does not provide for presumption and levy of duty on anticipation that such an article would be imported and, such import would be injurious to domestic industries.

M/s. IBP Co., Ltd.,

75. Since most of the parameters considered for the imposition of preliminary duties are based on the constructed normal cost, non injurious price and the represented data by the petitioners, we request the designated authority to make a actual assessment of the parameters by verification of the associated facts with regards to cost, technology and safety for the explosives industry. The future development of the explosive industry largely depends on the decision taken by the Authority on the investigation.

76. A dumping margin of 90% has been arrived at for the Russian exporters by adoption of a constructed cost of production. This method has been resorted to by considering Russia as a non-market economy. It is submitted that there is no justification for treatment of Russia as a non market economy, especially in view of the market economy status granted by administrations such as USDOC.

M/s. Indian Explosives Ltd., & M/s. Special Blasts Pvt. Ltd.,

77. Market economy status should be granted to Russia and the margins should be determined on the basis of the information submitted. Even if a surrogate country was to be adopted, due opportunity was required to be given to interested parties to offer their comments in this regard. Moreover, the

normal value should have been calculated keeping in mind the economies of scale of the exporters and the availability of natural gas at lower prices.

VIEWS OF EXPORTERS

M/s. JSC Nevinnomyssky Azot

78. In the Preliminary Findings of April 2003 it is said that “the Authority was constrained to accept the claim of market economy treatment in absence of sufficient information/documentary evidence provided by the exporter as desired in sub para 3 of the paragraph 8 of Annexure 1 of anti dumping rules. The exporter has not adduced sufficient information and evidence to establish that it operates under market conditions”. But it is not mentioned how the information provided is insufficient for making a positive decision on recognition Russia a market-economy country. In addition to the original questionnaire we prepared answers to the supplementary questionnaire provided by the Indian side on April 17, 2003. All the questions were answered entirely and extensively by June 2003. However, in the Note dated July 15, 2003, the Ministry of External Affairs pointed to “inadequate response filed by the Russian exporters” and stated that “the responses were examined.... for purposes of extending the market economy status as per the relevant rules and found deficient”. The information filed is sufficient and meets the requirements claimed for market economy status granting.

79. The dumping margin of 90% is totally incorrect, since it is based on an export price and normal value, which are not based on facts. We submit that there was no justification for the construction of a normal value, since we had provided voluminous information relating to the cost of production and market economy status.

80. We would also like to invite attention to Notification No. 101/2003 dated 10th November 2003 whereby a sub Rule (4) has been added in paragraph 4 of Annexure-1 to the Rules. This paragraph reads as follows:

“Notwithstanding anything contained in sub-paragraph (2), the Designated Authority may treat such country as market economy country which, on basis of the latest detailed evaluation of relevant criteria, which includes the criteria specified in sub paragraph (3), has been, by publication of such evaluation in a public document, treated or determined to be treated as a market economy country for the purpose of anti-dumping investigation, by a country which is a Member of the World Trade Organisation.”

81. The aforesaid provision provides that the Hon’ble Designated Authority may grant market economy status to a country if it has been treated as a market economy country by a Member of the WTO based on the criteria specified in paragraph (3), Russia has been granted market economy status both by EU and USA, therefore, the amendment is clearly attracted in the present case.

82. It is submitted that the amendments made to the Rules vide Notification No. 101/2003-Customs (N.T), dated 10th November 2003 are applicable to pending investigation. The Hon'ble Tribunal in the case of Exide Industries Ltd., Vs. Designated Authority reported in 2003 (155) ELT 35 (T) considered the issue whether Notification dated 31.5.2001 amending the provisions relating to non-market economies was applicable to an investigation which was started on 12.1.2001 and concluded on 7.12.2001. The Hon'ble Tribunal held that the investigation was not held in accordance with the Rules, as it was carried out without any regard to the legal requirements under the notification.

83. Last year, after extensive analysis of the Russian economic system the Russian Federation was granted a market economy status by the European Union (on 07.11.2002) and the USA (06.06.2002). For purposes of anti-dumping investigations Russian companies are to be treated as companies operating in market economy starting 01.04.2002 for the US cases and starting 08.11.2002 for the EU investigation. This is an acknowledgement of the important progress achieved in Russia in respecting market economy principles.

84. In the submitted questionnaire we have provided information which meets the parameters and the given documentary evidence proves that the company Nevinnomyssky Azot is operating under market conditions. Our company is privately owned without ownership of the state. The sale prices of ammonium nitrate are fixed in accordance with the demand and supply. The prices are negotiated with the customers and the sale is made at a mutually acceptable price, which reflects the fair value of ammonium nitrate and fully covers its cost of production.

85. There is no state interference in the decision making of JSC Nevinnomyssky, as the company is free to purchase its raw material, labour etc at best available prices. There is also no interference of the state with regard to the quantity and prices at which the company sells the ammonium nitrate. The decisions of the company on all issues are free of any state interference since there is no state ownership in the company.

86. Our company is subjected to bankruptcy and property laws, which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms. In this regard, we invited reference to the Federal Law on insolvency and the Civil Code of Russia, which provide legal certainty and stability for the operation of the firms. Apart from the above, extracts were also enclosed, of the Federal Law on Joint Stock Company which provide that the company shall be a juridical person and have ownership in solitary property.

87. The exporter has drawn the attention towards the notification made in the rules vide notification No. 101/2003-Customs dated 10.11.2003 in this present pending investigation. It is further stated that Hon'ble Tribunal in the case of Exide Industries Ltd. Vs. Designated Authority reported in 2003 (155) ETL 35 (T) consider

the application of a notification regarding NME during the course of investigation which has come after the initiation of anti-dumping investigation. The extracts of the judgment inter alia states “*further, several months before the conclusion of the investigation and issue of final findings, notification dated 31.5.2001 had been issued naming China as one of the non-market economy countries. Still the investigation proceeded without satisfying the requirements under these notifications. We also note that this is not a case where the requirements of the notifications had been met in substance, and the final findings only failed to note the same. A perusal of the records of the Designated Authority leaves no room for doubt and the authority fails to conduct the normal value investigation in accordance with the rules applicable to non-market economy units*”.

88. Notification dated 15.7.1999 gave legal recognition to this difficulty and laid down a different basis. Notification dated 31.5.2001 recognised the changes taking place in non-market economy countries and provided market driven units in non-market economy countries an opportunity to prove that they were operating according to market principles. The investigation in the present case started on 12.1.2001 i.e. well after the issue of notification dated 15.7.1999. The investigations were concluded and final findings were issued on 7.12.2001 i.e. well after notification dated 31.5.2001 was issued. Still, the investigation was carried out without any regard to the legal requirements under the notifications.

89. In this regard, they have further drawn the attention to notification No. 101/2003 dated 10.11.2003 where by a sub rule (4) has been added in para 4 of the Annexure 1 of the rules. It states as “*Notwithstanding anything contained in sub para (2), the Designated Authority may treat such country as Market Economy country which, on the basis of the latest detailed evaluation of relevant criteria, which includes the criteria a specified in sub para (3), has been, by publication of such evaluation in a public document, treated or determined to be treated as Market Economy country for the purpose of anti-dumping investigations, by a country which is a member of World Trade Organisation*”. Therefore, the exporter requested that Russia may be granted Market Economy status by virtue of this notification considering the information supply to the investigating authority to be examined as operating under the market conditions

Views of M/s. IPCC, Iran

90. The exporter has filed his comment on the disclosure to the essential fact on determination of dumping margin. They have stated that the domestic sales are in the ordinary course of trade so the normal value may not be constructed on the basis of cost of production. They have further requested to consider their domestic sales for determination of dumping margin.

**Examination of Market Economy Conditions in respect of M/s. JSC
Nevinnomyssky Azot, Russia**

91. Petitioners have claimed that Russia is a non-market economy country as European Commission has treated Russia as non-market economy and United States is the past three years. Therefore, determination of normal value in respect of these countries is to be done in accordance with the Rules relating to non-market economies as contained in para 7 & 8 of Annexure –1 of Rules as amended vide Notification dated 4.1.2002. Accordingly, they have claimed that normal value in these countries can be determined on the basis of estimates of cost of production in India including selling, general and administrative expenses and profit.

92. The aforesaid Russian producer has claimed market economy treatment in this present investigation. According to the proviso to para 8(2) of Annexure-1 of the Rules, inter-alia, provides an opportunity for an exporter to rebut the presumption of NME on the basis of the criteria specified in sub-para 3 of para 8 of Annexure-1. The Authority is of the view that in so far as Rules relating to NME are concerned, the rules as contained in the National Law i.e., under para 7 & 8 of Annexure-1 to the Rules are relevant to this investigation.

93. The Authority notes that para 7 of Annexure 1 of Anti Dumping Rules, inter-alia, provides that:

“In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin”

94. Further para 8 of Annexure 1 of Rules Supra (as amended) provides that:

“8. (1) The term “non-market economy country” means any country which the designated authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph (3)

(2) There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as, a non-market economy country for purposes of an anti dumping investigation by the designated authority or by the competent authority or any WTO member country during the three year period preceding the investigation is a non-market economic country. The concerned firms in such countries, may, however, rebut such a presumption by providing information and evidence to the Designated Authority that establishes that such country is not a non-market economy on the basis of certain criteria.

95. The Russian exporter has claimed that:

- a) The decision Russian manufacturer with respect to prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and the costs of the inputs reflect market values. This is reflected in documents furnished and in the confidential data furnished by the respondents with the confidential response to the questionnaire which were verified during the on spot verification. It is found that there is neither any State regulation of costs or prices of these inputs in Russia or any system of administered prices.
- b) There is no distortion of production costs and financial situation as the respondents are entirely private companies as described in the questionnaire response and accompanying confidential information and further as the respondents have not converted former State assets, or distorted depreciation thereof, or engaged in barter trade or debt forgiveness or debt/equity swaps, or received the benefit of any write-off.
- c) The Russian manufacturer is subject to Russia's regulations with respect to bankruptcy and property respectively.
- d) As in India the exchange rate is based on the market rate as determined by the Central Bank as is reflected in the confidential data furnished along with the said confidential questionnaire response.

96. M/s. Nevinomyssky Azot filed its submission to rebut this presumption by providing the relevant information, which has been verified during the on-spot verification.

"(a) The decisions of concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs, substantially reflect market values;"

97. The company is an open joint stock company. The company maintains accounts as per the general accounting principles and publishes a report giving information as per the balance sheet and profit and loss account. There is no specific state interference found with regard to the decision making.

98. The Company is found to operate on market principles with an objective to maximise sales and profits. The decisions as regards the sale prices for ammonium nitrate are also found in response to market signals. The sale prices reflect the fair value of ammonium nitrate and fully cover the cost of manufacture of this product. The existence of a range of prices for the products indicates that the price is determined solely on account of market conditions and not due to any state inference in this regard.

99. The principal raw materials for the manufacture of Ammonium Nitrate are natural gas, Magnesium Carbonate, Ground Brucite and Lilaminum. The natural gas is purchased from LLC Stavropol Regional Gas Company. During the course of verification at the plant, copies of natural gas purchase bills for the relevant period have been verified and it is seen that the natural gas has been procured on demand-supply situation in the prevailing market condition. It is also noted that during the course of verification of the plant the price of natural gas has varied based on market conditions. The price of natural gas has varied from 472 roubles per thousand cubic meters to 592 rubles per thousand cubic meters.

100. Russia has the largest resources of natural gas in the world. The availability of natural gas exceeds the domestic demand and consequently natural gas is exported to various countries. In 2001, Russia has exported 6.7 trillion cubic feet making it the world's largest natural gas exporter. Natural Gas is sold and marketed by Joint Stock Company Gazprom through other group / affiliated companies in Russia. LLC Stavropol Regional Gas Company an open Stock company who has supplied natural gas is an affiliated company to Gazprom. Gazprom is a profitable company and its sales of natural gas yielded a profit which was privatized in 1993. 38.37% of the shares are owned by the State, foreign shareholders hold 10.31% of the statutory capital and the balance are owned by the public. The shares of this company are freely traded in the Russian Stock market. The Authority notes that the price of gas, is fixed in response to market signals reflecting supply and demand without State interference.

101. Gazprom is a company constituted under the federal law on joint stock companies. As mentioned above the majority of shares are held by persons other than the state and directors are elected by the stock holders and they do not act under the direction of Russian federation. The board of directors takes decision such as fixation of price of natural gas, the profit motive in mind. Moreover, Gazprom is operating on a huge profit, thereby the above facts lead to the conclusion that the prices of natural gas are determined in response to market signals.

102. As regards other raw materials the company procures the suppliers after negotiations relating to price and quantity. The Unified Energy System of Russia supplies the power, which is a joint stock company. This company has a holding company and various other subsidiaries and dependent companies which generate, transmit and distribute electric power in Russia. The shareholders of this company include Russian persons, legal entities and foreign persons. The tariffs for industrial consumers are higher than those for other consumers, indicate that the power charges to industrial consumers fully cover the cost of generation, transmission and distribution of power and reflect market values. The prices of power are fixed on market principles.

103. The employees are organized into two categories, i.e., workers participating in Ammonium Nitrate production and those not involved directly in the production. Contracts are entered into with each employee wherein the conditions of employment,

such as working hours, salary, etc. are indicated. The employer has a right to terminate employment as per the contract, which normally requires a notice period of 2 to 4 weeks. Article 77 of the Labour Code of the Russian Federation provides the grounds for employee dismissal or termination of employment. The employment may be terminated with the mutual consent of both parties in terms of Article 78. It may also be terminated on the expiry of the validity of the agreement or by virtue of termination at the initiative of the employee or employer (Article 80, 81). The employment may be terminated also on the refusal of the employee to continue work because of an alteration in the ownership of the employer company or due to alteration of the conditions in the labour contract. Other circumstances include refusal to accept transfer or violation of regulation of labour contact, conviction of the employee with a penalty, disability, death, etc.

(b) "the production cost and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;"

104. The Authority did not find any evidence regarding receipt of any write offs, barter trade or payment via compensation of debt by the state or any other authority. There are no distortions found from the earlier non-market economy system. The process of privatization of the company started almost 10 years ago, in terms of the federal law on the privatization of stock and municipal property. In terms of Article 15 of the Act, a Commission shall be instituted which shall formulate the privatization scheme on the basis of the opinion of experts in the field of auditing, consulting, estimate making etc. The seller of the property is to take a decision of the starting price in view of the current market situation as envisaged in Article 17. It is also provided that the price shall be fixed keeping into account the area of the land on which the company is situated, characteristics of such company's realty and the existence of liabilities, obligation of such companies to the Federal Budget, range of the company's products, number of workers etc. This information is to be made available to all buyers as per law. In this regard the company is guided by the Federal Law on the privatization of state property and the principle of privatization of the municipal property in the Russian Federation.

"(c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and"

105. All firms and companies are subject to bankruptcy and property laws of Russia under Federal Law on Insolvency of January 8 1988, which guarantee, legal certainty and stability for the operation of the firms in Russia. Under Article 2 of this Act, bankruptcy has been defined as a debtor's inability as recognized by Arbitration Court or declared by the debtor to fully satisfy creditors claims with respect to monetary obligations and/or to perform an obligation to make compulsory payment within a specified period. This period has been defined as three months under Article 3 of the aforesaid law. The creditors are to approach an Arbitration Court, which is to

determine the liability of the debtors if any, and its inability to discharge the debt. Under Article 24, a legal entity may declare its bankruptcy and voluntary liquidation in the manner specified by law. On such a declaration being made, the Arbitration Court has power to recognize a debtor as bankrupt and send appropriate information to banks and other credit organizations.

106. Under Article 137 the debtor enterprises may be sold for satisfying the creditors claim. Article 179 deals with the distribution of the proceeds and other issues. Therefore, the Authority notes that there is in a comprehensive law dealing with insolvency in Russia.

107. Under the Civil Code of Russia, concept of property, legal certainty and recognizing various types of legal entities has been provided. Article 66 provides that companies shall have authorized capital divided into shares. This property acquired by the company in the process of an activity shall belong to it by the rights of ownership.

108. The right to own private property is fundamental to the operation of a market economy, and the scope and extent of private sector involvement in the economy often is an indicator of the extent to which the economy is market-driven. The first formal stage of privatization in Russia commenced in 1992, with the implementation of the 1991 Law on Privatization of State and Municipal Enterprises, which established the legal and organizational basis for the sale of small-scale firms and businesses, as well as the mass privatization of medium-sized enterprises. In 2001, the government adopted chapter 17 of the Civil Code and passed a new land code that for the first time sets clear and well-defined rules on land privatization and transfers.

109. Decentralized economic decision-making is a hallmark of market economies, where the independent investment, input-sourcing, output and pricing actions of individuals and firms in pursuit of private gain collectively ensure that economic resources are allocated to their best (most efficient) use. Prices in such economies tend to reflect both demand conditions and the relative scarcity of the resources used in production

110. Foreign Investment in Russia is regulated by the Law “On foreign investment in the Russian Federation”. In terms of Article 11, foreign investors have the right to transfer beyond the bounds of the Russian Federation incomes, profits and other lawful received money, after payment of all taxes and fees stipulated by legislation of Russian Federation. Further any foreign investor has a right on free use of incomes and profits within the territory of the Russian Federation for reinvestment observing the provision of clause 2 article 4 of the present Federal Law or to other targets not contradicting to the legislation of RF, and on free transfer beyond the borders of the Russian federation of incomes, profits and other lawful received money in foreign currency resulting from previous investments, and namely:

- Revenues from investments received as profit, dividends, interests or any other forms of revenues;
- Money to fulfill obligations of commercial organization with foreign investments or foreign legal person with subsidiary within the territory of RF in accordance with agreements and other forms of transactions;
- Money received by foreign investor after liquidation of commercial organization with foreign investments or a subsidiary of a foreign legal person or by alienation of invested property, interests and sole rights for the results of mental activity".

111. A country's integration into world markets is highly dependent upon the convertibility of its currency. The greater the extent of currency convertibility, for both trade and investment purposes, the greater are the supply and demand forces linking domestic market prices in the country to world market prices. The greater this linkage, the more market-based domestic prices tend to be. The Russian government took early action to establish the prerequisites for a convertible currency that would form the basis for a market-based exchange rate. A presidential decree of November 1991 liberalizing foreign economic activity for Russian enterprises established a market-based exchange rate, determined on the basis of supply and demand at foreign currency auctions, exchanges, and the inter-bank market. To establish the supply and demand that determines Russia's market-based exchange rate, the 1992 Law on Currency Regulation and Currency Control, as amended, guarantees residents (individuals and companies) the right to hold, own and sell foreign currency, maintain foreign exchange accounts at authorized banks, and engage freely in current account transactions. The 1990 Law on the Central Bank, as amended, separates the functions and obligations of the state and the Central Bank of Russia (CBR). It gives the CBR primary responsibility for maintaining stability of the ruble, strengthening and developing the banking and settlement systems, managing the money supply, serving as creditor of last resort for banks, and setting currency and accounting regulations. The ruble has been fully convertible for current account purposes since 1996, when Russia agreed to assume IMF Article VIII obligations. Domestic and foreign companies and individuals are free to acquire, hold and sell foreign exchange, and foreign companies are free to repatriate capital and remit profits. The ruble is also convertible for capital account purposes. The ruble is convertible into foreign currencies for trade and investment purposes, giving rise to supply and demand on currency markets that determine the exchange rate.

112. The exporter's request for extending the Market Economy treatment and determine the normal value as per para 1-6 of annex-I on the basis of domestic sales in their home market was examined by the Authority. The exporter furnished the information as desired under para 8 (3) of Annexure 1 of Anti Dumping Rules which have been verified during the on spot verification at their premises. The company was able to show to satisfaction of the Authority that management and control of the company regarding production, marketing and pricing were in the hands of the management which were fairly independent from the state intervention. However, the

authority examined the facts brought by the Russian exporters and relevance of the notification No. 101/2003 dated 10.11.2003 in the light of the Hon'ble Tribunal judgment in the matter of Exide Industries Ltd. V/s. Designated Authority. In the light of above examination the Authority considered to grant Market Economy treatment to this exporter and determine normal value under para 1 to 6 of Annexure 1 to the Anti Dumping Rule.

113. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section(6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

RUSSIA

M/s. JSC Nevinnomysky Azot, Russia

Normal Value

114. The exporter claimed the Market Economy treatment and determination of the normal value as per the domestic sales in their home market. The Authority in view of information filed by the exporter on the issue of market economy, considered to take into account information furnished by the

exporter. The Authority during the on-spot verification reconciled and verified the documents/information filed for their claim treatment as Market Economy. After the detailed examination the Authority considered to grant Market Economy treatment and determine normal value under para 1 to 6 of Annexure 1 to the Anti Dumping Rules.

115. The transaction wise domestic sales were provided in Appendix 1 of the exporters' questionnaire which was verified from the records. They have also provided the cost of production which was reconciled from their books of account and profit and loss account. To examine whether the domestic sales are within the ordinary course of trade, the 80/20 test was conducted and it was found that the domestic sales in the home market were in the ordinary course of trade. The cost of raw materials, utilities, and other financial cost were also verified and reconciled from their accounts. The normal value was determined on the basis of domestic selling price in the home market after considering the adjustments claimed to arrive at ex-factory normal value. The adjustment claimed on account of credit charges and miscellaneous expenses were verified from their records and considered to arrive at normal value.

116. The normal value is therefore referenced as ****\$/MT for M/s. JSC Nevinnomyssky Azot, Russia for the purpose of final determination.

Export Price

117. The Authority considered the information regarding the export price furnished by the exporter in Appendix 2. The exporter has claimed adjustments on account of Insurance, storage, inland freight, handling, forwarding, safety certification, custom duty on exports which have been allowed after verifying and reconciling from their records. The Authority considered these adjustments for the purpose for calculating the net export price of M/s. JSC Nevinnomyssky Azot, Russia. The ex-factory export price is referenced as US\$ ****/MT for the purpose of final determination.

Other Exporters/Producers from Russia

Normal Value

118. The Authority notes that none of the exporters from Russia except M/s. JSC Nevinnomyssky Azot, Russia has responded with complete information. The Authority in view of non cooperation, has constructed the normal value for all other producers/exporters of Russia on the basis of best available information in accordance with Rule 6 (8) of anti dumping Rules.

119. The normal value is therefore referenced as ****\$/MT for other exporters/producers of Russia for the purpose of final determination.

Export Price

120. The export price is determined on the basis of import statistics made available by DGCI&S. To arrive at ex-factory export price, adjustments before the FOB have been considered as claimed by the cooperative exporter whereas adjustments after the FOB have been considered on the basis of best available information as per Rule 6(8) of Anti Dumping Rules.

121. The ex-factory export price is referenced as ****\$/MT for the purpose of final determination.

Iran**M/s. Iran Petrochemicals Commercial Company, Tehran****Normal Value**

122. The Authority sent questionnaire to the all known exporter for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9 A (1) (C). M/s. IPCC rectified the deficiencies regarding the cost of production, profit and loss account, and documents regarding their claim of adjustments. They have cooperated during the course of investigation and furnished all required documents as per exporter's questionnaire. The officials of the directorate under took the on-spot verification and reconcile the information furnished with the original records of the producer. The details of transaction wise sales were provided in Appendix 1 and during the course of verification it was found that the domestic selling price was much lower than the cost of production. Hence most of the domestic sales transactions were loss making transactions thereby the Authority disregarded the domestic selling price of subject goods in the period of investigation for determination of normal value as these are not in the ordinary course of trade. The raw material, utilities and other expenses were reconciled from their record to arrive at the cost of production. Since the domestic sale was not in the ordinary course of trade therefore, the Authority constructed the normal value as details provided by M/s IPCC in the exporters' questionnaire.

123. The normal value is therefore referenced as ****\$/MT for M/s. Iran Petrochemical Commercial Co. Ltd., Tehran for the purpose of final determination.

Export Price

124. The Authority considered the information regarding the export price furnished by the exporter in Appendix 2. The Authority considered the adjustments on account of insurance, handling, storage, inland freight. However the exporter has not shown adjustment on account of Commission

and Ocean freight which have been taken from the details made available by one of the importers from Iran. The Authority considered these adjustments for final determination for arriving at the net export price at ex-factory level from Iran to India for M/S IPCC Tehran. The export price is determined as US\$ ****\$/MT for the purpose of final determination.

Other Exporters/Producers from Iran

Normal Value

125. The Authority notes that none of the exporters from Iran except M/s. IPCC, Iran has responded. Since there were no other exporters/producers apart from the responding exporter in Iran therefore, the normal value was determined for the responding exporter has also been considered for other exporters/producers also.

126. The normal value is therefore referenced as ****\$/MT for other exporters/producers from Iran for the purpose final determination.

Export Price

127. The entire exports were effected by M/s. IPCC which were co-related with the import statistical data of the DGCI&S. Since there were no other exporters/producers apart from the responding exporter therefore, the net export price was determined for the responding exporter has also been considered for other exporters/producers also.

128. The ex-factory export price is referenced as ****\$/MT for the purpose of final determination.

Dumping, Comparison of Normal Value & Export Price

129. The rules relating to comparison provides as follows:

- i) "While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability."
- ii) The authority has carried out weighted average normal value comparison with the weighted average ex-factory export price in

Period of Investigation, for evaluation of the dumping margin for all the exporter/producers of the subject country.

The dumping margin for exporter/producers comes as under:

Exporter/ Producer	Normal value(NV) \$/MT	Export Price(EP) \$/MT	Dumping margin as % of EP
(1) Russia M/s. JSC Nevinnomyssky Azot	****	****	0.03%
All other exporters/producers	****	****	65.27%
(2) Iran M/s. IPCC, Tehran	****	****	12.90%
All other Exporters/Producers	****	****	12.90%

E. INJURY AND CAUSAL LINK:

Views of Domestic Industry

130. Petitioners have made detailed submissions in this regard, which is already on the record of the Authority. In fact, in a way, some of the interested parties have conceded that the selling prices of the domestic industry declined significantly, albeit after the investigation period. Petitioners submit that the sole reason for this decline in the selling prices was price undercutting suffered by the domestic industry as a result of imported material. One of the interested parties has compared landed price of imports with selling price of AN melt. Does this argument not imply that AN melt and imported product are like article. What, however, has been ignored by this interested party is the fact that a price allowance has to be made to take into account higher transportation cost involved in selling AN melt as compared to solids. Once the two prices are adjusted for associated transportation costs, it would be found that the landed price of imports was lower than the selling price of the domestic industry.

131. A hype is attempted to have been created by the consumers by stating that their viability would be seriously threatened in case the present anti dumping duties are confirmed. Notwithstanding the fact that the conjecture is

unsupported with any evidence, it is a matter or record (and confession by these interested parties) that the prices of the product under consideration have not increased pre-imports levels. How were these companies then surviving in the past. And if the product under consideration becomes cheaper or expensive for all the consumers, how their competitiveness get affected.

132. Petitioners strongly submit that the reference price fixed in the preliminary findings is grossly on the lower side and would not be adequate to protect legitimate interests of the Indian producers. Petitioners, therefore, submit that the bench mark may kindly be suitably enhanced. The most fundamental issue appears to be the assessment that NSR of the domestic industry being higher than the non-injurious price of the domestic industry is not based on fair comparison of these two components. While the NSR is in respect of packed/bagged material excluding selling and distribution expenses while the non-injurious price is in respect of unpacked/unbagged material excluding selling and distribution expenses. The same methodology for fair comparison may be adopted for the purpose of fair comparison either prilling cost may be added to AN melt non-injurious price or net sales realisation is required to be adjusted for the other two units apart from Deepak Fertilisers.

VIEWS OF IMPORTERS/USERS

M/s. IBP Co., Ltd.,

133. There is a total absence of injury as the petitioner units are enjoying hefty profits. The sales, profits, and capacity utilisation of petitioners have improved during the POI as per the preliminary findings itself.

134. Existence of injury has been found by comparing the Non-injurious price with the landed value of the imports. It is submitted that the NIP determined is highly exaggerated, since with such an NIP, the petitioners would have been operating with losses since a number of years. This appears highly unlikely for the reason that the profits of the petitioner appear to have been increasing with the passing of time. Units such as DFPCL are operating much above their installed capacity, diverting resources for manufacturer of AN instead of fertilizers. Such diversion would not have taken place, if manufacture of AN were not profitable. Moreover, DFPCL is in the process of increasing its production capacity for melt and LDANP. This conclusively proves that before, during and after POI, the petitioners are operating profitably. They are also having the ability to raise resources for further investment.

135. There is no causal link between the imports and injury if any, to the manufacturers of AN. The landed value of imports exceeds the price of melt,

even prior to the imports. Therefore, the imports could not have depressed the sale price of melt as claimed. Moreover, melt prices have remained fairly consistent, both before and after the imports. Import of HDANP has also not affected the price of LDANP, since the use of the two products is for different applications. Therefore, the imports are not the cause of injury to the petitioners, if any.

M/s. Bharat Explosives Limited

136. The volume and market share of the petitioners admittedly increased during the period of investigation. The profitability has also improved during the period of investigation as compared to the previous period. Production and capacity utilization have increased by about 2%, whereas there is a very substantial increase in the sales volume. Therefore, from the preliminary findings, it seems that the petitioners were much better off during the period of investigation as compared to the earlier period.

137. As per the preliminary findings, the cost of production has declined during the period of investigation. Such decline, if passed on to the customer, would have resulted in decline in prices. Therefore, there was no requirement for increase in price. Prior to the imports, the petitioners were operating profitability and if those price are taken as the non injurious price, it would be seen that there is absolutely no injury or price under cutting as found in the preliminary findings. The financial position of the petitioner appears to have improved during the POI.

138. The petitioners had been increasing their sale prices of AN melt consistently, upto the period of investigation, although their cost of production was coming down. During the POI, the landed value of imports was higher than the selling price of melt, and the imports did not have any negative impact, on the melt manufacturers. All the petitioner other than DFPCL have not in any way been affected by the imports since their sale volumes have increased and the prices have remained unaffected. The only manufacturer of prills i.e., DFPCL is also not suffering any injury as is evident from its Annual Reports.

139. There is a finding that imports depressed the domestic sale prices. It is submitted that the non injurious price appears to have been calculated on the higher side. If such cost of production (NIP) is taken to be correct, it would appear that the petitioners have along been making losses. If the sale price of the petitioners even prior to the imports was such that they were incurring losses then, such loss can not be attributed to the imports and must be as a result of factors other than the imports.

140. The manufactures of Ammonium Nitrate are basically fertilizer units and manufacture of Ammonium Nitrate only about 2-5% of their total sales.

The levy of duty is going to make the manufacture of Ammonium Nitrate more profitable leading to the diversion of capacities and natural gas to non priority sectors such as Ammonium Nitrate. It is also a fact that the manufacture of Ammonium Nitrate in India is restricted on account of the limited availability of natural gas. Levy of duty can not, therefore, curtail the imports since the gap between the demand and supply of Ammonium Nitrate is only going to grow greater and greater with time. The Hon'ble Authority has failed to consider the impact of the levy on the company as a whole and the small scale units engaged in the manufacture of explosives.

M/s. Indian Explosives Ltd., and M/s. Special Blasts Pvt. Ltd.,

141. Since the market shares of these companies have increased, there is no natural and potential decline in sales but in fact there is an increase. Although the imports have increased in absolute terms, the market share of imports is insignificant and has not had any injurious effect on the petitioners. The imports are not undercutting the domestic sale price since the landed value of HDAN prills is higher than the sale price of melt. LDAN is a product having a higher cost of production therefore; its price can not be a basis for arriving at the injury margin.

The claim of injury by the petitioners is totally false as:

- i) the petitioners have increased their sale and capacity utilization of Ammonium Nitrate during POI and after POI.
- ii) Deepak fertilisers could not fully supply the required quantities by the Explosive Industry during 2002-03 leading to partial shutdown of explosives manufacturing units requiring prills.
- iii) Deepak group has enhanced Ammonium Nitrate manufacturing capacity by acquiring fertiliser unit of Rourkela steel plant and also increased their existing capacity to manufacture Ammonium Nitrate prills.
- iv) The inventories remained insignificant during the investigation period.
- v) The Chemical Division (comprising of Ammonium Nitrate) of most of the Fertiliser manufacturing units are showing increased profits and margins in the Annual Report of 2002-2003.

142. Since most of the parameters considered for the imposition of preliminary duties are based on the constructed normal cost, non injurious price and the represented data by the petitioners, we request the designated authority to make an actual assessment of the parameters by verification of the associated facts with regards to cost, technology and safety for the explosives industry. The future development of the explosive industry largely depends on the decision taken by the authority on the investigation.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

143. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, “.....taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

144. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry including natural and potential decline in sales, profit, output, market share, productivity, return on investments or utilisation of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

145. The Authority has taken into account all indices regarding injury while doing the final determination. While determining the non injurious price for the like article under product under consideration for the domestic industry, the Authority consider the optimum cost of production for the domestic industry which would take into account the normated best consumption norms and would also take into the actual price of raw material utilities etc. which will go into the production under consideration in order to nullify the inefficiency of the industry.

Cumulative Assessment

146. The exporters/producers from Russia and Iran are dumping Ammonium Nitrate in the Indian market. Annexure II (iii) to the Anti Dumping Rules requires that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:-

(a) The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three

percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;

(b) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

(c) The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed.

147. The Authority notes that the quantum of imports from each of the subject countries are more than the de-minimus limits. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with one another and with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market.

148. There is no difference in the product supplied by Iran and Russia which has been verified during the course of verifications of both domestic industry and exporters from Russia and Iran. Product imported from Russia and Iran has been substituted by the consumers in the end use. Further, these have been consumed and substituted with the goods produced by the domestic industry. The Consumers who were buying from the petitioners switched over to the imported product from subject countries. Thus, the consumers have been with limited interchangeability (substituting for one-another) using the goods supplied by the domestic industry and the producers in the two countries;

149. Products supplied by producers in subject countries are being marketed in India during the same periods through comparable sales channels and under similar commercial conditions;

150. After the investigation period, the consumers have switched over to imports from Ukraine, which further substantiates that the producers in various countries are competing with each other;

151. The product imported from various countries has similar price levels. In fact, the sole reason due to which the consumers switch between the domestic product and between various Foreign Producers in subject countries is the price;

152. The users have purchased the subject goods from Russia and Iran. The sole criterion for purchase is the price offered by the producers in various countries;

153. Imports from both the countries are individually undercutting the prices of the domestic industry;

154. The domestic producer and exporters in the subject countries are selling the product to the same category of consumers.

155. Under the circumstances, the Authority believes that the conditions of competition exist between the domestic product and imported product as also amongst imported products.

Volume and market share of dumped imports

156. The Authority has considered the statistics of imports of subject goods made available by the Director General of Commercial Intelligence and statistics (DGCI&S), Kolkata and export details provided by cooperative exporters. The Authority has relied upon the DGCI&S data and export details provided by the exporters/importers for analysing the import trend from the subject country and injury caused to the domestic industry on this account.

Imports(MT)	1999-00	2000-01	POI(Annual)	2001-02	2002-03(Q-1)
Russia	0	60	22136	7759	19911
Iran	0	0	9600	0	12000
Sub. Countries	0	60	31736	7759	31911
Others	0	0	32.8	41	0
Total	0	60	31768.8	7800	31911

157. It is evident from the above table that during the POI (April 2001 – June 2002) 39670 MT of ammonium nitrate were exported by Iran and Russia. The imports of ammonium nitrate have increased significantly in absolute terms. During the period 2001-2002 imports have increased significantly over the imports of 2000-2001. The imports during the POI (annualized) have also increased significantly compared with the preceding year. There is a very significant imports during the last quarter of POI i.e., 31911 MT. The average CIF price of import from subject countries decreased in the POI and the major import of the POI from the subject countries has arrived in the last quarter.

	1998-99	1999-00	2000-01	POI Annualized	2001-02	Q-1 (2002-03)
Share in Demand (%)						
Merchant production (D.I)	8.05	14.69	17.49	26.01	25.92	20.13
Imports from subject countries	0	0	0.01	6.14	1.47	20.84

Other Indian producers	22.49	21.16	27.42	19.09	18.64	16.12
Demand including captive consumption	584517	546492	542596	516934	529417	153089
Merchant Sales	47070.61	80272	96985	134444.64	137246.06	30809.22

158. The share of volume of imports in total demand has increased from 0.1% in 2000-2001 to 6.14% during the POI (annualized) whereas the market share in demand of domestic industry has also increased from 17.49% during 2000-2001 to 26.01% during the POI (annualized). It may be seen that the merchant sales has not decreased whereas share of import from subject countries has increased from .01% to 6.14% in the period of investigation annualized but in the last quarter of the POI its share increased to 20.84. The share of other Indian producers has reduced from 27.42% to 19.09% in the period of investigation annualized. Therefore, the authority believes that the loss of share to the other Indian producers in general is taken over by the subject countries whereas domestic industry has increased its market share.

Demand excluding captive consumption	1998-99	1999-00	2000-01	POI Annualized	2001-2002	Q-1 (2002-2003)
Merchant Demand (MT)	178557	195913	245824	274533	255775	87391
Domestic industry (%)	26.36	40.97	39.45	50.76	56.32	35.25
Other producer (%)	73.64	59.03	60.52	37.26	40.50	28.23
Imports from subject countries			0.02	11.98	3.18	36.52
Other Countries	0	0	0	0.01	0.02	0

159. The share of import from subject countries in Merchant Demand has increased from 0.02% in 2000-01 to 11.98% during the POI (annualized), whereas share of domestic industry has also increased from 39.45% in 2000-2001 to 50.76% during the POI (annualized). The share of other Indian producers has decrease from 73.64% during 1998-99 to 37.26% during the POI annualized. Both the domestic industry and subject countries have increased its market share in the POI (Annualized) whereas other Indian industries have lost substantial share.

Price Undercutting/ Price Depression/Price Underselling:

Country	Landed Value	Selling price	Undercutting
Russia	****	****	****
Iran	****	****	****

Country	Landed Value	NIP	Underselling
Russia	****	****	****
Iran	****	****	****

160. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree. The Authority has compared the landed value of imports of subject goods from subject countries during the POI with the net sales realization and has found that there has been a significant price undercutting by the dumped imports. The landed value of imports has been found to be significantly lower than the domestic industry's net sales realization. The Authority notes that the price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has worked out the non injurious price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling. The Authority has determined the extent of price undercutting and price underselling during the POI and holds that dumped imports is the cause of significant price undercutting and price underselling during the POI. The authority notes that the landed value of dumped imports from the subject countries undercuts the selling price of the domestic industry in the range of 15% to 24%. The under selling has also been examined by the authority & found that the landed value of dumped imports under sales the fair selling price of domestic industry in a range of 7% to 20%.

Profitability

Domestic industry	1998-99	1999-00	2000-01	POI Annualized
Unit cost of production	****	****	****	****
Trend	100	123.48	132	124.92
Unit selling price	****	****	****	****
Trend	100	109.17	123.78	118.15
Unit profit/loss	****	****	****	****
Trend	-100	-289.50	-227.36	-202.12

161. The cost of production of the domestic industry has declined in the POI whereas selling price has also declined. The cost of production has not declined to the extent decline in the selling price of AN. The cost of production has increased from 100 to 124.74 in the POI annualized whereas the selling price has increase only to 118.25 in the POI annualized during the injury period. The authority believes the increase in selling price is not proportion to the increase in the cost of production. It may be stated that the loss position has improved marginally in the annualized POI. The domestic industry is incurring the loss due to the fact that the domestic industry is not able to recover the cost of sales but loss position has improved in the POI (Annualized).

Inventory/Stock

	1998-99	1999-00	2000-01	POI Annualized
Opening stock (MT)	293.2	293.2	108.07	358.61
Trend	100	101.03	36.86	122.31
Closing stock (MT)	296.43	107.97	358.61	463.78
Trend	100	36.42	120.98	109.18
Average stock(MT)	294.865	202.1	233.19	411.19
Trend	100	68.54	79.08	115.69

162. The Authority notes that the inventory has increased from 107.97 MT in 1999-2000 to 358.61 MT in 2000-2001 and it has decreased to 323.65 MT in the POI (annualized). The average stock is showing a increasing trend from 202.1 MT in 1999-2000 to 233.19 MT in 2000-2001 which has further increased to 341.13 MT during the POI(Annualized) which is less than 1% of the production. The petitioners submits that the AN solid being highly Hygroscopic in nature, has a limitation to its self life because of this reason they don't keep high inventories. In the case of AN melt since the material is stored in insulated storage tank at a temperature around 130 degree C, thus the plant operate at bare minimum inventories. Therefore the Authority notes that even inventory at minimum levels regulate production volumes on availability of sales contracts still, it can not be conclusively stated that this trend indicates injury to the domestic industry.

Production & Capacity Utilisation

MT	1998-99	1999-00	2000-01	POI Annualized	2001-02	Q-1 (2002-03)
Capacity	563587	563587	563587	563587	563587	140869.8
Production	453034	430663	394007	406083	411053	96551.21
Capacity	80.38	76.41	69.91	72.06	72.94	68.58

utilisation (%)						
Domestic sales	47070	80272	96985	134444	137246	30809
Captive	405960	350579	296772	242449	273661	65698

163. The production has decreased in 2000-2001 but showing a increase of 3% during the POI (annualised). The capacity utilisation has also increased a little more than 1% in POI compared to preceding year 2000-2001. The domestic sale is also showing a increasing trend due to the increase in demand. The petitioners did not provide sufficient evidence for its claim of increase in sales due to closure of M/s. SAIL Rourkela and M/s. FCI Sindri, as these units are closed for production of Ammonium Nitrate.

164. The Designated Authority believes that the petitioner companies are having substantial captive consumption of the product for the purpose of manufacturing urea. At the same time, petitioner companies have significant merchant sales of the product in the domestic market. The product being consumed captively and product being sold in the merchant market has entirely different end use. It does not appear that performance of the domestic industry in the captive and merchant markets are linked or affect relative competitiveness of the two separate and distinct markets. Neither there are imports of the product for production of urea nor does the market for urea seem to be affected with changes in the merchant market of the subject goods.

165. The Authority considered the views of the domestic industry that the NIP and NSR should be equated at the same level. As discussed earlier also that through out the investigation AN melt has been considered as the basic stage from which all additions whether in the form of prilling cost and additional selling expenses and bagging have been taken into account for determination of NSR for a fair comparison. The incremental additions for the NSR calculation have been worked out along with the selling expenses and bagging in line with product under consideration. In the determination of Non-injurious price for domestic industry, the Authority has examined and analyzed in detail all the relevant factors including cost of raw material used in the production of subject goods, the consumption thereof, the cost of utilities such as power, water etc., interest cost, cost of labour, depreciation cost, and selling and administrative expenses. The factors such as investments made in plant and the capacity utilization have also been examined in the cost analysis. All these factors have been determined with reference to the basic books of accounts and production and financial statements.

Other Economic parameters of domestic industry

Year	1998-99	1999-00	2000-01	POI (annualized)
Wages	100	105.12	115.40	127.66
Cash flow	100	81.21	124.40	19.93
Production per day	100	95.06	86.97	89.64
Growth %	41.36	17.23	27.86	29.33
Employment	100	97.13	93.64	94.98
Return on capital employed	-100	-132.02	-99.05	-107.09

(a) The employment trend of the domestic industry has not undergone any significant change during the POI but it has gone down from 100 to 94.98. The employment level of the domestic industry has declined during the entire injury period which has also resulted in the level of production per day and the authority did not find reasons for causing injury on account of this factor.

(b) The domestic industry is multi product Group Company; thereby the authority could not decisively determine the cash flow pertaining to the product under consideration. Therefore, the authority notes that the injury on account of this factor is not established.

(c) The wages of the domestic industry in the period of investigation was increased from 100 to 127.66 during the POI which may be the reason for increase in the cost of production in the POI. The increase in wages is regulated as per the national law and the domestic industry is guided by the existing law of the land.

(d) The production per day of the domestic industry has decreased in every consecutive year. The growth in sales volume has declined from 41% in 1998-99 to 27.86% in the POI(Annualized) but increased from 17.23% in 2000-01. The return on the capital employed is negative due to the losses incurred by the domestic industry throughout the injury period, therefore did not plan any expansion.

Threat of Injury

166. As regards the threat of injury, the Authority notes that the Anti-Dumping Rules states as follows:

167. “A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances, which would create a situation in which the dumping would

cause injury, must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the DA shall consider, inter-alia, such factors and;

- a) a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
- b) sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;
- c) whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and,
- d) inventories of the article being investigated.

168. (i) The Authority examined the contention of the Petitioners regarding threat of injury and noted that many countries have already imposed anti dumping duty on imports of Ammonium Nitrate from Russia. This has resulted in increased pressure on Russian Exporters to sell more in Indian market as they have a huge production base. It is evident from the import statistics of DGCI&S that during the last three months period of POI(April-June'02) 19911MT of AN were exported by the Russian Exporters , compared to 19786 MT in 2001-2002. Further 37926.3 MT of Ammonium Nitrate were exported by Russian exporter during July – September 2002 (post POI) as per import statistics available from DGCI&S Kolkata.

- ii) The imports are undercutting the prices in the domestic market.
- iii) On examination of installed capacity vis-a-vis production it is found that the stocks available with the exporter is less than 1% of the total production both in case of Russian and Iranian exporters. The authority believes that these manufacturers do not have surplus available with them.
- iv) The trend of imports in the post investigation period is significant but its share of the domestic industry has not declined in the total demand for the product under consideration in the annualised period.
- v) On the basis of above examination the Authority could not find sufficient reasons to conclude evidence of threat of material injury to the domestic industry.

169. It has been argued that the number of interested parties that the Authority did not satisfy itself about the adequacy and accuracy of information submitted by the domestic industry and the petition filed was not

in the form and manner prescribed. It has also been argued that the vital information have been kept confidential by the interested parties depriving the opposing interested parties of the right to challenge the information and make meaningful submissions to the Authority. However regarding the information being made available to the opposite interested parties a provisions regarding confidentiality have been kept in mind. The Rule 7 of Anti Dumping Rules provides for submission of information by the interested parties on confidential basis subject to the condition laid down therein. The non-confidential summary of the information submitted on the confidential basis is placed in the public file, which is available for inspection, by all interested parties in terms of Rule 6 (7) of the Anti Dumping Rules. In this case also non-confidential summary of the confidential submissions made was placed in the public file accessible to all the interested parties.

Causal Link

170. The authority has carefully examined the submissions made by various interested parties in respect of the issue of causal link. Subsequent to the preliminary findings, a detailed examination was made by the Authority with regards to the issues pertaining to the material injury to the domestic industry and causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

"(v) It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."

171. The Authority notes that the petitioners had significant market share of the subject goods and it is increased in the period of investigation. With the exception of Russia and Iran which account for 76.81% and 23.1900% of the total imports of the subject goods, all other subject countries cumulatively account for 0.01% of the total imports and are therefore de-minimus. Hence the allegedly dumped imports from other countries had no volume effect on the domestic industry. In examining the price effect, that is, whether the dumped imports have significantly undercut the price of the like product in India, the Authority notes that the landed values of the subject goods from the subject countries/territory were lower than the net selling price of the

petitioners but the non-injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation is less than the net selling price of the domestic industry. Therefore the question of material injury to the petitioner from the dumped imports does not arise.

172. Closure of other two industries producing the subject goods was also examined. The authority on the basis of records available cannot conclusively determine that these two industries have closed down operations because of dumping from subject countries. The Authority could not find any evidence of contraction of demand. However, the authority has verified the submissions made by the exporters/importers/user industry in terms of the technical characteristics of the subject goods, which are now in demand, by the user industry of the subject goods. On the basis of the foregoing; the authority notes that there is a change and convenience in the pattern of consumption. The authority thus, believes that even after the minor change in the pattern of consumption the domestic industry did not lose its share in demand. The Authority holds that the increasing quantum of imports from subject countries did not affect much the market share of the petitioner and the demand has also increased. However, import of HDAN prill has resulted in curtailment of sales contract of other producers of AN, not of the petitioners.

173. The export performance of the domestic industry has slightly improved during the POI but, that is less than 1% of the total production and roughly 2.5% of the merchant sales of the domestic industry. Therefore, the authority believes that the material injury suffered by the domestic industry is not the result of export performance of the domestic industry. Factors such as trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology, export performance or the productivity of the domestic industry do not appear to have caused injury to the domestic industry. Nor any quantified evidence suggesting injury to the domestic industry on these accounts been brought to the knowledge of the Designated Authority during the course of the investigations

174. In determining whether injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in the Industry in the above para. The known factors other than dumped imports, which could at the same time, have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports. The authority also examined the effects of other known factors of the domestic industry and believes that the material injury suffered by the domestic industry is not due to the other known factors. However, the Authority notes that the market share, production, capacity utilization, sales volume of the domestic industry has increased during the POI and the net sales realization is more than the non injurious price for the product under consideration for the domestic industry.

175. The Authority therefore holds that the material injury to the domestic industry has not been caused either by the dumped imports from the subject countries or by other known factors. In view of the above, the Authority notes that the petitioners have not been able to provide sufficient evidence of material injury and threat of material injury to the domestic industry from the imports of the subject goods in terms of the requirements stipulated under the Anti-Dumping Rules. Therefore, the authority believes that the dumped imports has not caused material injury and threat of material injury to the domestic industry within the meaning of the anti Dumping Rules.

F. CONCLUSIONS:

176. The Authority after considering the foregoing, concludes that

- i) The subject goods have been exported to India below its normal value resulting in dumping except M/s. JSC Nevinnomyssky Azot, Russia
- ii) The domestic industry has not suffered material injury during the POI due to dumped imports from subject countries;
- iii) It is therefore considered necessary to withdraw the anti-dumping duties recommended provisionally, vide notification No.14/36/2002-DGAD dated 7th April 2003 on imports of Ammonium Nitrate classified under Customs sub heading No. 3102.30 of chapter 31 of Customs Tariff Act being the subject matter of this investigation originated in or exported from Russia and Iran.
- iv) In view of the above, the Designated Authority recommends withdrawal of the provisional duties in terms of the provisions of Rule 18, sub rule (4).The provisional duties already imposed or collected, if any, shall be refunded.
- v) An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise & Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority